श्री

आगम-सुधासिंधुः

विभाग : १४

संपादकः संशोधकश्च

पू. पन्न्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला–ग्रन्थाङ्कः–७६

श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः ।
तपोमूर्ति पूज्याचार्यदेवश्रीविजयकर्पूरसूरिगुरुभ्यो नमः
हालारदेशोद्धारक-पूज्याचार्यदेवश्रीविजयामृतसूरिगुरुभ्यो नमः ।

श्री
आगमसुधासिन्धुः
चतुर्दशमो विभागः

श्रीमद्देववाचकगणिवर-विरचितश्रीनन्दीसूत्र-श्रीमद्गणधरप्रवरश्री-गौतमस्वामिवाचनानुगत-श्रीमदनुयोगद्वारसूत्रेति-सूत्रद्वयात्मकः ।

卐

संपादकः संशोधकश्च
तपोमूर्ति–पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयकर्पूरसूरीश्वर-पट्टालङ्कार-हालारदेशोद्धारक-कविरत्न-पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर–विनेयः
पंन्यास--श्री--जिनेन्द्रविजय--गणी

卐

प्रकाशिका–
श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल–शांतिपुरी (सौराष्ट्र)

प्रकाशिका–
श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल-शांतिपुरी (सौराष्ट्र) गुजरात

वीर सं० २५०२] विक्रम सं० २०३२ [सन् १९७६

आ आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी
सुविहित सर्वविरतिधरो छे.

मूल्य रु. २५–००

मुद्रक:–
गौतम आर्ट प्रिन्टर्स
ब्यावर (राजस्थान)

संपादकीय निवेदन

निष्कारणबंधु विश्ववत्सल चरमशासनपति श्रमणभगवान महावीरदेवे भव्यजीवोना हितने माटे स्थापेल शासन आजे विद्यमान छे अने विषमकालमां पण भव्य जीवोने माटे सर्वज्ञ परमात्मानुं ए.शासन परम आलंबन रूप छे. तीर्थंकरदेवोनी अविद्यमानतामां तेओश्रीनी वाणी शासनना प्राण स्वरूप होय छे. श्री तीर्थंकरदेवोओ अर्थथी प्ररूपेल अने गणधरदेवोओ सूत्रथी गूंथेल अे जिनवाणी हितकांक्षी पुन्यात्माओ माटे अमृत तुल्य छे.

विद्यमान आगम श्रुतज्ञानमां मुख्यतया ४५ आगम गणाय छे. ते उपरांत पण ८४ आगमनी गणतरीने हिसाबे बीजुं पण केटलुंक आगम रूपी श्रुतज्ञान विद्यमान छे. आगम सूत्रो उपर निर्युक्तिओ, भाष्यो, चूर्णिओ अने टीकाओ रचायेल छे. अने अेथी सूत्र सहित आगमनी अे पंचांगी जैन शासनमां मान्य छे. तेना आधारे वर्तमान ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार रूप व्यवहार प्रवर्ते छे. सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्चारित्र रूप मुक्ति-मार्ग प्रवर्तमान छे.

पंचांगीनो वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा रूप पंचलक्षण स्वाध्याय जेटलो जोरदार तेटली श्री संघमां सम्यग्ज्ञाननी शुद्धि जोरदार, तेनाथी ज्ञानाचार उज्वल, उज्वल ज्ञानाचारथी दर्शनाचार उज्वल, उज्वल दर्शनाचारथी चारित्राचार उज्वल, उज्वल चारित्राचारथी तपाचार उज्वल अने अे चारे उज्वल आचारथी वीर्याचार उज्वल. वीर्याचारनी उज्वलताथी जैनशासन उज्वल. ए उज्वल जैन शासन सदा जयवंत वर्ते छे.

आम शासननो आधार कहो के पायो कहो, मूल कहो के प्राण कहो, अे श्री जिनवाणी छे. अने ते जिनवाणी ४५ मूल आगम सहित पंचांगी स्वरूप छे. पंचांगीने अनुसरता प्रकरण ग्रन्थो यावत् स्तवन सज्झाय के नाना निबंध के वाक्य स्वरूप छे. उपशम विवेक संवर अे त्रिपदी स्वरूप जिनवाणीथी घोर पापी चिलातीपुत्र पतनना मार्गथी नीकली प्रगतिमार्गना मुसाफीर बनी गया हता.

४५ मूल आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिवरो छे, साध्वीजी महाराजो श्रीआवश्यक सूत्र आदि मूल सूत्रोना तेमज श्रीआचारांग सूत्रना योगवहन करवा

पूर्वक अधिकारी छे. श्रावक श्राविकाओ उपधान वहन करवा पूर्वक श्री आवश्यक सूत्र उपरांत दशवैकालिकसूत्रना षड्जीव-निकाय-नामना चोथा अध्ययन पर्यंतना श्रुतना अधिकारी छे. आम आगमश्रुतना अधिकारी मुनिवरो योगवहन करवा पूर्वक योग्यता मुजब अध्ययन आदि करीने पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रने निर्मल बनावे छे अने योग्यता मुजब धर्मकथा द्वारा जिणवाणीनुं पान करावी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूप चारे प्रकारना संघने तेमज मार्गाभिमुख जीवोने मुक्तिमार्ग प्रदान करे छे.

४५ आगमसूत्रो ६ विभागोमां वहेंचायेल छे. (१) अंगसूत्रो-११ (२) उपांगसूत्रो-१२ (३) पयन्नासूत्रो-१० (४) छेदसूत्रो-६ (५) मूल सूत्रो-४ (६) चूलिकासूत्रो-२. आ सूत्रोनुं स्वाध्याय आदि अध्ययन वधे ते माटे उपयोगी बने ते रीते ४५ मूल सूत्रो श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघमां सळंग मुद्रित नथी अने जेथी आगम सूत्रोना स्वाध्याय आदिनी अनुकूलता थाय ते माटे शक्य प्रयत्ने संशोधन करीने प्रगट करवानी योजना विचारवामां आवी छे, ते योजना मुजब ४५ आगमसूत्रो १४ विभागमां संपादन थशे.

पहेलो, आठमो, बारमो, तेरमो विभाग प्रगट थया पछी आ चौदमो विभाग संपादित थयेल छे. आ चौदमा विभागमां श्री नन्दीसूत्र, अने श्री अनुयोगद्वार सूत्र आपवामां आव्या छे.

श्री नन्दीसूत्रनी रचना श्रुतस्थविर श्री दूष्यगणीन्द्र ना शिष्यरत्न श्रुतवारिधि श्री देववाचक गणिवर छे. श्री अनुयोगद्वार सूत्र जे श्री गणधरदेवनी वाचनानुगत सूत्र छे.

आ सूत्रोना संपादनमां पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज संशोधित श्री आगममंजूषा, बाबु श्री धनपतसिंहजी प्रकाशित आगमसूत्रो उपरांत श्री नन्दीसूत्र टीका मलयगिरिजी महाराज विरचित (आगमोदयसमिति १९७३) शा रूपचंदजी नवलमलजी (१९८८) प्रकाशित श्री जिनदास महत्तर रचित श्री नन्दीसूत्र चूर्णि-सूरिपुरंदर श्री हरिभद्रसूरिश्वर विरचित श्री नन्दीसूत्रटीका, पू. आ. श्री विक्रमसूरीश्वरजी म. संपादित श्री नन्दीसूत्र अवचूरि नो उपयोग कर्यो छे. केशरबाई ज्ञानमंदिर पाटण (१९९५) प्रकाशित श्री अनुयोगद्वारसूत्र मूल तथा मलधारी आचार्यप्रवर श्री हेमचन्द्रसूरीश्वर विरचित टीका, श्रीदेवचंद लालभाइ जैन पुस्तकोद्धार फंड (१९७२) प्रकाशित ए टीका, श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी संस्था (१९८४) प्रकाशित श्री चूर्णि तथा श्री हारीभद्रीय अनुयोगद्वार सूत्र टीका तेमज श्री जिनदत्तसूरि प्राचीन पुस्तकोद्धार फंड द्वारा (१९७५) प्रकाशित श्री अनुयोगद्वार सूत्र मूल विगेरे प्रकाशननो उपयोग कर्यो छे. ते सौ प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट करुं छुं.

टीकाओ आदिमां रहेला पाठांतरो मेलवीने मूलपाठ जोडे कौंशमां आपेला छे.

श्री श्रमण संघमां आगमो कंठस्थ करवामां, स्वाध्याय करवामां, विस्तृत टीकाओना वांचन पछी मूलसूत्रोनुं पुनरावर्तन करवामां, आ मूल सूत्रोना संयुक्त संपादन थी घणी अनुकूलता रहेशे. अने अेथी होंशे होंशे उत्साही मुनि भगवंतो सूत्रो कंठस्थ करीने आगम श्रुतने धारण करवा माटे पण समर्थ बनी शकशे. २, ५, के १०, २० सूत्र कंठस्थ करनारा अने पुरतो प्रयत्न थाय तो लगभग अेक लाख श्लोक प्रमाण मूल सूत्रो कंठस्थ करी धारी राखनारा अनेक गणो मुनिवरोमां थइ शकशे. 'ज्ञानधनाः साधवः' 'शास्त्रचक्षुषः साधवः' अे विधान मुजब श्रमण संघना प्राण समान आ आगम सूत्रोनुं श्री श्रमण भगवंतो द्वारा विशेष परिशीलन थतां श्रीसंघने माटे श्री शासन ने माटे घणी उज्वलता फेलाशे. अने अे आशयथी स्वपरना श्रेयकारी आगम सूत्रोनां संशोधन संपादनमां अविरत उत्साह प्रवर्तमान छे.

प्रकाशननी सगवडता माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्स (ब्यावर) ना व्यवस्थापक श्री छगनलालभाई अे जे खंत अने उत्साह बताव्या छे तेने कारणे आ प्रकाशनो समयसर प्रकाशित थइ रह्या छे.

चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीर देवे प्रकाशेल जिनवाणीनो प्रभाव पांचमा आराना छेडा सुधी रहेशे. अे ज्वलंत जिनवाणीनो प्रकाश आपणा आत्माने योग्यता अने अधिकार मुजब अजवालनारो बने, जिनवाणीनी उपासनाभक्तिमां भावना पूर्वक रस लइ रह्यो छुं ते भावोल्लास टकी रहे अने सौ श्रुत आराधनामां उजमाल बनीअे एज मारा अंतरनी शुभ अभिलाषा छे.

वीर सं० २५०२ वि० सं० २०३२
महा वद १० मंगलवार
२४-२-७६
जैन उपाश्रय साचापीर स्ट्रीट
पुना केम्प (महाराष्ट्र)

हालारदेशोद्धारक कविरत्न पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-
अमृतसूरीश्वरजी महाराजानो चरणसेवक-
-पं० जिनेन्द्रविजय गणी

卐

* अनुक्रम *

नं.	नाम	पृष्ठांक
१	श्री नन्दीसूत्र	१ थी ३४
२	श्री अनुयोगद्वार सूत्र	३५ थी १४४

प्रकाशकीय निवेदन

अमारी ग्रन्थमाला तरफथी आ श्रीमदागमसुधासिन्धु चौदमो विभाग मूल प्रगट करता आनंद अनुभवीए छीए. हालमां ४५ आगम मूल अने केटलाक आगम टीका सहित प्रगट करवानुं काम शरू करतां आ ग्रन्थ नागरी लिपिमां मोटा टाइपमां प्रगट करेल छे. आ प्रकाशन पूर्वे श्री आगम सुधा सिन्धुना पहेलो, आठमो, बारमो, तेरमो विभाग प्रगट थई गया छे. हाल बीजा चोथा अने अग्यारमा विभागनुं मुद्रण चाली रह्युं छे.

आ ग्रन्थनुं संशोधन संपादन हालारदेशोद्धारक कविरत्न स्व. पू० आचार्यदेव श्रीमद्-विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्यरत्न पू० पंन्यासश्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवरे घणी खंत थी करेल छे.

कागल छपाइ आदिना भाव वधवाने कारणे खर्च धार्या करतां वधु आवे छे. मोटा टाइपमां मुद्रित करतां पेज वधारे थाय छे. परंतु टकवानी अने अभ्यासनी दृष्टिए अनुकुलता रहशे.

आगम सूत्रोना अधिकारी योगवाही गुरूकुलवासी सुविहित मुनिओ छे. ए शास्त्रविधि मुजब पूज्य श्रमणसंघमां आगम वांचनादिमां अनुकुलता थाय ते रूप आ श्रुतभक्ति करतां अमे आनंद अनुभविए छीए.

श्री नन्दीसूत्र श्री अनुयोगद्वार सूत्र अेम बे मूल सूत्रो आ चौदमा विभागमां प्रगट थइ रह्यां छे. ४५ मूल आगम १४ विभागमां प्रगट थशे. सटीक आगमोमां श्रीमदन्तकृद्दशा, श्रीमदन्तरोपपातिकदशा अने श्रीमदुपासकदशा सूत्र तैयार थइ गयां छे. मुद्रण माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्सना व्यवस्थापकोअे सारी खंत राखी छे तो तेमनो आभार मानीअे छीअे.

वीर संवत् २५०२
वि० स० २०३२
पोष वद ११ मंगलवार
ता. २७-१-७६

लि:-
नेमचंद बाघजी गुढका
नवीनचंद्र बाबुलाल शाह

सादर समर्पण—

पूज्यपाद शासनशिरोमणि पंन्यास श्री बुद्धिविजयजी (बुटेरायजी) गणिवरना शिष्यरत्न विद्वान् चारित्ररत्न पन्न्यास-
श्री आणंदविजयजी गणिवरना शिष्यरत्न—
बालब्रह्मचारी निस्पृहीशिरोरत्न मुनिमंडलाग्रेसर प्रदादागुरुदेव-

पूज्य मुनिराजश्री हर्षविजयजी महाराजा

जेओश्रीए विद्वद्वर्य पू. पं. श्री पुष्पविजयजी गणिवर महानतपोनिधि
पू. आ. श्री विजय कर्पूरसूरीश्वरजी म. जेवा शिष्यरत्नो अने
हालारदेशोद्धारक कविरत्न पू. आ. श्री विजयामृतसूरीश्वरजी
महाराज जेवा प्रशिष्यरत्न रूप शासननी मूळी अर्पण करी छे
तेओश्रीनी महान उपकारोनी पुनीत स्मृतिमां

श्री आगम सुधा सिन्धु

चौदमो विभाग

तेओश्रीने सादर वंदना साथे समर्पण करी कृतकृत्यता अनुभवु छु.

गुरुचरणचंचरिक
जिनेन्द्रविजय

卐

॥ शुद्धिपत्रकम् ॥

पृष्ठं	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
२	१०	महामंदरं	संघ-महामंदरं
१४	१०	इभे	इमे
१५	२१	असंखिज्ज	असंखिज्जं
१६	१९	तहो	तओ
१७	२४	संत्तं	से त्तं
१८	१३	सुन्निसुयं	सन्निसुयं
१९	२	तेसियं	वेसियं
१९	९	चयति	चयंनि
२०	१४	अणुओगदराइं	अणुओगदाराइं
२१	१८	आयरगोयर-	आयारगोयर-
२२	९	अकरियावाईणं	अकिरियावाईणं
२२	२४	वुडढीए	वुड्ढीए
२४	१४	सेवं ए०	से एवं
२८	२०	सं किं	से किं
३२	२४	अणुपरिअट्टिति	अणुपरिअट्टिति
३३	२३	याऽवि	याऽवि
४०	३९	अडय सं तं	अंडयं से तं
४४	१	०(का) कोयाणं	०(का) याणं
४९	२०	०णुव्वी	०णुपुव्वी
४७	१३	आणुवव्वी	आणुपुव्वी
४८	१८	भाव	भावे
५४	१५	सोगाडाओ	सोगाढ
५६	२०	ववव्टुयाए	दव्वट्ठयाए
५७	१८	आणपुव्वी	आणुपुव्वी
५७	२१	०दव्वीइं	०दव्वाइं
६०	८	०परूवणायाए	०परूवणयाए
६७	४	२४	अ २४।
६८	१९	दव्वाणामे	दव्वणामे
६८	१८	किं तं	से किं तं
६९	१	ते किं तं	से किं तं
७३	२३	०निप्फणे	०निप्फण्णे
७४	१-३	,,	”
७४	११	उवसममिए-	उवसमिए-
७६	१४	खओवमिए-	खओवसमिए
७९	११	१२७	सू० १२७
७९	१५	उिद्दसे	निद्दसे
७९	१९	पण	पुण
८०	२४	०प्पयपु०	०पप्पु०
८२	१	सं किं तं	से किं तं
९०	११	॥ सू० १०० ॥	॥१००॥
९५	१५	जहण्णेणं असंखे- ज्जइभागं सखे- ज्जइमागं	जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
९५	१९	अपज्जत्तग-	पज्जत्तग-
९६	२	असेखेज्जइभागं	असखेज्जइमागं
९७	१३	एगंगुलयया	एगंगुलायया
९८	१८	सं तं	से तं
१०३	१७	कुमारणं	कुमाराणं
१०३	१९	कालं	कालं ठिई
१०८	१	-पंचिदिद	पंचिदिय-
१०९	२	पण्णत्ता,	पण्णत्ता ?
१११	८	सागरवमाइं	सागरोवमाइं
१११	२३	०विमाणेमु	विमाणेसु
११४	६	मते ?	भंते !
११७	२	१५।	।
११७	३	१६।	१५।
११७	१२	एएसि चेव	एएसिं चेव
११७	२१	चेव	तहा
११८	१६	विक्खभसूई	विक्खंभसूई
१२०	१	सहस्सपुहत्त	सहस्सपुहुत्त
१२१	२१	सेठाण	संठाण
१२३	७	वहवे वरिसावण	बहवे करिसावणा
१२८	२४	तजह-	तंजहा-
१३०	७/८	उवमिज्जइ,— उवमिज्जइ ११।	उवमिज्जइ ११।… उवमिज्जइ-
१३३	१६	तत्तिवा	तत्तिया
१३५	२	नोअगमओ	नोआगमओ
१३५	५	ण	ण
१३६	१५	आयसमोओरेणं आयभावे समोअरंति	आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति
१४२	१६	इइं	इहं
१४३	३	कहिं	कहिं
१४३	१८	तिरुत्तो	निरुत्तो

॥ अर्हम् ॥

श्रुतस्थविर श्रीमद्भूष्यगणीन्द्र-शिष्य-

श्रुतवारिधि श्रीमद्देववाचकगणिवर-विरचितं

॥ श्री नन्दिसूत्रम् ॥

—:•:—

जयइ जगजीवजोणी-वियाणओ जगगुरू जगाणंदो । जगनाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं (जिणवसभो सललिय-वसभविक्कमगती महावीरो) ॥ १ ॥ जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ । जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स । भद्दं सुराऽसुरनमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय ! दंसण-विसुद्धरत्थागा ! । संघनगर ! भद्दं ते अखंड-चरित्तपागारा ! ॥ ४ ॥ संजमतव-तुंबारयस्स नमो सम्मत्त-पारियल्लस्स । अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्दं सील-पडागूमियस्स तवनियमतुरयजुत्तस्स । संघरहस्स भगवओ सज्झाय-सुनंदि-(नेमि)घोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरय-जलोह-विणिग्गयस्स सुयरयण-दीहनालस्स । पञ्चमहव्वय-थिरकन्नियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ सावगजण-महुअरि-परिवुडस्स जिणसूर-तेयबुद्धस्स । संघपउमस्स भद्दं समणगण-सहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥ जुग्मं ॥ तवसंजम-मयलंछण ! अकिरियराहु-मुहदुद्धरिस ! निच्चं जय संघ-चन्द ! । निम्मलसम्मत्त-विसुद्धजोगहागा ! ॥९॥ परतित्थिय-गहपहनासगस्स तवतेयदित्त-लेसस्स । नाणुज्जोयस्स जए भद्दं दमसंघसूरस्स ॥१०॥ भद्दं धिइ-वेलापरिगय(वृड)स्स सज्झायजोगमगरस्स । अक्खोहस्स भगवओ संघसमुद्दस्स रुहस्स ॥११॥ सम्मदंसण-वरवइर-दढरूढ गाढावगाढपेढस्स । धम्मवर-रयणमंडि-

अ-चामीयर-मेहलागस्स ॥१२॥ नियमुच्छि(सि)य-कणयसिला-यलुज्जलजलंत-चित्तकूडस्स । नंदणवण-मणहर-सुरभि-सीलगंधुद्धु(धद्ध)मायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया-सुन्दरकंद-रुइरिय-मुणिवर(गण)-मइंदइन्नस्स । हेउसय-धातुपगलंत-रयण-दित्तोसहि-गुहस्स ॥ १४ ॥ संवरवरजल-पगलिय-उज्जर-पविरायमाण-हारस्स । सावगजण-पउर-रवंतमोर-नच्चंतकुहरस्स ॥ १५ ॥ विणयन(म)य-पवरमुणिवर-फुरंतविज्जु-जलंतसिहरस्स । विविहगुण-कप्प-रुक्खग-फल-भर-कुसुमाउल-वणस्स (विविहकुल-कप्परुक्खगणय-भरकुसुमिय-कुलवणस्स) ॥१६॥ नाणवररयणदिप्पंत-कंतवेरुलिय-विमलचूलस्स । वंदामि विणयपणओ संघम-हामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥ (छहिं कुलयं) गुणरयणुज्जलकडअ-सीलसुगंधि-(ध)तवमंडिउद्दे सं । सुयबारसंग-सिहरं महामंदरं वंदे ॥१८॥ नगर-रह चक्क-पउमे चंदे सूरे समुद्दमेरुंमि । जो उवमिज्जइ सततं तं संघगुणायरं वंदे ॥ १९ ॥ वंदे उसभं अजियं संभवमभिनंदणं सुमइसुप्पभ सुपासं । ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥ २० ॥ विमलमणंतं च धम्मं सन्तिं कुंथुं अरं च मल्लिं च । मुनिसुव्वय-नमि-नेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥२१॥ जुम्मं ॥ पढमित्थ इंदभूइ बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति । तईए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ २२ ॥ मंडिअ-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयल-भाया य । मेअज्जे य पहासे य गणहरा हुँति वीरस्स ॥२३॥ जुम्मं ॥ निव्वुइपह-सासणयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमय-मयनासणयं जिणिंदवर-वीरसासणयं ॥२४॥ सुहम्मं १ अग्गिवेसाणं, जम्बुनामं २ च कासवं । पभवं ३ कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं ४ तहा ॥ २५ ॥ जसभद्दं ५ तुंगियं वन्दे, संभूतं ६ चेव माढरं । भद्दबाहुं ७ च पाइन्नं, थूलभद्दं ८ च गोयमं ॥२६॥ एलावच्चसगोत्तं वंदामि, महागिरिं ९ सुहत्थिं १० च । तत्तो कोसिअ-(कासव)गोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं ११ वन्दे ॥ २७ ॥ हारियगुत्तं साइं १२ च वंदामि, हारियं च सामज्जं १३ । वन्दे कोसियगोत्तं संडिल्लं १४

अज्जजीय(व)धरं ॥ २८ ॥ तिसमुद्द-खायकित्तिं दीवसमुद्देसु गहियपेयालं । वन्दे अज्जसमुद्दं १६ अक्खुभिय-समुद्दगंभीरं ॥ २९ ॥ भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं। वंदामि अज्जमंगुं १७ सुयसागर-पारगं धीरं ॥ ३० ॥ वंदामि अज्जधम्मं तत्तो वन्दे य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवइ(वे)रं २० तवनियमगुणेहिं वइरसमं ॥ ३१ ॥ वंदामि अज्जरक्खियं खमणे २१ रक्खियचरित्तसव्वस्से । रयणकरडंगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥ ३२ ॥ नाणंमि दंसणंमि अ तवविणए निच्चकालमुज्जुत्तं । अज्जं नन्दिलखमणं सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥ ३३ ॥ वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्जनागहत्थीणं । वागरणकरणभंगिय-कम्मपयडी-पहाणाणं ॥ ३४ ॥ जच्चंजण-धाउसमप्पहाणं मुद्दियकुवलयनिहाणं । वड्ढउ वायगवंसो रेवइनक्खत्त-नामाणं २४ ॥ ३५ ॥ अयलपुराणिक्खंते कालिय-सुयआणुओगिए धीरे । बंभद्दीविअ-सीहे वायग-पयमुत्तमं पत्ते ॥ ३६ ॥ जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जवि अड्ढभरहम्मि । बहुणयरनिग्गयजसे तं वंदे खंदिलायरिए ॥ ३७ ॥ तत्तो हिमवंत-महंत-विक्कमे धिइपरक्कममणं(हं)ते । सज्झायमणंतधरे हिमवंते २७ वंदिमो सिरसा ॥ ३८ ॥ कालियसुय-अणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं । हिमवंत-खमासमणे वन्दे नागज्जुणायरिए ॥ ३९ ॥ मिउमद्दव संपन्ने अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते । ओहसुयसमाय(या)रे नागज्जुणवायए २८ वन्दे ॥ ४० ॥ गोविंदाणंपि नमो अणुयोगो विउल-धारिणिंदाणं । निच्चं खंति-दयाणं परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥ ४१ ॥ तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तवसंजमे अनिव्विणं । पंडियजणऽसामण्णं वंदामि संजमं विहणणु ॥ ४२ ॥ वरकणग-तविय(तवियवरकणग)चंपग-विमउलवरकमल--गब्भसरिवन्ने । भविअजण-हिययदइए दयागुण-विसारए धीरे ॥ ४३ ॥ अड्ढभरहप्पहाणे बहुविह-सज्झाय-सुमुणिय-पहाणे । अणुओगिय-वरवसभे नाइलकुल-वंसनंदिकरे ॥ ४४ ॥ भूअहिअयप्पगब्भे (जगभूयहिय-पगब्भे) वंदेऽहं भूयदिन्नमायरिए २९ । भवभयवुच्छेयकरे

सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥ ४५ ॥ सुमुणिय-निच्चानिच्चं सुमुणिय-सुत्तऽत्थ-धारयं वन्दे । सब्भावुब्भावणातत्थं लोहिच्च-णामाणं ३० (निच्चं । वंदऽहं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणातच्चं) ॥ ४६ ॥ अत्थमहत्थखाणिं सुसम(व)ण-वक्खाण-कहणनिव्वाणिं । पयईइ महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ३१ ॥ ४७ ॥ तवनियम-सच्चसंजम-विणयज्जव-खंतिमद्दव-रयाणं । सील-गुणग-द्दियाणं अणुओग-जुगप्पहाणाणं ॥ ४८ ॥ सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे । पाए पावयणीणं पाडिच्छयसएहिं पणिवइए ॥ ४९ ॥ जे अन्ने भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे । ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥ ५० ॥ इइ थेरावलिया ॥

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे य ७ । मसग ८ जलूग ९ विराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभेरी (आभीरे) १४ ॥१॥ सा समासओ तिविहा पन्नत्ता, तं जहा-जाणिया, अजाणिया, दुव्विअड्ढा, (जाणिआ जहा-खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुण-समिद्धा । दोसे अ विवज्जंति तं जाणसु जाणियं परिसं ॥ १ ॥ अजाणिया जहा-जा होइ पगइमहुरा मियछावय-सीहकुक्कुडयभुआ । रयणमिव असंठविआ, अजाणिआ सा भवे परिसा ॥२॥ दुव्विअड्ढा जहा-न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं । वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लय विअड्ढो ॥३॥)

नाणं पञ्चविहं पन्नत्तं, तं जहा-आभिणिबोहिअनाणं, सुअनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं केवलनाणं ॥ सूत्रं १ ॥ तं समासओ दुविहं पन्नत्तं, तंजहा-पच्चक्खं च परोक्खं च २ ॥ सू० २ ॥ से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा-इंदियपच्चक्खं च नोइंदिय-पच्चक्खं च २ । से किं तं इंदियपच्चक्खं ? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-सोइन्दियपच्चक्खं चक्खिंदियपच्चक्खं, घाणिंदियपच्चक्खं, रसणेंदियपच्चक्खं, फासिंदियपच्चक्खं, से त्तं इंदियपच्चक्खं २ ॥ सू० ३ ॥ से किं तं नोइंदिअ-

पच्चक्खं ? नोइंदिअपच्चक्खं तिविहं पन्नतं, तं जहा–ओहिनाणं नोइंदिअपच्चक्खं, मणपज्जवनाणं नोइंदिअपच्चक्खं, केवलनाणं नोइंदिअपच्चक्खं ॥ सू० ४ ॥ से किं तं ओहिनाणनोइंदिअपच्चक्खं ? ओहिनाणनोइंदिअपच्चक्खं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–भवपच्चइअं च खओवसमिअं च १ । से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दोण्हं पन्नत्तं, तं जहा–देवाण य नेरइआण य २ । से किं तं खओवसमिअं ? खओवसमिअं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–मणूसाण य पंचिंदिअतिरिक्खजोणिआण य ३ । को हेऊ खओवसमिअं ? खओवसमिअं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ४ । अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ, तं समासओ छव्विहं पन्नत्तं, तं जहा–आणुगामिअं, अणाणुगामिअं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइ, अप्पडिवाइ ५ ॥ सू० ५ ॥ से किं तं आणुगामिअं ओहिनाणं ? आणुगामिअं ओहिनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–अंतगयं च मज्झगयं च १ । से किं तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पन्नत्तं, तं जहा–पुरओ अंतगयं, मग्गओ अंतगयं, पासओ अंतगयं २ । से किं तं पुरओ अंतगयं ? पुरओ अंतगं । से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडु(चुड)लियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा से तं पुरओ अंतगयं ३ । से किं तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं मग्गओ अंतगयं ४ । से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जाइं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं, से तं अंतगयं ५ । से किं तं मज्झगयं ? मज्झगयं

से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलिअं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा से तं मज्झगयं ६ । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोअणाइं जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोअणाइं जाणइ पासइ, पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोअणाइं जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता (समत्ता) संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोअणाइं जाणइ पासइ, से तं आणुगामिअं ओहिनाणं १ ॥ सू० ६ ॥

से किं तं अणाणुगामिअं ओहिनाणं ? अणाणुगामिअं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं २ परिघोलेमाणे २ तमेव जोइट्ठाणं जाणइ पासइ अन्नत्थगए न जाणइ न पासेइ, एवामेव अणाणुगामिअं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जेइ तत्थेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोअणाइं जाणइ पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ, से तं अणाणुगामिअं ओहिनाणं २ ॥ सू० ७ ॥ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ? वड्ढमाणयं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसाणट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स, विसुज्झमाणस्स विसुज्जमाणचरित्तस्स, सव्वओ समंता ओही वड्ढइ १ । जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स । ओगाहणा जहन्ना ओहिखित्तं जहन्नं तु ॥ १ ॥ सव्वबहु-अगणिजीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु । खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥ २ ॥ अंगुल-मावलियाणं भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा(ज्जं) । अंगुलमावलिअंतो आवलिआ अंगुलपुहुत्तं ॥ ३ ॥ हत्थंमि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउअम्मि बोद्धव्वो । जोयण-दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥ ४ ॥

भरहंमि अद्धमासो, जम्बुद्दीवंमि साहिओ मासो । वासं च मणुअलोए, वासपुहुत्तं च रुअगंमि ॥ ५ ॥ संखिज्जंमि उ काले, दीवसमुद्दाऽवि हुंति संखिज्जा । कालंमि असंखेज्जे दीवसमुद्दा उ भइअव्वा ॥ ६ ॥ काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइअव्वु खित्तवुड्ढीए । वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइअव्वा खित्त काला उ ॥७॥ सुहुमो अ होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्तं । अंगुलसेढिमित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥८॥ से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं २ ॥ सू० ८ ॥ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ, से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं २ ॥ सू० ९ ॥

से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ? पडिवाइ ओहिनाणं जण्णं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जयभागं वा, संखिज्जभागं वा, वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा, लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा, जूअं वा जूअपुहुतं वा, जवं वा जवपुहुत्तं वा, अंगुलं वा अंगुलपुहुत्तं वा, पायं वा पायपुहुत्तं वा, विहत्थिं वा विहत्थिपुहुत्तं वा, रयणिं वा रयणिपुहुत्तं, वा, कुच्छिं वा कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा धणुपुहुत्तं वा, गाउं वा गाउपुहुत्तं वा, जोअणं वा जोअणपुहुत्तं वा, जोअणसयं वा जोअणसयपुहुत्तं वा, जोअणसहस्सं वा जोअणसहस्सपुहुत्तं वा, जोअणलक्खं वा जोअणलक्खपुहुत्तं वा, जोअणकोडिं वा जोअणकोडिपुहुत्तं वा, जोअणकोडाकोडिं वा जोअणकोडाकोडिपुहुत्तं वा, जोअणसंखिज्जं वा जोअणसंखिज्जपुहुत्तं वा, जोअणअसंखेज्जं वा जोअणअसंखेज्जपुहुत्तं वा, उक्कोसेणं लोगं वा पासित्ताणं पडिवइज्जा, १ । सेत्तं पडिवाइओहिनाणं २ ॥ सू० १० ॥

से किं तं अपडिवाइ ओहिनाणं ? अपडिवाइ ओहिनाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासपएसं जाणइ पासइ तेण परं अपडिवाइ ओहिनाणं से त्तं अपडिवाइ ओहिनाणं ॥ सू० ११ ॥ तं समासओ चउव्विहं पन्नत्तं, तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ १ । तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी

जहन्ने णं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसे णं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, २ । खित्तओ णं ओहिनाणी जहन्ने णं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ पासइ, उक्कोसे णं असंखिज्जाइं अलोगे लोगप्पमाणमिताइ खंडाइ जाणइ पासइ, ३ । कालओ णं ओहिनाणी जहन्ने णं आवलिआए असंखिज्जइभागं कालं जाणइ पासइ, उक्कोसे णं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईयमणागयं च कालं जाणइ पासइ, ४ । भावओ णं ओहिनाणी जहन्ने णं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसे णं वि अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ, ५ । ओही भवपच्चइओ गुणपच्चइओ य वण्णिओ एसो(दुविहो) । तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य काले य ॥१॥ नेरइयदेवतित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुँति । पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥ २ ॥ से त्तं ओहिनाणं (पच्चक्ख) ६ ॥ सू० १२ ॥

से किं तं मणपज्जवनाणं ? मणपज्जवनाणं भंते ! किं मणुस्साणं उपज्जइ अमणुस्साणं उप्पज्जइ ? गोयमा ! मणुस्साणं उप्पज्जइ नो अमणुस्साणं, १ । जइ मणुस्साणं किं संमुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं?गोयमा!नो संमुच्छिममणुस्साणं उप्पज्जइ गब्भववकंतिय-मणुस्साणं २ । जइ गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं किं कम्मभूमियगब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं अकम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं नो अकम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं नो अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ३ । जइ कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं किं संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय--मणुस्साणं असंखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भववकंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! संखिज्जवासाउय--कम्मभूमिय-गब्भववकंतिय-मणुस्साणं नो असंखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय--गब्भववकंतिय-मणुस्साणं ४ । जइ संखिज्जवासाउय--कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय--मणुस्साणं

किं पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं अपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, नो अपज्जत्तगसंखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ५ । जइ पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं मिच्छादिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! सम्मदिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं नो मिच्छादिट्ठि-पज्जत्तगसंखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं नो सम्मामि-च्छदिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ६ । जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं किं संजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं असंजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं संजयासंजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! संजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, नो असंजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं नो संजयासंजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ७ । जइ संजयसम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं किं पमत्तसंजय--सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय--गब्भवक्कंतिय--मणुस्साणं, अपमत्तसंजय--सम्मदिट्ठि--पज्जत्तग--संखेज्जवासाउय--कम्मभूमिय--गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! अपमत्तसंजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, नो पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखे

ज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ८ । जइ अपमत्तसंजय-सम्म-दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं इड्ढि-पत्त-अपमत्तसंजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं अणिड्ढिपत्त-अपमत्तसंजय--सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग--संखेज्जवासाउय-कम्म भूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! इड्ढिपत्त-अपमत्तसंजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, नो अणिड्ढिपत्त-अपमत्तसंजय--सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग--संखेज्जवासाउय--कम्मभूमिय--गब्भवक्कंतिय--मणुस्साणं मणपज्जवनाणं समुपज्जइ ९ । तं च दुविहं पन्नत्तं (उप्पज्जइ), तंजहा—उज्जुमई य विउलमई य १० । तं समासओ चउव्विहं पन्नतं, तं जहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ, खित्तओ णं उज्जुमई जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जयभागं उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अन्तो-मणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छप्पन्नए अन्तरदीवगेसु सन्निपंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ ११ । तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ, भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ, मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरि(परि)चिंतिय-

त्थपागडणं माणुसखित्तनिबद्धं गुणपच्चइअं चरित्तवओ, से त्तं मणपज्जवनाणं १२ ॥ सू० १३ ॥ से किं तं केवलनाणं ? केवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा—भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च १ । से किं तं भवत्थकेवलनाणं ? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च अयोगि-भवत्थकेवलनाणं च २ । से किं तं सजोगि-भवत्थकेवलनाणं ?, सयोगि-भवत्थकेवलनाणं दुविहं पराणत्तं, तं जहा—पढमसमय-सयोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरिमसमय-सयोगि-भवत्थकेवलनाणं च अचरिममसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च, से तं सजोगि-भवत्थकेवलनाणं ३। से किं तं अयोगि-भवत्थकेवलनाणं ?, अयोगि-भवत्थकेवलनाणं दुविहं पराणत्तं, तं जहा—पढमसमय-अयोगि-भवत्थकेवलनाणं च अपढमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरिमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च अचरिमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च, से तं अजोगि-भवत्थकेवलनाणं ४ । से किं तं सिद्धकेवलनाणं ? सिद्धकेवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा—अणंतर-सिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च ५ । से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ? अणंतर-सिद्धकेवलनाणं पन्नरस्सविहं पन्नत्तं, तं जहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थयरसिद्धा ३ अतित्थयरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२ गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५ से त्तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ६ । से किं तं परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविहं पन्नत्तं, तं जहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउममयसिद्धा जाव दस समयसिद्धा संखिज्जसमयसिद्धा असंखिज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से त्तं परंपरसिद्धकेवलनाणं, से त्तं सिद्ध-

केवलनाणं ७। तं समासओ चउव्विहं पन्नत्तं, तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ णं केवलनाणी सव्वखित्तं जाणइ पासइ, कालओ णं केवलनाणी सव्वकालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलनाणी सव्वभावे जाणइ पासइ ८। अह सव्वदव्व-परिणाम-भावविन्नत्ति-कारणमणंतं। सासयमप्पडिवाई एगविहं केवलनाणं ॥ १ ॥ केवलनाणेणऽत्थे नाउं जे तत्थ पन्नवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो वइजोग सुअं(तयं) हवइ सेसं (तेसिं) ॥ २ ॥ से त्तं केवलनाणं, से त्तं पच्चक्खनाणं १ ॥ सू० १४ ॥ से किं तं परुक्खनाणं ? परुक्खनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–आभिणिबोहिय-नाणपरुक्खं च सुअनाणपरुक्खं च १। जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुअनाणं, जत्थ सुअनाणं तत्थाभिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाइं अन्नमन्नमणुगयाइं तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पन्नवयंति–आभिनिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियनाणं २। सुणेइ त्ति सुअं मइपुव्वं जेण सुअं, न मइ सुअपुव्विआ ३। अविसेसिआ मइ-मइनाणं च मइअन्नाणं च, विसेसिआ मती सम्मदिट्ठिस्स मइ-मइनाणं, मिच्छदिट्ठिस मइ-मइअन्नाणं ४। अविसेसिअं सुयं-सुयनाणं च सुयअन्नाणं च, विसेसिअं सुयं-सम्मदिट्ठिस्स सुयं-सुयनाणं मिच्छदिट्ठिस्स सुयं-सुयअन्नाणं ५। से किं तं आभिणिबोहियनाणं ? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–सुयनिस्सियं च असुयनिस्सियं च ६ ॥ सू० १५ ॥ से किं तं असुयनिस्सियं ? असुयनिस्सियं चउव्विहं पन्नत्तं, तं जहा–उप्पत्तिआ १ वेणइआ २ कम्मआ ३ परिणामिआ ४। बुद्धि चउव्विहा वुत्ता पंचमी नोवलब्भइ ॥ १ ॥ पुव्वं अदिट्ठ-मस्सुय-मवेइय-तक्खणविसुद्ध-गहिअत्था। अव्वाहय-फलजोगा बुद्धी उप्पत्तिआ नाम ॥ २ ॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८। गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२

खुड्डग १३ मग्गित्थि १४ पइ १५ पुत्ते १६ ॥ ३ ॥ भरह १ सिल २ मिंढ ३ कुक्कुड ४ वालुअ ५ हत्थी ६ अगड ७ वणसंडे ८ । पायस ९ अइआ १० पत्ते ११ खाडहिला १२ पंचपिअरो य १३ ॥ ४ ॥ महुसित्थ १४ मुद्दि १५ अंके १६ नाणए १७ भिक्खु १८ चेडगनिहाणे १९ । सिक्खाय २० अत्थसत्थे २१ इच्छायमहं २२ सयसहस्से २३ ॥ ५ ॥ भरनित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहिअपेआला । उभओ लोगफलवई विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ६ ॥ निमित्ते १ अत्थसत्थे य २ लेहे ३ गणिए अ ४ कूव ५ अस्से य ६ । गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९ अगए १० रहिय य ११ गणिया य १२ ॥ ७ ॥ सीआ साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १३ । निव्वोदए अ १४ गोणे घोडगपडणं च रुक्खाओ १५ ॥ ८ ॥ उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणाविसाला । साहुक्कारफलवई कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ९ ॥ हेरन्निए १ करिसए २ कोलिय ३ डोवे य ४ मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ । तुण्णाए ८ वड्ढई य ९ पूयइ १० घड ११ चित्तकारे य ॥ १० ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिआ वयविवागपरिणामा । हिअनिस्सेअसफलवई बुद्धी परिणामिआ नाम ॥ ११ ॥ अभए १ सिट्ठि २ कुमारे ३ देवी ४ उदिओदए हवइ राया । साहू य नंदिसेणो ६ धणदत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥ १२ ॥ खमए १० अमच्च ११ पुत्ते चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे अ १३ । नासिक्कसुंदरिनंदे १४ वइरे १५ परिणामबुद्धीए ॥ १३ ॥ चलणाहण १६ आमंडे १७ मणीय १८ सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिंदे २१ । परिणामियबुद्धीए एवमाई उदाहरणा ॥ १४ ॥ से त्तं असुयनिस्सियं ॥ सू० १६ ॥ से किं तं सुयनिस्सियं मइनाणं ? सुयनिस्सियं मइनाणं चउव्विहं पन्नत्तं, तं जहा—उग्गह ईहा अवाओ धारणा १ । से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—अत्थुग्गहे अ वंजणुग्गहे अ २ । से

किं तं वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणेंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे। से त्तं वंजणुग्गहे ३। से किं तं अत्थुग्गहे ? अत्थुग्गहे छव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे, तस्स णं इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तं जहा–आभोगणया १ उवधारणया २ सवणया ३ अवलंबणया ४ मेहा ५ से त्तं उग्गहे ४। से किं तं ईहा ? ईहा छव्विहा पन्नत्ता, तं जहा–सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भिदियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा, तीसे णं इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तं जहा–आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ विमंसा ५ से त्तं ईहा ५। से किं तं अवाए ? अवाए छव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–सोइंदियअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदयअवाए, जिब्भिदियअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स णं इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा पन्नत्ता, तं जहा–आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विन्नाणे ५ से त्तं अवाए ६। से किं तं धारणा धारणा ? छव्विहा पन्नत्ता, तं जहा–सोइंदियधारणा, चक्खिंदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा पन्नत्ता, तं जहा–धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पइट्ठा ४ कोट्ठे। से त्तं धारणा ७॥ सू० १७॥ उग्गहे इक्कसमइए, अन्तोमुहुत्तिआ ईहा, अन्तोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं १। एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि, पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लग दिट्ठंतेण य २॥ सू० १८॥ से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेण ?

पडिबोहगदिट्ठंतेणं-से जहा नामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा अमुगा अमुगत्ति, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? तिसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति जाव दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? संखिज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? असंखिज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? एवं वदंतं चोयगं पन्नवए एवं वयासी नो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपोग्गला गहणमागच्छंति, नो तिसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, से त्तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ३ ॥ सू० ११ ॥ से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा से नट्ठे, अन्नेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे १ । एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरिहिति, होही से उदगबिंदु जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ ताहे हुंति करेइ २ । नो चेव णं जाणइ के वि एस सद्दाइ तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ ३ । तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ ४ । तओ णं धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्ज वा कालं ५ । से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा तेणं सद्देत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ णं अवायं पविसइ, तओ से उवगयं

हवइ तओ णं धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ६। से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासेज्जा तेणं रूवत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस रूवत्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवेत्ति, तओ अवायं पविसइ, तओ से उगवयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ७। से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं गंधेत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस गंधति, तओ ईहं पविसई, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ८। से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसेत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ, के वेस रसेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ९। से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ, के वेस फासत्रेत्ति, तहो ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं १०। से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ, के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणेत्ति, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ११। से त्तं मल्लगदिट्ठंतेण ॥ सू० २० ॥ तं समासओ चउव्विहं पन्नतं, तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ १। तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ, खेत्तओ णं आभिणिबोहिय-नाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ, कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ, भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ न पासइ २। उग्गहईहाऽवाओ य धारणा एव हुँति चत्तारि। आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ १ ॥ अत्थाणं उग्गहणंमि उग्गहे, तह विआलणे ईहा। ववसायंमि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ २ ॥ उग्गह इक्कं समयं, ईहाऽवाया मुहुत्तमद्धं(मंतं) तु। कालमसंखं संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥ ३ ॥ पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु। गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ४ ॥ भासाममसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ। वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा। सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहिअं ॥ ६ ॥ से त्तं आभिणिबोहियनाण-परोक्खं, से त्तं मइनाणं ३ ॥ सू० २१ ॥ से किं तं सुयनाण-परोक्खं ?, सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पन्नत्तं, तं जहा—अक्खरसुयं १ अणक्खरसुयं २ सन्निसुयं ३ असन्निसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छासुयं ६ साइसुयं ७ अणाइसुयं ८ सपज्जवसिअसुयं ९ अपज्जवसिअसुयं १० गमियसुयं ११ अगमियसुयं १२ अंगपविट्ठं सुयं १३ अणंगपविट्ठं सुयं १४ ॥ सू० २२ ॥ से किं तं अक्खरसुयं ? अक्खरसुयं तिविहं पन्नतं, तं जहा—सन्नक्खरं-वंजणक्खरं लद्धिअक्खरं, से किं तं सन्नक्खरं ? सन्नक्खरं अक्खरस्स संठाणाऽऽगिई (सद्दाणगइ). से त्तं सन्नक्खरं, से किं त वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से त्तं वंजणक्खरं, से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तंजहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं चक्खिंदियलद्धिअक्खरं, घाणिंदियलद्धिअक्खरं, जिब्भिंदियलद्धिअक्खरं, फासिंदियलद्धिअक्खरं, नोइंदियलद्धिअक्खरं, सं त्तं लद्धिअक्खरं से त्तं अक्खरसुयं

॥ सू० २३ ॥ से किं तं अणक्खरसुयं ?, अणक्खरसुयं अणेगविहं पन्नतं, तं जहा–ऊससियं नीससियं निच्छूढं खासियं च छीअं च। निस्सिधिअमणुसारं अणक्खरं छेलिआइअं ॥ १ ॥ से त्तं अणक्खरसुयं ॥ सू० २४ ॥ से किं तं सन्निसुयं ? सन्निसुयं तिविहं पन्नत्तं, तं जहा–कालिओवएसेणं हेऊवएसेणं दिट्ठिवाओवएसेणं १ । से किं तं कालिओवएसेणं ? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता विमंसा, से णं सन्नीति लब्भइ, जस्स णं नत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता विमंसा से णं असन्नीति लब्भइ, से त्तं कालिओवएसेणं २ । से किं तं हेऊवएसेणं ? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विआ करणसत्ती से णं सन्नीति लब्भइ, जस्स णं नत्थि लभिसंधारणपुव्विआ करणसत्ती से णं असन्नीति लब्भइ, से त्तं हेऊवएसेणं ३ । से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं ? दिट्ठिवाओवएसेणं सन्निसुयस्स खओवसमेणं सन्नी लब्भइ, असन्निसुयस्स खओवसमेणं असन्नी लब्भइ से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ४ । से त्तं सुन्निसुयं । से त्तं असन्निसुयं ५ ॥ सू० २५ ॥

से किं तं सम्मसुयं ? सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पन्ननाणदंसणधरेहिं तेलुक्क-निरिक्खिअ(चहित)महियपूइएहिं तीयपडु-(च्चु)प्पन्न-मणागयजाणएहिं सव्वन्नूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा–आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ति ५ नायाधम्मकहाओ, ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाईयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२, । इच्चेअं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं अभिन्नदसपुव्विस्स सम्मसुयं, तेण परं भिन्नेसु (भयणाइ) भयणा, से त्तं सम्मसुयं २ ॥ सू० २६ ॥ से किं तं मिच्छासुयं ? मिच्छासुयं जं इमं अन्नाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धि-मइविगप्पियं तं जहा–भारहं,

रामायणं, हंभीमासुरुक्खं, कोडिल्लयं, सगडभद्दिआओ, खोड(घोडग)मुहं, कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी, वइसेसिअं, बुद्धवयणं, तेसियं, कावलियं, लोगाययं, सट्टितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवं, पायंजली, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं, अहवा बावत्तरि कलाओ, चत्तारि अ वेआ संगोवंगा एआइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहिआइं मिच्छासुयं, एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगहिआइं सम्मसुयं, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिआ तेहिं चेव समएहिं चोईआ समाणा केइ सपक्खदिट्ठिओ चयति । से त्तं मिच्छासुयं ६ ॥ सू० २७ ॥ से किं तं साईअ मपज्जवसिअं, अणाइअं अपज्जवसियं सुयं ? साइअं सपज्जवसिअं, अणाइअं अपज्जवसिअं सुयं-इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं, वुच्छित्ति नयट्ठयाए साइअं सपज्जवसिअं, अवुच्छित्ति नयट्ठयाए अणाईअं अपज्जवसिअं १ । तं समासओ चउव्विहं पन्नतं, तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ २ । तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइअं सपज्जवसिअं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं ३ । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च साइअं सपज्जवसिअं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं ४ । कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइअं सपज्जवसिअं, नोउस्सप्पिणिं नोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं ५ । भावओ णं जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जति तया ते भावे (ते तहा) पडुच्च साइअं सपज्जवसिअं खाओवसमिअं पुण भावं पडुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं ६ । अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइअं सपज्जवसिअं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च ७ । सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं अणंतगुणिअं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्व-

जीवाणं पि अ णं अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ ८। "जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं पाविज्जा। सुट्ठुवि मेहसमुदए होइ पभा चंदसूराणं॥" सेतं साइअं सपज्जवसिअं, सेतं अणाइअं अपज्जवसिअं (सुयं) ९ ॥ सू० २८॥ से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ, से किं तं अगमियं? अगमियं कालियं सुयं। सेत्तं गमियं सेत्तं अगमियं १। अहवा तं समासओ दुविहं पन्नत्तं तं जहा–अंगपविट्ठं अणंगपविट्ठं (अंगबाहिरं) च २॥ सू० २९॥ से किं तं अणंगपविट्ठं (अंगबाहिरं)? अणंगपविट्ठं (अंगबाहिरं) दुविहं पन्नत्तं, तं जहा - आवस्सयं च आवस्सयवइरित्तं च १। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पन्नत्तं, तं जहा–सामाइअं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं, से त्तं आवस्सयं २। से किं तं आवस्सयवइरित्तं?, आवस्सयवइरित्तं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा–कालियं च उक्कालियं च ३। से किं तं उक्कालियं?उक्कालियं अणेगविहं पन्नत्तं, तं जहा–दसवेआलियं १ कप्पिआकप्पियं २ चुल्लकप्पसुयं ३ महाकप्पसुयं ४ उववाइयं ५ रायपसेणियं ६ जीवाभिगमो ७ पन्नवणा ८ महापन्नवणा ९ पमायप्पमायं १० नंदी ११ अणुओगदाराइं १२ देविंदत्थओ १३ तंदुलवेआलियं १४ चंदाविज्झयं १५ सूरपन्नत्ती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्पवेसो १८ विज्जाचरणविणिच्छओ १९ गणिविज्जा २० झाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयविसोही २३ मरणविसोही, वीयरागसुयं २४ संलेहणासुयं २५ विहारकप्पो २६ चरणविही २७ आउरपच्चक्खाणं २८ महापच्चक्खाणं २९ एवमाइ, सेत्तं उक्कालियं ४। से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पन्नत्तं, तं जहा–उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ निसीहं ५ महानिसीहं ६ इसिभासिआइं ७ जंबूद्दीवपन्नत्ती ८ चंदपन्नत्ती ९ दीवसागरपन्नत्ती १० खुड्डिआविमाणपविभत्ती ११ महल्लिआविमाणपविभत्ती १२ अंगचूलिआ १३ वग्गचूलिआ १४ विवाहचूलिआ १५, अरुणोववाए १६ वरुणोववाए १७ गरुलो-

ववाए १८ धरणोववाए ११ वेसमणोववाए २० वेलंधरोववाए २१ देविंदोववाए २२ उट्ठाणसुए २३ समुट्ठाणसुए २४ नागपरियावलियाणं(ओ) २५ निरियावलियाणं(ओ) २६ कप्पियाणं(ओ) २७ कप्पवडिंसियाणं २८ पुप्फियाणं २९ पुप्फचूलियाणं ३० वण्हीयाणं ३१ वण्हीदसाणं ३२ आसीविसभावणाणं ३३ दिट्ठिविसभावणाणं ३४ चारणसुमिणभावणाणं ३५ महासुमिणभावणाणं ३६ तेअग्गिनिसग्गाणं ३७ एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नग-सहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स ६ । तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं ७ । चोद्दस पइन्नग-सहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स ८ । अहवा जस्स जत्तिआ सीसा उप्पत्तिआए वेणइआए कम्मयाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धीए उववेसा तस्स तत्तिआइं पइन्नग सहस्साइं पत्तेअ बुद्धावि तत्तिआ चेव ९ । से त्तं कालियं, से त्तं उक्कालियं सुयं, से त्तं आवस्सयवइरित्तं, से त्तं अणंगपविट्ठं सुयं १० ॥ सू० ३० ॥ से किं तं अंगपविट्ठं ?, अंगपविट्ठं दुवालसविहं पन्नत्तं, तं जहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ३१ ॥

से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयरगोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-माया-जाया-वित्तीओ आघविज्जंति १ । से समासओ पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—नाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे २ । आयारे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ ३ । से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो सुअक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीई उद्देसणकाला, पंचासीई

समुद्देसणकाला, अट्ठारस पय सहस्साणि पयग्गेणं ४। संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं आयारे ६ ॥ १ ॥ सू० ३२ ॥

से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोआलोए सूइज्जन्ति, जीवा सूइज्जन्ति, अजीवा सूइज्जन्ति, जीवाजीवे सूइज्जन्ति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जन्ति १। सूयगडे णं असीअस्स किरियावाइसयस्स चउरासीइए अकरियावाईणं सत्तट्ठीए अन्नाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ २। सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ ३। से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे दो सुअक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साणि, पयग्गेणं ४। संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे ६। ॥२॥ सू० ३३॥

से किं तं ठाणे ? ठाणे जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवे ठाविज्जंति। ससमए ठाविज्जति, परसमए ठाविज्जति, ससमए परसमए ठाविज्जति, लोए ठाविज्जति, अलोए ठाविज्जति, लोआलोए ठाविज्जंति १। ठाणे णं टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुडाइं गुहाओ आगरा दहा नईओ आघविज्जंति, ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसठाणगविवड्ढि-

याणं भावाणं परूवणा आघविज्जति २। ठाणे णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ ३। से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुअक्खंधे दस अज्झयणा एगवीसं उद्देसणकाला एगवीसं समुद्देसणकाला बावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेणं ४। संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से तं ठाणे ६ ॥ ३ ॥ सू० ३४ ॥ से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति ससमए समासिज्जति परसमए समासिज्जति ससमए परसमए समासिज्जति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्जति, लोए अलोए समासिज्जति १। समवाए णं एगाइआणं, एगुत्तरिआणं ठाणगसयविवड्ढिआणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जंति २। समवायस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ ३। से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे सुअक्खंधे एगे अज्झयणे एगे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोआले पयसयसहस्से पयग्गेणं ४। संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं

चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं समवाए ६ ॥ ४ ॥ सू० ३५ ॥

से किं तं विवाहे ? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति ससमए विआहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमयपरसमए वियाहिज्जंति लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोआलोए विआहिज्जंति, १ । विवाहस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ २ । से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुअक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसए दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं दोलक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं ३ । संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासय-कडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४ । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया सेवं ए चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ ५ । से तं विवाहे ६ ॥ ५ ॥ सू० ३६ ॥ से किं तं नायाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परिआया सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ अ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति १ । नायाधम्मकहाणं दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइआसयाइं एगमेगाए अक्खाइआए पंच पंच उवक्खाइआसयाइं एगमेगाए उवक्खाइआए पंच पंच अक्खाइआउवक्खाइआसयाइं एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंति त्ति समक्खायं २ ।

नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ ३ । से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधे एगूणवीसं अज्झयणा एगूणवीसं उद्देसणकाला एगूणवीसं समुद्देसणकाला संखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणं ४ । संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५ । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से तं नायाधम्मकहाओ ६ ॥ ६ ॥ सू० ३७ ॥ से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइअपरलोइआ इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परिआगा सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं सीलव्वयगुण-वेरमणपच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरिआओ अ आघविज्जंति १ । उवासगदसाणं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ २ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुअक्खंधे दस अज्झयणा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकालां संखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणं ३ । संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४ । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया एवं

चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं उवासगदसाओ ५ ॥७॥ सू० ३८ ॥ से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलाइयपरलोइयाइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परिआया सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अंतकिरियाओ आघविज्जंति १ । अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ २ । से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे एगे सुअक्खंधे अट्ठ वग्गा अट्ठ उद्देसणकाला अट्ठ समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं ३ । संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४ । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं अंतगडदसाओ ५ ॥ ८ ॥ सू० ३९ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयाइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परिआया सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति १ । अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ २ । से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे

सुयक्खंधे तिन्नि वग्गा तिन्नि उद्देसणकाला तिन्नि समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं ३। संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ५॥ १॥ सू० ४०॥

से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं, तंजहा—अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं अद्दागपसिणाइं अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया नागसुवन्नेहि सद्धिं दिव्वा संवाया (संवाणा संधणंति) आघविज्जंति १। पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ २। से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे पणयालीसं अज्झयणा पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं ३। संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं पण्हावागरणाइं ५॥ १०॥ सू० ४१॥ से किं तं विवागसुयं ? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ १। तत्थ णं दस दुहविवागा दस सुहविवागा २। से किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपर-

लोइया इड्ढिविसेसा निरयगमणाइं दुहपरंपराओ संसारभवपवंचा दुकुलपच्चायाईओ दुलहबोहियत्तं आघविज्जंति, से तं दुहविवागा ३। से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयाइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाइया पव्वज्जाओ परिआया सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुहपरंपराओ सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति (से तं सुहविवगा) ४। विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जा संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ५। से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे दो सुअक्खंधा वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं ६। संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ७। से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं विवागसुयं ८ ॥ ११ ॥ सू० ४२ ॥ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जंति, से समासओ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ॥ सू० ४३ ॥

से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा—सिद्धसेणिआपरिकम्मे १ मणुस्ससेणिआपरिकम्मे २ पुट्ठसेणिआपरिकम्मे ३ ओगाढसेणिआपरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणिआपरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे ६ चुआचुअसेणिआपरिकम्मे ७। से किं तं सिद्धसेणिआपरिकम्मे ? सिद्धसेणिआपरिकम्मे चउद्दसविहे पन्नत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठिअपयाइं २ अट्ठप-

याइं ३ पाढो ४ आमा(मा)सपयाइं ५ केउभूअं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूअ-पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, सेतं सिद्धसेणिआपरिकम्मे ॥ १ ॥ से किं तं मणुस्ससेणिआपरिकम्मे ? मणुस्ससेणिआपरिकम्मे चउद्दसविहे पन्नत्ते, तंजहा—माउगापयाइं १ एगट्ठिअपयाइं २ अट्ठ(ट्ठा)पयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूअं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूअ-पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ सेतं मणुस्ससेणिआपरिकम्मे ॥ २ ॥ से किं तं पुट्ठसेणिआपरिकम्मे ? पुट्ठसेणिआपरिकम्मे एक्कारसविहे पन्नत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूअं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूअ-पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११ से तं पुट्ठसेणिआपरिकम्मे ॥ ३ ॥ से किं तं ओगाढसेणिआपरिकम्मे ? ओगाढसेणिआपरिकम्मे एक्कारसविहे पन्नत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूअ-पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११ से तं ओगाढसेणिआपरिकम्मे ॥ ४ ॥ से किं तं उपसंपज्जणसेणिआपरिकम्मे ? उपसंपज्जणसेणिआपरिकम्मे एक्कारसविहे पन्नत्ते तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूअं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूअ-पडिग्गहो ८ संसारपरिग्गहो ९ नंदावत्तं १० उपसंपज्जणावत्तं ११ से तं उपसंपज्जणसेणिआपरिकम्मे ॥ ५ ॥ से किं तं विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे ? विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे एक्कारसविहे पन्नत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूअं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूअ-पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११ से तं विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे ॥ ६ ॥ से किं तं चुयाचुयसेणिआपरिकम्मे ? चुयाचुयसेणिआपरिकम्मे एक्कारसविहे पन्नत्ते,

तं जहा–पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूअं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूअ-पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० चुयाचुयवत्तं ११ से तं चुयाचुयसेणिआपरिकम्मे ॥ ७ ॥ छ चउक्कनइआइं सत्ततेरासियाइं । से तं परिकम्मे ॥ १॥ सू० ४४ ॥ से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं बावीसं पन्नत्ताइं, तंजहा–उज्जुसुयं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगिअं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासा(सामा)णं ७ संजूहं ८ संभिन्नं ९ आहव्वायं १० सोवत्थिआवत्तं ११ नंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ विआवत्तं १५ एवंभूअं १६ दुयावत्तं १७ वत्तमाणप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पणासं २१ दुप्पडिग्गहं २२, १ । इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं छिन्नच्छेअनइआणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेअनइआणि आजीविअसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि तेरासिअसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइआणि ससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतीति मक्खायं २। से तं सुत्ताइं ३ ॥ २ ॥ सू० ४५ ॥

से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए चउद्दसविहे पन्नत्ते, तंजहा–उप्पायपुव्वं १ अग्गाणीयं २ वीरियं ३ अत्थिनत्थिप्पवायं ४ नाणप्पवायं ५ सच्चप्पवायं ६ आयप्पवायं ७ कम्मप्पवायं ८ पच्चक्खाणप्पवायं ९ विज्जाणुप्पवायं १० अवंझं ११ पाणाऊ १२ किरियाविसालं १३ लोगबिंदुसारं १४ । उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू चत्तारि चूलिआवत्थू पन्नत्ता १ । अग्गाणीयपुव्वस्स णं चउद्दसवत्थू दुवालस चूलिआवत्थू पन्नत्ता २ । वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठचूलिआवत्थू पन्नत्ता ३ । अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारसवत्थू दस चूलिआवत्थू पन्नत्ता ४ । नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस्स वत्थू पन्नत्ता ५ । सच्चप्पवायपुव्वस्स णं

दोन्नि वत्थू पन्नत्ता ६ । आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पन्नत्ता ७ । कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पन्नत्ता ८ । पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पन्नत्ता ९ । विज्जाणुप्पवायस्स णं पन्नरस वत्थू पन्नत्ता १० । अवंज्झपुव्वस्स णं बारस वत्थू पन्नत्ता ११ । पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पन्नत्ता १२ । किरियाविसालपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पन्नत्ता १३ । लोगबिंदुसारपुव्वस्स णं पणवीसं वत्थू पन्नत्ता १४ । 'दस चोदस अट्ठ अट्ठारसेव बारस दुवे अ वत्थूणि । सोलस तीसा वीसा पन्नरस अणुप्पवायंमि ॥ १ ॥ बारस इक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि । तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पन्नवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि । आइल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिआ नत्थि ॥ ३ ॥' से तं पुव्वगए १५ ॥ ३ ॥ सू० ४६ ॥ से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—मूलपढमाणुओगे अ गंडीआणुओगे अ १ । से किं तं मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलोगगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाणि अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि अ, सीसा गणा गणहरा अज्जा पवत्तिणीओ य, संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिण-मणपज्जव-ओहि नाणी-सम्मत्तसुअनाणिणो अ वाई अ अणुत्तरगई अ उत्तरवेउव्विणो अ मुणिणो जत्तिआ, जत्तिआ सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं जहा कालं पाओवगओ, जे जहिं जत्तिआइं भत्ताइं छेइत्ता अंतगडे मुणिवरुत्तमे तिमिरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते । एमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिआ । से तं मूलपढमाणुओगे २ । से किं तं गंडिआणुओगे ? गंडिआणुओगे कुलगरगंडिआओ, तित्थयरगंडिआओ, चक्कवट्टिगंडिआओ, दसारगंडिआओ, बलदेवगंडिआओ, वासुदेवगंडिआओ, गणधरगंडिआओ, भद्दबाहुगंडिआओ,

तवोकम्मगंडिआओ, हरिवंसगंडिआओ, उस्सप्पिणीगंडिआओ, ओसप्पिणीगंडिआओ, चित्तंतरगंडिआओ, अमरनरतिरिअ-निरय-गइगमण-विविह-परियट्टणेसु एवमाईआओ गंडिआओ आघविज्जंति पन्नविज्जंति, से तं गंडिआणुओगे ३ । से तं अणुओगे ४ ॥ ४ ॥ सू० ४७ ॥ से किं तं चूलिआओ ? चूलिआओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलिआइं, से तं चूलिआओ ॥ ५ ॥ सू० ४८ ॥ दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तिओ संखिज्जाओ पडिवत्तिओ संखिज्जाओ संगहणीओ १ । से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुअक्खंधे, चउद्दस पुव्वाइं, संखिज्जा वत्थू, संखिज्जा चूलवत्थू, संखिज्जा पाहुडा, संखिज्जा पाहुडपाहुडा, संखिज्जाओ पाहुडिआओ, संखिज्जाओ पाहुडपाहुडिआओ, संखिज्जाइं पयसहस्साइं, पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कडनिबद्ध-निकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति २ । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया से एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ ३ । से तं दिट्ठिवाए ४ ॥ १२ ॥ सू० ४९ ॥ इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पन्नत्ता १ । भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणे चेव । जीवाजीवा भविअमभविआ सिद्धा असिद्धा य ॥ १ ॥ इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरिअट्टिसु २ । इच्चेइय दुवालसंगं गणिपिडगं पडुपन्नकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरिअट्टंति ३ । इच्चेइयं

दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरिअट्टिस्संति ४। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइंसु ५। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुपन्नकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति ६। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्संति ७। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ, धुवे निअए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे ८। से जहा नामए पंचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि (न भवइ) न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ, धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ, धुवे निअए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे ९। से समासओ चउव्विहं पन्नतं तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुअनाणी उवउत्ते सव्व दव्वाइं जाणइ (ण) पासइ, खित्तओ णं सुअनाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ (ण) पासइ, कालओ णं सुअनाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ (ण) पासइ, भावओ णं सुअनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ (ण) पासइ १०॥ सू० ५०॥ अक्खरसन्नी सम्मं साइअं खलु सपज्जवसिअं च। गमिअं अंगपविट्ठं सत्तवि एए सपडिवक्खा॥ १॥ आगम सत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं। बिंति सुअनाण लंभं तं पुव्व-विसारया धीरा॥ २॥ सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ परोइ (सुणेइ) ३ गिण्हइ अ ४ ईहए ५। याऽवि तत्तो अपोहए वा ६। धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८॥ ३॥ मूअं हुँकारं वा बाढक्कार पडिपुच्छ-

विमंसा। तत्तो पसंगपारायणं च परिनिट्ठ सत्तमाए ॥ ४ ॥ सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्ति मीसिओ भणिओ। तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगे ॥ ५ ॥ से त्तं अंगपविट्ठं, से त्तं सुअनाणं, से त्तं परोक्खनाणं, से त्तं नंदी ॥ सू० ५१ ॥ नंदी सम्मत्ता।

॥ इति श्री नन्दिसूत्रं समाप्तम् ॥

(ग्रन्थाग्रं ७००)

—:०:—

॥ अर्हम् ॥

श्रीमद्गणधरप्रवर-गौतमस्वामि-वाचनानुगतम् ।

॥ श्रीमदनुयोगद्वार-सूत्रम् ॥

—:०:—

नाणं पंचविहं पराणत्तं, तंजहा—आभिणिबोहियनाणं सुयनाणं ओहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं ॥ सूत्रं १ ॥ तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं णो उद्दिसंति (उद्दिसिज्जंति) णो समुद्दिसंति (समुद्दिसिज्जंति) णो अणुण्णविज्जंति, सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ॥ सू० २ ॥ जइ सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ?, किं अंगबाहिरस्स (अणंगपविट्ठस्स) उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ?, अंगपविट्ठस्सवि उद्देसो जाव पवत्तइ, अंगबाहिरस्सवि (अणंगपविट्ठस्सवि) उद्देसो जाव पवत्तइ, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगबाहिरस्स (अणंगपविट्ठस्स) अणुओगो ॥ सू० ३ ॥ जइ अंगबाहिरस्स (अणंगपविट्ठस्स) उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, किं कालिअस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ? उक्कालिअस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ?, कालिअस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, उक्कालिअस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च उक्कालिअस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ॥ सू० ४ ॥ जइ उक्कालिअस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, किं आवस्सगस्स

उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ? आवस्सगवतिरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ?, आवस्सगस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, आवस्सगवतिरित्तस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च आवस्सगस्स अणुओगो ॥ सू० ५ ॥ जइ आवस्सगस्स अणुओगो आवस्सयं किं अंगं अंगाइं, सुअखंधो सुअखंधा, अज्झयणं अज्झयणाइं, उद्देसो उद्देसा ?, आवस्सयण्णं नो अंगं नो अंगाइं, सुअखंधो नो सुअखंधा, नो अज्झयणं अज्झयणाइं, नो उद्देसो नो उद्देसा ॥ सू० ६ ॥ तम्हा आवस्सयं निक्खिविस्सामि, सुअं निक्खिविस्सामि, खंधं निक्खिविस्सामि, अज्झयणं निक्खिविस्सामि ॥ सू० ७ ॥ जत्थ य जं(जयं) जाणेज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं । जत्थवि अ न जाणेज्जा चउक्कगं निक्खिवे तत्थ ॥ १ ॥

से किं तं आवस्सयं ? आवस्सयं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—नामावस्सयं ठवणावस्सयं दव्वावस्सयं भावावस्सयं ॥ सू० ८ ॥ से किं तं नामावस्सयं ?, २ जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सए(य)त्ति नामं कज्जइ, से त्तं (से तं) नामावस्सयं ॥ सू० ९ ॥ से किं तं ठवणावस्सयं ?, २ जण्णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंथिमे वा (पोत्थकम्मे वा पुत्त (पत्त)कम्मे वा लेप्पकम्मे वा दंतकम्मे वा सेलकम्मे वा गंथिकम्मे वा) वेढिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगा वा सब्भावठवणाए वा असब्भावठवणाए वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सयं ॥ सू० १० ॥ नामट्ठवणाणं को पइविसेसो ?, णामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा आवकहिआ वा ॥ सू० ११ ॥ से किं तं दव्वावस्सयं ?, २ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ ॥ सू० १२ ॥ से किं

तं आगमओ दव्वावस्सयं ?, २ जस्स णं आवस्सएत्ति पदं सिक्खितं ठितं जितं मितं परिजितं नामसमं घोससमं अहीणक्खरं अणच्चक्खरं अव्वाइद्धक्खरं (अव्वाइद्धं) अक्खलिअं अमिलिअं अवच्चामेलियं पडिपुराणं पडिपुराणघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्कं गुरुवायणोवगयं, से णं तत्थ वायणाए पुच्छणाए परिअट्टणाए धम्मकहाए नो अणुप्पेहाए, कम्हा ?, अणुवओगो दव्व मितिकट्टु ॥ सू० १३ ॥ नेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दव्वावस्सयं, दोणि अणुवउत्ता आगमओ दोणि दव्वावस्सयाइं, तिणि अणुवउत्ता आगमओ तिणि दव्वावस्सयाइं, एवं जावइआ अणुवउत्ता आगमओ तावइआइं दव्वावस्सयाइं, एवमेव ववहारस्सवि, संगहस्स णं एगो वा अणेगा वा अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा आगमओ दव्वावस्सयं दव्वावस्सयाणि वा, से एगे दव्वावस्सए, उज्जुसुअस्स एगो अणुवउत्तो आगमतो एगं दव्वावस्सयं, पुहुत्तं नेच्छइ, तिण्हं सद्दनयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थु, कम्हा ?, जइ जाणए अणुवउत्ते न भवति, जइ अणुवउत्ते जाणए ण भवति, तम्हा णत्थि आगमओ दव्वावस्सयं । से तं आगमओ दव्वावस्सयं ॥ सू० १४ ॥ से किं तं नोआगमओ दव्वावस्सयं ?, २ तिविहं पराणत्तं, तंजहा—जाणयसरीरदव्वावस्सयं भविअसरीर-दव्वावस्सयं जाणयसरीर-भविअसरीरवतिरित्तं दव्वावस्सयं॥ सू० १५ ॥

से किं तं जाणयसरीरदव्वावस्सयं ?, २ आवस्सएत्ति पयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगयचुतचावितचत्तदेहं जीवविप्पजढं सिज्जागयं वा संथारगयं वा निसीहिआगयं वा सिद्धसिलातलगयं वा पासित्ता णं कोई भणेज्जा—अहो ! णं इमेणं सरीरसमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं आवस्सएत्तिपयं आघवियं पराणवियं परूवियं दंसियं निदंसियं उवदंसियं, जहा को दिट्ठंतो ? अयं महुकुंभे आसी अयं घयकुंभे आसी, सेतं जाणयसरीरदव्वावस्सयं ॥ सू० १६ ॥ से किं तं भविअसरीरदव्वा-

वस्सयं ?, २ जे जीवे जोणिजम्मणणिक्खंते इमेणं चेव सरीरसमुस्सएणं आत्त(दत्त)एणं जिणोवदिट्ठेणं भावेणं आवस्सएत्ति पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ, जहा को दिट्ठंतो ? अयं महुकुंभे भविस्सइ अयं घयकुंभे भविस्सइ, से त्तं भविअसरीरदव्वावस्सयं ॥ सू० १७ ॥ से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवतिरित्तं दव्वावस्सयं ?, २ तिविहं पण्णत्तं, तंजहा—लोइअं कुप्पावयणियं लोउत्तरिअं ॥ सू० १८ ॥ से किं तं लोइयं दव्वावस्सयं ?, २ जे इमे राईसर-तलवर-माडंबिअ-कोडुंबिअ-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितिओ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए सुविमलाए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलिअंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-पगास-किंसुअ-सुअमुह गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-नलिणिसंडबोहए उट्ठिअंमि सूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेअसा जलंते मुहधोअण-दंतपक्खालण-तेलफणिह-सिद्धत्थय-हरिआलिअद्दाग-धूवपुप्फ-मल्लगंध-तंबोलवत्थाइआइं दव्वावस्सयाइं करेंति, ततो पच्छा रायकुलं वा देवकुलं वा आरामं वा उज्जाणं वा सभं वा पवं वा गच्छन्ति, से तं लोइयं दव्वावस्सयं ॥ सू० १९ ॥ से किं तं कुप्पावयणिअं दव्वावस्सयं ?, २ जे इमे चरग-चीरिग-चम्मखंडिअ-भिक्खोंड-पंडुरंग-गोअम-गोव्वतिअ-गिहिधम्म-धम्मचिंतग-अविरुद्धविरुद्ध-वुड्ढसावगप्पभितिओ पासंडत्था कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेअसा जलंते इंदस्स वा खंदस्स वा रुद्दस्स वा सिवस्स वा वेसमणस्स वा देवस्स वा नागस्स वा जक्खस्स वा भूअस्स वा मुगुंदस्स वा अज्जाए वा दुग्गाए वा कोट्टकिरियाए वा उवलेवण-संमज्जण-आवरिसण-पुप्फधूव-गंधमल्लाइआइं-(मल्ल-नमोकारमाइयाइं) दव्वावस्सयाइं करेंति, से तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं ॥ सू० २० ॥ से किं तं लोगुत्तरिअं दव्वावस्सयं ?, २ जे इमे समणगुणमुक्कजोगी छक्कायनिरणुकंपा हया इव उद्दामा गया इव निरंकुसा घट्ठा मट्ठा तुप्पोट्ठा पंडुरपडपाउरणा जिणाणमणाणाए सच्छंदं विहरिऊणं

उभओकालं आवस्सयस्स उवट्ठंति, से तं लोगुत्तरिअं दव्वावस्सयं, से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वावस्सयं, से तं नोआगमतो दव्वावस्सयं, से तं दव्वावसयं ॥ सू० २१ ॥ से किं तं भावावस्सयं ?, २ दुविहं पराणत्तं, तंजहा—आगमतो अ नोआगमतो अ ॥ सू० २२ ॥ से किं तं आगमतो भावावस्सयं ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमतो भावावस्सयं ॥ सू० २३ ॥ से किं तं नोआगमतो भावावस्सयं ?, २ तिविहं पराणत्तं, तंजहा—लोइयं कुप्पावयणियं लोगुत्तरिअं ॥ सू० २४ ॥ से किं तं लोइयं भावावसयं ?, २ पुव्वराहे भारहं अवरराहे रामायणं, से तं लोइयं भावावस्सयं ॥ सू० २५ ॥ से किं तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं ?, २ जे इमे चरगचीरिग जाव पासंडत्था इज्जंजलि-होम-जपोन्दुरुक्क-नमोक्कारमाइआइं भावावस्सयाइं करेंति, से तं कुप्पावयणिअं भावावस्सयं ॥ सू० २६ ॥ से किं तं लोगुत्तरिअं भावावस्सयं ?, २ जराणं इमे समणो वा समणी वा सावओ वा साविआ वा तच्चिते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अराणत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे (एगमणे अविमणे जिणवयण-धम्मवागरत्तमणे) उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नोआगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं ॥ सू० २७ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिआ णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेज्जा भवंति, तंजहा—आवस्सयं १ अवस्सकरणिज्जं २ धुवनिग्गहो ३ विसोही ४ अ । अज्झयणछक्कवग्गो ५ नाओ ६ आराहणा ७ मग्गो ८ ॥ २ ॥ समणेणं सावएण य अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा । अंतो अहोनिसस्स य तम्हा आवस्सयं नाम ॥ ३ ॥ से तं आवस्सयं ॥ सू० २८ ॥ से किं तं सुतं ?, २ चउव्विहं पराणत्तं, तंजहा—नामसुअं ठवणसुअं दव्वसुअं भावसुअं ॥ सू० २९ ॥ से किं तं नामसुअं ?, २ जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स

वा तदुभयाण वा सुएत्ति नामं कज्जइ, से तं नामसुयं ॥ सू० ३० ॥ से किं तं ठवणासुयं ?, २ जं णं कट्ठकम्मे वा जाव ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणासुयं । नामठवणाणं(ओ) को पइविसेसो ?, नाम आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होजा आवकहिया वा ॥ सू० ३१ ॥ से किं तं दव्वसुयं ?, २ दुविहं पराणत्तं, तंजहा–आगमतो अ नोआगमतो अ ॥ सू० ३२ ॥ से किं तं आगमतो दुव्वसुयं ?, २ जस्स णं सुएत्ति पयं सिक्खियं ठियं जियं जाव णो अणुप्पेहाए, कम्हा ?, अणुवओगो दव्वमितिकट्टु नेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमतो एगं दव्वसुयं जाव कम्हा ? जइ जाणए अणुवउत्ते न भवइ, से तं आगमतो दव्वसुयं ॥ सू० ३३ ॥ से किं तं नोआगमतो दव्वसुयं ?, २ तिविहं पराणत्तं, तंजहा–जाणयसरीरदव्वसुयं भविअसरीरदव्वसुयं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुयं ॥सू० ३४॥ से किं तं जाणयसरीरदव्वसुयं ?, २ सुअत्तिपयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगयचुअचाविअचत्तदेहं तं चेव पुव्वभणिअं भाणिअव्वं जाव से तं जाणयसरीरदव्वसुयं ॥ सू० ३५ ॥ से किं तं भविअसरीरदव्वसुयं ?, २ जे जीवे जोणीजम्मणाणिक्खंते जहा दव्वावस्सए तहा भाणिअव्वं जाव से तं भविअसरीरदव्वसुयं ॥ सू० ३६ ॥ से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुयं ?, २ पत्तयपोत्थयलिहियं, अहवा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुयं पंचविहं पराणत्तं, तंजहा–अंडयं बोंडयं कीडयं वालयं वागयं(वक्कयं), से किं तं अंडयं ? अंडयं हंसगब्भादि, सं तं अंडयं, से किं तं बोंडयं ? बोंडयं फलिहमादि (कप्पासमाइ), से तं बोंडयं, से किं तं कीडयं ? कीडयं पंचविहं पराणत्तं, तंजहा–पट्टे मलए अंसुए चीणंसुए किमिरागे, से तं कीडयं, से किं तं वालयं ? वालयं पंचविहं पराणत्तं, तंजहा–उणिणए उट्टिए मिअलोमिए कोतवे किट्टिसे, से तं वालयं, से किं तं वागयं ? वागयं सणमाइ, से तं वागयं, से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुयं,

से तं नोआगमतो दव्वसुअं, से तं दव्वसुअं ॥ सू० ३७ ॥ से किं तं भाव-सुअं?, २ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—आगमतो अ नोआगमतो अ ॥सू० ३८॥

से किं तं आगमतो भावसुअं ?, जाणए उवउत्ते, से तं आगमतो भावसुअं ॥ सू० ३९ ॥ से किं तं नोआगमतो भावसुअं ?, २ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—लोइअं लोगुत्तरिअं च ॥ सू० ४० ॥ से किं तं लोइअं नोआगमतो भावसुअं ?, २ जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छदिट्ठीहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं, तंजहा—भारहं रामायणं भीमासुरुक्कं(हंभी मासु-रुक्कं) कोडिल्लयं घोडयमुहं सगडभद्दिआउ कप्पासिअं णागसुहुमं कणग-सत्तरी वेसियं वइसेसियं बुद्धसासणं काविलं लोगायतं सट्ठितंतं माढर-पुराण-वागरणनाडगाइ, अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारि वेआ संगोवंगा, से तं लोइयं नोआगमतो भावसुअं ॥ सू० ४१ ॥ से किं तं लोउत्तरिअं नोआगमतो भावसुअं ?, २ जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णणाण-दंसणधरेहिं तीयपच्चुप्पण्ण-मणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं तिलुक्कवहितमहितपूइएहिं अप्पडिहय-वरणाणदंसणधरेहिं पणीअं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो सूअगडो ठाणं समवाओ विवाहपण्णत्ती नायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइअदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुअं दिट्ठीवाओ अ, से तं लोउत्तरियं नोआगमतो भावसुअं, से तं नोआगमतो भावसुअं, से तं भावसुअं ॥ सू० ४२ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिआ णाणावोसा णाणावंजणा नामधेज्जा भवंति, तंजहा—सुअसुत्तगं-थसिद्धंत-सासणे(पवयणे) आणवयण उवएसे । पन्नवण आगमेऽवि अ एगट्ठा पज्जवा सुत्ते ॥४॥ से तं सुअं ॥ सू० ४३ ॥ से किं तं खंधे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—नामखंधे ठवणाखंधे दव्वखंधे भावखंधे ॥सू० ४४॥ नामट्ठव-णाओ(नामठवणाओ गयाओ) पुव्वभणिआणुक्कमेण भाणिअव्वाओ, (से किं तं नाम-खंधे?, २ जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जाव खंधेति नामं कज्जति,

से तं नामखंधे। से किं तं ठवणाखंधे ? २ जण्णं कट्ठकम्मे वा जाव खंधेइ ठवणा ठविज्जति, से तं ठवणाखंधे। णामठवणाणं को पइविसेसो ? नाम आवकहियं, ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा आवकहिया वा) ॥ सू० ४५ ॥ से किं तं दव्वखंधे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–आगमतो अ नोआगमतो अ, से किं तं आगमओ दव्वखंधे ?, २ जस्स णं खंधेत्ति पयं सिक्खियं, सेसं जहा दव्वावस्सए तहा भाणिअव्वं, नवरं खंधाभिलावो जाव से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वखंधे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए ॥ सू० ४६ ॥ से किं तं सचित्ते दव्वखंधे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–हयखंधे गयखंधे किन्नरखंधे किंपुरिसखंधे महोरगखंधे गंधव्वखंधे उसभखंधे, से तं सचित्ते दव्वखंधे ॥ सू० ४७ ॥ से किं तं अचित्ते दव्वखंधे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–दुपएसिए तिपएसिए जाव दसपएसिए संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए, से तं अचित्ते दव्वखंधे ॥ सू० ४८ ॥

से किं तं मीसए दव्वखंधे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–सेणाए अग्गिमे खंधे सेणाए मज्झिमे खंधे सेणाए पच्छिमे खंधे, से तं मीसए दव्वखंधे ॥ सू० ४९ ॥ अहवा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–कसिणखंधे अकसिणखंधे अणेगदवियखंधे ॥ सू० ५० ॥ से किं तं कसिणखंधे ?, से चेव हयक्खंधे गयक्खंधे जाव उसभखंधे, से तं कसिणखंधे ॥ सू० ५१ ॥ से किं तं अकसिणखंधे ?, २ सो चेव दुपएसियाइखंधे जाव अणंतपएसिए खंधे, से तं अकसिणखंधे ॥ सू० ५२ ॥ से किं तं अणेगदीवयखंधे ?, २ तस्स चेव देसे अवचिए तस्स चेव देसे उवचिए, से तं अणेगदविअखंधे, से तं जाणयसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वखंधे, से तं नोआगमओ दव्वखंधे, से तं दव्वखंधे ॥ सू० ५३ ॥ से किं तं भावखंधे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–आगमओ अ नोआगमओ

अ ॥ सू० ५४ ॥ से किं तं आगमओ भावखंधे ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावखंधे ॥ सू० ५५ ॥ से किं तं नोआगमओ भावखंधे ?, २ एएसिं चेव सामाइअमाइयाणं छण्हं अज्झयणाणं समुदय-समिइ-समागमेणं निप्पन्ने आवस्सयसुअखंधे भावखंधेत्ति लब्भइ, से तं नोआगमओ भावखंधे, से तं भावखंधे ॥ सू० ५६ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा नामधेज्जा भवंति, तंजहा—गण काए अ निकाए खंधे वग्गे तहेव रासी अ। पुंजे पिंडे निगरे संघाए आउल समूहे ॥ ५ ॥ (भावखंधस्स पज्जाया) से तं खंधे ॥ सू० ५७ ॥ आवस्सगस्स णं इमे अत्थाहिगारा भवंति, तंजहा—सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ती। खलिअस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥ ६ ॥ ॥ सू० ५८ ॥ आवस्सयस्स एसो पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं। एत्तो एक्केक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ ७ ॥ तंजहा—सामाइअं चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणं। तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं, तस्स णं इमे चत्तारि अणुओगदारा भवंति, तंजहा—उवक्कमे १ निक्खेवे २ अणुगमे ३ नए ४ ॥ सू० ५९ ॥ से किं तं उवक्कमे ?, २ छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—णामोवक्कमे ठवणोवक्कमे दव्वोवक्कमे खेत्तोवक्कमे कालोवक्कमे भावोवक्कमे, नामठवणाओ गयाओ, से किं तं दव्वोवक्कमे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ, जाव जाणगसरीरभविअसरीरवइरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—सचित्ते अचित्ते मीसए ॥ सू० ६० ॥ से किं तं सचित्ते दव्वोवक्कमे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—दुपए चउप्पए अपए, एक्किक्के पुण दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—परिक्कमे अ वत्थुविणासे अ ॥ सू० ६१ ॥ से किं तं दुपए उवक्कमे ?, २ नडाणं नट्टाणं जल्लाणं मल्लाणं मुट्ठियाणं वेलंबगाणं कहगाणं पवगाणं लासगाणं आइक्खगाणं लंखाणं मंखाणं तूणइल्लाणं तुंबवीणियाणं

कावो(कावडि)(का)कोयाणं, मागहाणं, से तं दुपए उवक्कमे ॥ सू० ६२ ॥ से किं तं चउप्पए उवक्कमे ?, २ चउप्पयाणं आसाणं हत्थीणं इच्चाइ, से तं चउप्पए उवक्कमे ॥ सू० ६३ ॥ से किं तं अपए उवक्कमे ?, २ अपयाणं अंबाणं अंबाडगाणं इच्चाइ, से तं अपओवक्कमे, से तं सचित्तदव्वोवक्कमे ॥ सू० ६४ ॥ से किं तं अचित्तदव्वोवक्कमे ?, २ खंडाईणं गुडाईणं मच्छंडीणं, से तं अचित्तदव्वोवक्कमे ॥ सू० ६५ ॥ से किं तं मीसए दव्वोवक्कमे ?, २ से चेव थासग-आयंसगाइमंडिए आसाइ, से तं मीसए दव्वोवक्कमे, से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वोवक्कमे, (तत्थ दुपयाणं घयाइणा वराणाइकरणं, तहा कराणखंधबद्धणं च, चउप्पयाणं सिक्खागुण-विसेसकरणं, एवं अपयाणं रक्खा वद्धणं च, अंबाइ-फलाणं च कोद्दवपलालाइसु प्पयाणं, वत्थुविणासे सचित्ताणं पुरिसादीणं खग्गादीहिं विणासकरणं, अचित्ताणं गुडादीणं जलणसंजोएणं महुरत्तण-गुण-विसेस-करणं, विणासो य खारादीहिं, मीसदव्वाणं थासगाइविभूसियाणं आसादीणं सिक्खा-गुण-विसेसकरणं) से तं नोआगमओ दव्वोवक्कमे, से तं दव्वोवक्कमे ॥ सू० ६६ ॥ से किं तं खेत्तोवक्कमे ?, २ जणं हलकुलिआईहिं खेत्ताई उवक्कमिज्जंति (खेत्तस्स हलकुलिआदीहिं जोग्गयाकरणं, विणासकरणं गयबंधणादीहिं) से तं खेत्तोवक्कमे ॥ सू० ६७ ॥ से किं तं कालोवक्कमे ?, २ जं णं नालिआईहिं कालस्सोवक्कमणं(कालपरिमाणोवलक्खणं) कीरइ, से तं कालोवक्कमे ॥ सू० ६८ ॥ से किं तं भावोवक्कमे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ, से किं तं आगमओ भावोवक्कमे ? २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावोवक्कमे, से किं तं नोआगमओ भावोवक्कमे ? २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—पसत्थे अ अपसत्थे अ, तत्थ से किं तं अपसत्थे भावोवक्कमे ? २ डोडिणि-गणिआ-अमच्चाईणं, से तं अपसत्थे भावोवक्कमे, से किं तं पसत्थे भावोवक्कमे ? २ गुरुमाईणं,

से तं पसत्थे भावोवक्कमे, से तं नोआगमओ भावोवक्कमे, से तं भावोवक्कमे, से तं उवक्कमे ॥ सू० ६९ ॥ अहवा उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—आणुपुव्वी १ नामं २ पमाणं ३ वत्तव्वया ४ अत्थाहिगारे ५ समोआरे ६ ॥ सू० ७० ॥ से किं तं आणुपुव्वी ?, २ दसविहा पण्णत्ता, तंजहा—नामाणुपुव्वी १ ठवणाणुपुव्वी २ दव्वाणुपुव्वी ३ खेत्ताणुपुव्वी ४ कालाणुपुव्वी ५ उक्कित्तणाणुपुव्वी ६ गणणाणुपुव्वी ७ संठाणाणुपुव्वी ८ सामाआरीआणुपुव्वी ९ भावाणुपुव्वी १० ॥ सू० ७१ ॥ नामठवणाओ गयाओ, से किं तं दव्वाणुपुव्वी ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आगमओ अ नोआगमओ अ । से किं तं आगमओ दव्वाणुपुव्वी ?, २ जस्स णं आणुपुव्वित्ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं जाव नो अणुप्पेहाए, कम्हा ?, अणुवओगो दव्वमितिकट्टु, णोगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमओ एगा दव्वाणुपुव्वी जाव कम्हा ? जइ जाणए अणुवउत्ते न भवइ, से तं आगमओ दव्वाणुपुव्वी १ । से किं तं नोआगमओ दव्वाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—जाणयसरीर-दव्वाणुपुव्वी भविअसरीरदव्वाणुपुव्वी जाणयसरीरभविअसरीरवइरित्ता-दव्वाणुपुव्वी । से किं तं जाणयसरीरदव्वाणुपुव्वी ? २ आणुपुव्वी-पयत्था-हिगार-जाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविय(चइय)चत्तदेहं, सेसं जहा दव्वावस्सए तहा भाणिअव्वं, जाव से तं जाणयसरीरदव्वाणुपुव्वी २ । से किं तं भविअसरीरदव्वाणुपुव्वी ?, २ जे जीवे जोणीजम्मणनिक्खंते सेसं जहा दव्वावस्सए जाव से तं भविअसरीरदव्वाणुव्वी ३ । से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता-दव्वाणुपुव्वी ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—उवणिहिआ य अणोवणिहिआ य, तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा, तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ सा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—नेगमववहाराणं संगहस्स य ४ ॥ सू० ७२ ॥ से किं तं नेगमववहाराणं

अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ?, २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया १ भंगसमुक्कित्तणया २ भंगोवदंसणया ३ समोआरे ४ अणुगमे ५ ॥ सू० ७३ ॥ से किं तं नेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिपएसिए आणुपुव्वी चउप्पएसिए आणुपुव्वी जाव दसपएसिए आणुपुव्वी संखेज्जपएसिए आणुपुव्वी असंखिज्जपएसिए आणुपुव्वी अणंतपएसिए आणुपुव्वी, परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी, दुपएसिए अवत्तव्वए, तिपएसिआ आणुपुव्वीओ जाव अणंतपएसिआओ आणुपुव्वीओ, परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ, दुपएसिआइं अवत्तव्वयाइं, से तं नेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ॥ सू० ७४ ॥ एआए णं नेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणाए किं पओअणं ?, एआए णं नेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणाए भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ॥ सू० ७५ ॥

से किं तं नेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?, २ अत्थि आणुपुव्वी १ अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३ अत्थि आणुपुव्वीओ ४ अत्थि अणाणुपुव्वीओ ५ अत्थि अवत्तव्वयाइं ६, १ । अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ १ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ २ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ ३ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ ४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ५ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च ६ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ७ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च ८ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ९ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च १० अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ११ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च १२, २ । अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ १ अहवा अत्थि आणुपुव्वा अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च २ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ३ अहवा

अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च ४ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ५ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च ६ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ७ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च ८ एए अड भंगा ३। एवं सव्वेऽवि छव्वीसं भंगा। से तं नेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ४ ॥ सू० ७६ ॥ एआए णं नेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ? एआए णं नेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए भंगोवदंसणया कीरइ ॥ सू० ७७ ॥

से किं तं नेगमववहाराणं भंगोवदंसणया ?, २ तिपएसिए आणुपुव्वी १ परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी २ दुपएसिए अवत्तव्वए ३, १। अहवा तिपएसिया आणुपुव्वीओ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ दुपएसिया अवत्तव्वयाइं ३, २। अहवा तिपएसिए अ परमाणुपुग्गले अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ ४ चउभंगो, ३। अहवा तिपएसिए य दुपएसिए अ आणुवव्वी अ अवत्तव्वए य चउभंगो, ४। अहवा परमाणुपोग्गले य दुपएसिए य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य चउभंगो १२, ५। अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गले अ दुपएसिए अ अणाणुपुव्वी अ आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ १ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गले अ दुपएसिआ य आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च २ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपुग्गला अ दुपएसिए य आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ३ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गला य दुपएसिया अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च ४ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गले अ दुपएसिए य आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ५ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गले अ दुपएसिआ य आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं च ६ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गला य दुपएसिए अ आणुपुव्वीओ अ

अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य ७ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गला अ दुपएसिआ य आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं च ८, ६ । एवं छव्वीसभंगो, से तं नेगमववहाराणं भंगोवदंसणया ७ ॥ सू० ७८ ॥

से किं तं समोआरे ?, २ नेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?, किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?, नेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति १ । नेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?, किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?, नो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति, अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति, नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति २ । नेगमववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं कहिं समोअरंति ?, किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ? नो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ३ । से तं समोआरे ४ ॥ सू० ७९ ॥ से किं तं अणुगमे ?, २ नवविहे पण्णत्ते, तंजहा— संतपयपरूवणया १ दव्वपमाणं च २ खित्त ३ फुसणा य ४ । कालो य ५ अंतरं ६ भाग ७ भाव ८ अप्पाबहुं चेव ॥ ८ ॥ सू० ८० ॥ नेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि नत्थि ?, णियमा अत्थि, नेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?, णियमा अत्थि, नेगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?, नियमा अत्थि ॥ सू० ८१ ॥ नेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखिज्जाइं असंखिज्जाइं अणंताइं ?, नो संखिज्जाइं नो असंखिज्जाइं अणंताइं, एवं अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वगदव्वाइं च अणंताइं भाणिअव्वाइं ॥ सू० ८२ ॥ नेगमववहाराणं

आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा संखेज्जेसु भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा सव्वलोए होज्जा ?, एगं दव्वं पडुच्च संखेज्जइभागे वा होज्जा असंखेज्जइभागे वा होज्जा संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा असंखिज्जेसु भागेसु वा होज्जा सव्वलोए वा होज्जा, णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा १ । नेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं किं लोअस्स संखिज्जइभागे होज्जा जाव सव्वलोए वा होज्जा ?, एगं दव्वं पडुच्च नो संखेज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो सव्वलोए होज्जा, णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं अवत्तव्वगदव्वाइं भाणिअव्वाइं २ ॥ सू० ८३ ॥ नेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति असंखेज्जइभागं फुसंति संखेज्जे भागे फुसंति असंखेज्जे भागे फुसंति सव्वलोगं फुसति ?, एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जइभागं वा फुसंति जाव सव्वलोगं वा फुसंति, णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोगं फुसंति १ । णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं लोअस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति जाव सव्वलोगं फुसंति ?, एगं दव्वं पडुच्च नो संखिज्जइभागं फुसंति असंखिज्जइभागं फुसंति नो संखिज्जे भागे फुसंति नो असंखिज्जे भागे फुसंति नो सव्वलोअं फुसंति, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोअं फुसंति, एवं अवत्तव्वगदव्वाइं भाणिअव्वाइं २ (एवं फुसणावि णायव्वा) ॥ सू० ८४ ॥

णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं होंति ?, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा, अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वगदव्वाइं च एवं चेव भाणिअव्वाइं ॥ सू० ८५ ॥ णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?, एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं १ । णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं

अन्तरं कालओ केवच्चिरं होइ ?, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं २ । णोगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ३ ॥ सू० ८६ ॥ णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखिज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा संखेज्जेसु भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?, नो संखिज्जइभागे होज्जा नो असंखिज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नियमा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा १ । णोगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखिज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा संखेज्जेसु भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?, नो संखेज्जइभागे होज्जा नो असंखेज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा २ । एवं अवत्तव्वगदव्वाणिवि भाणिअव्वाणि ३ ॥ सू० ८७ ॥ णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कतरंमि होज्जा ? किं उदइए भावे होज्जा उवसमिए भावे होज्जा खइए भावे होज्जा खओवसमिए भावे होज्जा पारिणामिए भावे होज्जा संनिवाइए भावे होज्जा ?, णियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा, अणाणुपुव्वीदव्वाणि अवत्तव्वगदव्वाणि अ एवं चेव भाणिअव्वाणि ॥ सू० ८८ ॥ एएसिं णं भंते ! णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अवत्तव्वगदव्वाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णोगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहिआइं आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, पएसट्ठयाए णोगमववहाराणं सव्वत्थोवाइं अणाणुपुव्वीदव्वाइं अपएसट्ठयाए

अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णेगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहिआइं अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, ताइं चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं, से तं अणुगमे, से तं नेगमववहाराणं अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ॥ सू० ८९ ॥

से किं तं संगहस्स अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ?, २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया १ भंगसमुक्कित्तणया २ भंगोवदंसणया ३ समोआरे ४ अणुगमे ५ ॥ सू० ९० ॥ से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिपएसिए आणुपुव्वी चउप्पएसिए आणुपुव्वी जाव दसपएसिए आणुपुव्वी संखिज्जपएसिए आणुपुव्वी असंखिज्जपएसिए आणुपुव्वी अणंतपएसिए आणुपुव्वी परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी, दुपएसिए अवत्तव्वए, से तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ॥ सू० ९१ ॥ एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?, एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ १ । से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?, २ अत्थि आणुपुव्वी १ अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३, अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ ४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ५ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ६ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ७, एवं सत्त भंगा, से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया २ । एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओयणं ?, एयाए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए संगहस्स भंगोवदंसणया कीरइ ३ ॥ सू० ९२ ॥ से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?, २ तिपएसिया आणुपुव्वी परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी दुपएसिया अवत्तव्वए, अहवा

तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य, अहवा तिपएसिया य दुपएसिया य आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य अहवा परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, से तं संगहस्स भंगोवदंसणया ॥ सू० ९३ ॥ से किं तं संगहस्स समोयारे ?, २ संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोयरंति ?, किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरंति ? संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति नो अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरंति, एवं दोन्निवि सट्ठाणे सट्ठाणे समोयरंति, से तं समोयारे ॥ सू० ९४ ॥

से किं तं अणुगमे ?, २ अट्ठविहे पन्नत्ते, तंजहा-संतपयपरूवणया दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य । कालो य अंतरं भाग भावे अप्पाबहुं नत्थि ॥ १ ॥ संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?, नियमा अत्थि, एवं दोन्निवि १ । संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखिज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ?, नो संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं नो अणंताइं, नियमा एगो रासी, एवं दोन्निवि २ । संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा असंखेज्जइभागे होज्जा संखेज्जेसु भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा सव्वलोए होज्जा ?, नो संखेज्जइभागे होज्जा नो असंखेज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं दोन्निवि ३ । संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति असंखेज्जइभागं फुसंति संखिज्जे भागे फुसंति असंखिज्जे भागे फुसंति सव्वलोगं फुसंति ?, नो संखेज्जइभागं फुसंति जाव नियमा सव्वलोगं फुसंति, एवं दोन्निवि ४ । संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं

होंति ?, सव्वद्धा, एवं दोण्णिवि ५। संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाणं कालतो केवचिरं अंतरं होंति ?, नत्थि अंतरं, एवं दोण्णिवि ६। संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा असंखेज्जइभागे होज्जा संखेज्जेसु भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?, नो संखेज्जइभागे होज्जा नो असंखेज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा तिभागे होज्जा, एवं दोन्निवि ७। संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कयरंमि भावे होज्जा ?, नियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा, एवं दोन्निवि ८। अप्पाबहुं नत्थि। से तं अणुगमे, से तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी, से तं अणोवहिया दव्वाणुपुव्वी १॥ सू० १५॥ से किं तं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी य॥ सू० १६॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए, से तं पुव्वाणुपुव्वी १। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ अद्धासमए पोग्गलत्थिकाए जीवत्थिकाए आगासत्थिकाए अहम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए, से तं पच्छाणुपुव्वी २। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एयाए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए छगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दूरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ३॥ सू० १७॥ अहवा उवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी, से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ परमाणुपोग्गले दुपएसिए तिपएसिए जाव दसपएसिए संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए, से तं पुव्वाणुपुव्वी १। से किं तं पच्छाणुपुव्वी, २ अणंतपएसिए असंखिज्जपएसिए संखिज्जपएसिए जाव दसपएसिए जाव तिपएसिए दुपएसिए परमाणुपोग्गले, से तं पच्छाणुपुव्वी २। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए अणंतगच्छगयाए

सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ३। से तं उवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी, से तं जाणगवइरित्ता दव्वाणुपुव्वी, से तं नोआगमओ दव्वाणुपुव्वी, से तं दव्वाणुपुव्वी ४ ॥ सू० ९८ ॥ से किं तं खेत्ताणुपुव्वी ?, २ दुविहा पराणत्ता, तंजहा–उवणिहिआ य अणोवणिहिआ य ॥ सू० ९९ ॥ तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा, तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ सा दुविहा पराणत्ता, तंजहा–णेगमववहाराणं संगहस्स य ॥ सू० १०० ॥

से किं तं णेगमववहाराणं अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी ?, २ पंचविहा पराणत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया भंगसमुक्कित्तणया भंगोवदंसणया समोआरे अणुगमे १। से किं तं णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव दसपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी, एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी, दुपएसोगाढे अवत्तव्वए, तिपएसोगाढाओ आणुपुव्वीओ जाव दसपएसोगाढाओ आणुपुव्वीओ जाव असंखिज्जपएसोगाढाओ आणुपुव्वीओ एगपएसोगाढाओ अणाणुपुव्वीओ दुपएसोगाढाइं अवत्तव्वगाइं, से तं णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया २। एआए णं णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?, एयाए णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ३। से किं तं णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?, २ अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वए, एवं दव्वाणुपुव्विगमेणं खेत्ताणुपुव्वीएऽवि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा, जाव से तं णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ४। एआए णं णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?, एआए णं णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए णेगमववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जइ ५। से किं तं णेगमववहाराणं भंगोवदंसणया ?, २

तिपएसोगाढे आणुपुव्वी एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी दुपएसोगाढे अवत्तव्वए तिपएसोगाढाओ आणुपुव्वीओ एगपएसोगाढाओ अणाणुपुव्वीओ दुपएसोगाढाइं अवत्तव्वगाइं, अहवा तिपएसोगाढे अ एगपएसोगाढे अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ एवं तहा चेव दव्वाणुपुव्विगमेणं छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा जाव से तं णोगमववहाराणं भंगोवदंसणया ६। से किं तं समोआरे ?, २ णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अवत्तव्वगदव्वेहिं समोअरंति ?, आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति, एवं तिण्णिवि सट्ठाणे समोअरंतित्ति भाणिअव्वं, से तं समोआरे ७। से किं तं अणुगमे ?, २ नवविहे पण्णत्ते, तंजहा-संतपयपरूवणया जाव अप्पाबहुं चेव ॥ १० ॥ ८। णोगमववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं किं अत्थि ?, णत्थि, ? णियमा अत्थि, एवं दुण्णिवि। णोगमववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं किं संखिज्जाइं असंखिज्जाइं अणंताइं ?, नो संखिज्जाइं असंखिज्जाइं नो अणंताइं, एवं दुण्णिवि ९। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा जाव सव्वलोए होज्जा ?, एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स संखिज्जइभागे वा होज्जा असंखिज्जइभागे वा होज्जा संखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, देसूणे वा लोए होज्जा, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, णोगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं पुच्छाए एगदव्वं पडुच्च नो संखिज्जइभागे होज्जा असंखिज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा नो सव्वलोए होज्जा, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं अवत्तव्वगदव्वाणिवि भाणिअव्वाणि (अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वगदव्वाणि जहेव हेट्ठा तहेव

नेयव्वाणि) १०। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति असंखिज्जइभागं फुसंति संखेज्जे भागे फुसंति जाव सव्वलोअं फुसंति ?, एगं दव्वं पडुच्च संखिज्जइभागं वा फुसंति असंखिज्जइभागं असंखिज्जइभागे असंखेज्जे वा भागे देसूणं वा लोगं(संखेज्जे वा भागे असंखेज्जे वा भागे सव्वलोअं) फुसइ, णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वलोअं फुसंति, अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वगदव्वाइं च जहा खेत्तं नवरं फुसणा भाणियव्वा ११। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं होंति ?, एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा, एवं दोण्णि वि, १२। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?, तिण्हंपि एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं १३। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?, तिण्णिवि जहा दव्वाणुपुव्वीए १४। णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कयरंमि भावे होज्जा ? णियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा, एवं दोण्णिवि १५। एएसि णं भंते ! णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अवत्तव्वगदव्वाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुआ वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णोगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइं आणुपुव्वीदव्वाइं दवट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णोगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं अपएसट्ठयाए अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णोगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहिआइं अवत्तव्वगदव्वाइं

पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ताइं चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, से तं अणुगमे १६ । से तं णोगमववहाराणं अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी १७ ॥ सू० १०१ ॥

से किं संगहस्स अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी ?, २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया भंगसमुक्कित्तणया भंगोवदंसणया समोआरे अणुगमे १ । से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिपएसोगाढे आणुपुव्वी चउप्पएसोगाढे आणुपुव्वी जाव दसपएसोगाढे आणुपुव्वी संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी दुपएसोगाढे अवत्तव्वए, से तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया २ । एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?, एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ३ । से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?, अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वए, अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा भाणिअव्वं जाव से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ४ । एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?, एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए संगहस्स भंगोवदंसणया कज्जइ ५ । से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?, २ तिपएसोगाढे आणुपुव्वी एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी दुपएसोगाढे अवत्तव्वए अहवा तिपएसोगाढे अ एगपएसोगाढे अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ, एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीएवि भाणिअव्वं जाव से तं संगहस्स भंगोवदंसणया ६ । से किं तं समोआरे ?, २ संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कहि समोअरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति अणाणुपुव्वीदव्वेहिं अवत्तव्वगदव्वेहिं ?, तिण्णिवि सट्ठाणे समोअरंति, से तं समोआरे ७ । से किं तं अणुगमे ?, २ अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा–संतपयपरूवणया जाव अप्पाबहुं नत्थि ॥ ११ ॥ ८ । संगहस्स

आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?, नियमा अत्थि, एवं तिण्णिवि, सेसगदाराइं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीएवि भाणिअव्वाइं, जाव से तं अणुगमे ९। से तं संगहस्स अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी १०। से तं अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी ११ ॥ सू० १०२ ॥ से किं तं उवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ अहोलोए तिरिअलोए उड्ढलोए, से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ उड्ढलोए तिरिअलोए अहोलोए, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए तिगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दूरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। अहोलोअखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी ५। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुअप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमप्पभा(तमा) तमतमप्पभा(तमा), से तं पुव्वाणुपुव्वी ६। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ तमतमा जाव रयणप्पभा, से तं पच्छाणुपुव्वी ७। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए सत्तगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ८। तिरिअलोअखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी ९। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ जंबूदीवे लवणे धायइ कालोअ पुक्खरे वरुणे। खीर घय खोअ नंदी अरुणवरे कुंडले रुअगे ॥ १२ ॥ जंबुद्दीवाओ खलु निरंतरा सेसया असंखइमा। भुयगवर-कुसवरा वि य कोंचवराऽऽभरणमाईया ॥ आभरणवत्थगंधे उप्पलतिलए अ पुढवि(पउम)निहिरयणे। वासहरदहनईओ विजया वक्खारकप्पिंदा ॥ १३ ॥ कुरुमंदरआवासा कूडा नक्खत्तचंदसूरा य। देवे नागे जक्खे भूए अ सयंभुरमणे अ ॥ १४ ॥ से तं

पुव्वाणुपुव्वी १०। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ सयंभूरमणे अ भूए य जाव जंबूदीवे, से तं पच्छाणुपुव्वी ११। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी १२। उड्ढलोअखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १३। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ सोहम्मे ईसाणे सणंकुमारे माहिंदे बंभलोए लंतए महासुक्के सहस्सारे आणए पाणए आरणे अच्चुए गेवेज्जविमाणे अणुत्तरविमाणे ईसिपब्भारा, से तं पुव्वाणुपुव्वी १४। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ ईसिपब्भारा जाव सोहम्मे, से तं पच्छाणुपुव्वी १५। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए पन्नरसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी १६। अहवा उवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १७। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे जाव दसपएसोगाढे जाव संखिज्जपएसोगाढे असंखिज्जपएसोगाढे, से तं पुव्वाणुपुव्वी १८। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ असंखिज्जपएसोगाढे संखिज्जपएसोगाढे जाव एगपएसोगाढे, से तं पच्छाणुपुव्वी १९। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए असंखिज्जगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी २०। से तं उवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी २१। से तं खेत्ताणुपुव्वी २२ ॥ सू० १०३ ॥ से किं तं कालाणुपुव्वी ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—उवणिहिआ य अणोवणिहिआ य ॥ सू० १०४ ॥ तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा, तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ सा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—णेगमववहाराणं संगहस्स य ॥ सू० १०५ ॥

से किं तं णेगमववहाराणं अणोवणिहिआ कालाणुपुव्वी ?, २

पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया भंगसमुक्कित्तणया भंगोवदंसणया समोआरे अणुगमे ॥ सू० १०६ ॥ से किं तं णोगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिसमयट्ठिईए आणुपुव्वी जाव दससमयट्ठिईए आणुपुव्वी संखिज्जसमयट्ठिईए आणुपुव्वी असंखिज्जसमयट्ठिईए आणुपुव्वी एगसमयट्ठिईए अणाणुपुव्वी दुसमयट्ठिईए अवत्तव्वए, तिसमयठिईआओ आणुपुव्वीओ एगसमयट्ठिईआओ अणाणुपुव्वीओ दुसमयट्ठिईआओ अवत्तव्वगाइं, से तं णोगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणया १ । एआए णं णोगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणायाए किं पओअणं ?, एआए णं णोगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए णोगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ २ ॥ सू० १०७ ॥ से किं तं णोगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?, २ अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वए, एवं दव्वाणुपुव्वीगमेणं कालाणुपुव्वीएवि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा जाव से तं णोगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया १ । एआए णं णोगमववहाहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?, एआए णं णोगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए णोगमववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जई २ ॥सू० १०८॥ से किं तं णोगमववहाराणं भंगोवदंसणया ?, २ तिसमयट्ठिईए आणुपुव्वी एगसमयट्ठिईए अणाणुपुव्वी दुसमयट्ठिईए अवत्तव्वए, तिसमयट्ठिईआ अणाणुपुव्वीओ एगसमट्ठिईआ अणाणुपुव्वीओ दुसमयट्ठिईआ अवत्तव्वगाइं, अहवा तिसमयट्ठिईए अ एगसमयट्ठिईए अ आणुपुव्वी अणाणुपुव्वी अ १ । एवं तहा चेव दव्वाणुपुव्वीगमेणं छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा, जाव से तं णोगमववहाराणं भंगोवदंसणया २ ॥ सू० १०९ ॥ से किं तं समोआरे ? २ णोगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं ?, एवं तिण्णिवि सट्ठाणे समोअरंति इति भाणिअव्वं १ । से तं समोआरे २ ॥ सू० ११० ॥

से किं तं अणुगमे ?, २ णवविहे पण्णत्ते, तंजहा—संतपयपरूवणया जाव अप्पाबहुं चेव ॥ १५ ॥ १ । णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?, नियमा तिण्णिवि अत्थि २ । णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ?, तिण्णिवि नो संखिज्जाइं असंखेज्जाइं नो अणंताइं ३ । णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइभागे होज्जा ? असंखिज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा ? सव्वलोए वा होज्जा ?, एगं दव्वं पडुच्च संखेज्जइभागे वा होज्जा असंखेज्जइभागे वा होज्जा संखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा देसूणे वा लोए होज्जा, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा ४ । एवं अणाणुपुव्वीदव्वं, आएसंतरेण वा सव्वपुच्छासु होज्जा, एवं अवत्तव्वगदव्वाणिवि जहा खेत्ताणुपुव्वीए ५ । फुसणा कालाणुपुव्वीएवि तहा चेव भाणिअव्वा ६ । णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं होंति ?, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं तिण्णि समया उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ७ । णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं होंति ?, एगं दव्वं पडुच्च अजहन्नमणुक्कोसेणं एक्कं समयं नाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ८ । अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा, एगं दव्वं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं [एक्कं]दो समया नाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ९ । णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दो समया नाणादव्वाइं पडुच्च नत्थि अंतरं १० । णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं दो समया उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ११ । णेगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा, एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं,

णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं १२ । भागभावअप्पाबहुं चेव जहा खेत्ताणुपुव्वीए तहा भाणिअव्वाइं, जाव से तं अणुगमे १३ । से तं णोगमववहाराणं अणोवणिहिआ कालाणुपुव्वी १४ ॥ सू० १११ ॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिआ कालाणुपुव्वी ?, २ पंचविहा पराणत्ता, तंजहा–अट्ठपयपरूवणया भंगसमुक्कित्तणया भंगोवदंसणया समोआरे अणुगमे ॥ सू० ११२ ॥ से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?, २ एआइं पंचवि दाराइं जहा खेत्ताणुपुव्वीए संगहस्स तहा कालाणुपुव्वीएवि भाणिअव्वाणि, णवरं ठिइअभिलावो, जाव से तं अणुगमे । से तं संगहस्स अणोवणिहिआ कालाणुपुव्वी ॥ सू० ११३ ॥ से किं तं उवणिहिआ कालाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १ । से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ एगसमयट्ठिइए दुसमयट्ठिइए तिसमयट्ठिइए जाव दससमयट्ठिइए संखिज्जसमयट्ठिइए, असंखिज्जसमयट्ठिइए, से तं पुव्वाणुपुव्वी २ । ते किं तं पच्छाणुपुव्वी ? २ असंखिज्जसमयट्ठिइए जाव एगसमयट्ठिइए, से तं पच्छाणुपुव्वी ३ । से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए असंखिज्जगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४ । अहवा उवणिहिआ कालाणुपुव्वी तिविहा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी ५ । से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ समए आवलिआ आण पाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे उऊ अयणे संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे तुडिअंगे तुडिए अडडंगे अडडे अववंगे अववे हुहुअंगे हुहुए उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णलिणंगे णलिणे अत्थनिऊरंगे अत्थनिऊरे अउअंगे अउए नउअंगे नउए पउअंगे पउए चूलिअंगे चूलिआ सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिआ पलिओवमे सागरोवमे ओसप्पिणी उस्सप्पिणी पोग्गलपरिअट्टे अतीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा, से तं पुव्वाणुपुव्वी ६ । से किं तं

पच्छाणुपुव्वी, २ सव्वद्धा अणागतद्धा जाव समए, से तं पच्छाणुपुव्वी ७। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए अणंतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो, दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ८। से तं उवणिहिआ कालाणुपुव्वी, से कालाणुपुव्वी ९ ॥ सू० ११४ ॥ से किं तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ उसभे अजिए संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चंदप्पहे सुविहि सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे, से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ वद्धमाणे जाव उसभे, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए चउवीसगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। से तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ५ ॥ सू० ११५ ॥

से किं तं गणणाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ एगो दस सयं सहस्सं दस सहस्साइं सयसहस्सं दस सयसहस्साइं कोडी दस कोडीओ कोडीसयं दस कोडिसयाइं, से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ दस कोडिसयाइं जाव एक्को, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। से तं गणणाणुपुव्वी ५ ॥ सू० ११६ ॥ से किं तं संठाणाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ समचउरंसे निग्गोहमंडले सादी खुज्जे वामणे हुंडे, से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ हुंडे जाव

समचउरंसे, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। से तं संठाणाणुपुव्वी ५॥ सू० ११७॥ से किं तं सामायारीआणुपुव्वी ?, २ तिविहा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ इच्छामिच्छातहक्कारो आवस्सिआ य निसीहिआ। आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा॥ १६॥ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ॥ से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ उवसंपया जाव इच्छागारो, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए दसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। से तं सामायारीआणुपुव्वी ५। ॥ सू० ११८॥ से किं तं भावाणुपुव्वी ?, २ तिविहा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी १। से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?, २ उदइए उवसमिए खाइए खओवसमिए पारिणामिए संनिवाइए, से तं पुव्वाणुपुव्वी २। से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?, २ सन्निवाइए जाव उदइए, से तं पच्छाणुपुव्वी ३। से किं तं अणाणुपुव्वी ?, २ एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ४। से तं भावाणुपुव्वी, से तं आणुपुव्वी ५। आणुपुव्वित्ति पदं समत्तं॥ सू० ११९॥

से किं तं णामे ?, णामे दसविहे पराणत्ते, तंजहा–एगणामे दुणामे तिणामे चउणामे पंचणामे छणामे सत्तणामे अट्ठणामे नवणामे दसणामे॥ सू० १२०॥ से किं तं एगणामे ?, २ णामाणि जाणि काणिवि दव्वाण गुणाण पज्जवाणं च। तेसिं आगमनिहसे नामंति परूविआ सराणा॥ १७॥ से तं एगणामे॥ सू० १२१॥ से किं तं दुनामे ?, २ दुविहे

पण्णत्ते, तं जहा–एगक्खरिए अ अणेगक्खरिए अ १। से किं तं एगक्खरिए ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–ह्रीः श्रीः धीः स्त्री, से तं एगक्खरिए २। से किं तं अणेगक्खरिए ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–कन्ना वीणा लता माला, से तं अणेगक्खरिए ३। अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–जीवनामे अ अजीवनामे अ ४। से किं तं जीवणामे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–देवदत्तो जण्णदत्तो विण्हुदत्तो सोमदत्तो, से तं जीवनामे ५। से किं तं अजीवनामे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–घडो पडो कडो रहो, से तं अजीवनामे ६। अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–विसेसिए अ अविसेसिए अ ७। अविसेसिए दव्वे विसेसिए जीवदव्वे अजीवदव्वे अ, अविसेसिए जीवदव्वे विसेसिए णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे, अविसेसिए णेरइए विसेसिए रयणप्पहाए सक्करप्पहाए वालुअप्पहाए पंकप्पहाए धूमप्पहाए तमाए तमतमाए, अविसेसिए रयणप्पहापुढविणेरइए विसेसिए पज्जत्तए अ अपज्जत्तए अ ८। एवं जाव अविसेसिए तमतमापुढवीणेरइए विसेसिए पज्जत्तए अ अपज्जत्तए अ ९। अविसेसिए तिरिक्खजोणिए विसेसिए एगिंदिए बेइंदिए तेइंदिए चउरिंदिए पंचिंदिए, अविसेसिए एगिंदिए विसेसिए पुढविकाइए आउकाइए तेउकाइए वाउकाइए वणस्सइकाइए, अविसेसिए पुढविकाइए विसेसिए सुहुमपुढविकाइए अ बादरपुढविकाइए अ, अविसेसिए सुहुमपुढविकाइए विसेसिए पज्जत्तय-सुहुमपुढविकाइए अ अपज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए अ, अविसेसिए अ बादरपुढविकाइए विसेसिए पज्जत्तय-बादर-पुढविकाइए अ अपज्जत्तय-बादरपुढविकाइए अ १०। एवं आउकाइए तेउकाइए वाउकाइए वणस्सइकाइए अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तय-अपज्ज-त्तयभेदेहिं भाणिअव्वा ११। अविसेसिए बेइंदिए विसेसिए पज्जत्तयबेइंदिए अ अपज्जत्तयबेइंदिए अ, एवं तेइंदिअचउरिंदिआवि भाणिअव्वा १२। अविसेसिए पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए जलयर-पंचिंदियतिरिक्ख-

जोणिए थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए १३। अविसेसिए जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ गब्भवक्कंतिअ जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्खजोणिए अ १४। अविसेसिए संमुच्छिम-जलयर-पंचेंदियतिरिक्ख-जोणिए विसेसिए अ पज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ अपज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए १५। अविसेसिए गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए पज्जत्तय-गब्भव-क्कंतिअ-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-जलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ १६। अविसेसिए थलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्खजोणिए विसेसिए चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ परिसप्प-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ १७। अवसेसिए चउप्पय-थल-यर-पंचेंदिय-तिरिक्खजोणिए विसेसिए संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचि-दिअतिरिक्खजोणिए अ गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्ख-जोणिए अ १८। अविसेसिए संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचेंदिय-तिरिक्ख-जोणिए विसेसिए पज्जत्तय-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्ख-जोणिए अ अपज्जत्तय-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ १९। अविसेसिए गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअ तिरिक्ख-जोणिए विसेसिए पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्ख-जोणिए अ अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्ख-जोणिए अ २०। अविसेसिए परिसप्प-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ भुअपरिसप्प-थल-यर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ २१। एतेऽवि संमुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य गब्भवक्कंतिआवि पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा २२। अविसेसिए खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए संमुच्छिम-खहयर-

पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदिअतिरिक्ख-जोणिए अ २३। अविसेसिए संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणिए विसेसिए पज्जत्तय-संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए अ अपज्जत्तय-संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए २४। अविसेसिए गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए विसेसिए पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणिए अ अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदिअतिरिक्खजोणिए य २५। अविसेसिए मणुस्से विसेसिए संमुच्छिममणुस्से अ गब्भवक्कंतिअमणुस्से अ २६। अविसेसिए संमुच्छिममणुस्से विसेसिए पज्जत्त-संमुच्छिममणुस्से अ अपज्जत्त-संमुछिममणुस्से अ २७। अविसिसेए गब्भवक्कंतिअमणुस्से विसेसिए कम्मभूमिओ य अकम्मभूमिओ य अंतरदीवओ य संखिज्जवासाउय असंखिज्जवासाउय पज्जत्तापज्जत्तओ २८। अविसेसिए देवे विसेसिए भवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए अ २९। अविसेसिए भवणवासी विसेसिए असुरकुमारे नागकुमारे सुवण्णकुमारे विज्जुकुमारे अग्गिकुमारे दीवकुमारे उदधिकुमारे दिसाकुमारे वाउकुमारे थणिअकुमारे ३०। सव्वेसिंपि अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तग-अपज्जत्तगभेदा भाणिअव्वा ३१। अविसेसिए वाणमंतरे विसेसिए पिसाए भूए जक्खे रक्खसे किण्णरे किंपुरिसे महोरगे गंधव्वे ३२। एतेसिंपि अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तय-अपज्जतगभेदा भाणिअव्वा ३३। अविसेसिए जोइसिए विसेसिए चंदे सूरे गहगणे नक्खत्ते तारारूवे ३४। एतेसिंपि अविसेसिय-विसेसिय-पज्जत्तय-अपज्जत्तयभेआ भाणिअव्वा ३५। अविसेसिए वेमाणिए विसेसिए कप्पोवगे अ कप्पातीतगे अ ३६। अविसेसिए कप्पोवगे विसेसिए सोहम्मे ईसाणए सणंकुमारए माहिंदिए बंभलोए लंतयए महासुक्कए सहस्सारए आणयए पाणयए आरणए अच्चुयए ३७। एतेसिंपि अविसेसिअ-विसेसिअ-अपज्जत्तग-पज्जत्तगभेदा भाणिअव्वा ३८। अविसेसिए कप्पातीतए

विसेसिए गेवेज्जए अ अणुत्तरोववाइए अ ३९। अविसेसिए गेवेज्जए विसेसिए हेट्ठिम, मज्झिम, उवरि, अविसेसिए हेट्ठिमगेवेज्जए विसेसिए हेट्ठिम-हेट्ठिमगेवेज्जए हेट्ठिम-मज्झिमगेवेज्जए, हिट्ठिम-उवरिमगेवेज्जए ४०। अविसेसिए मज्झिमगेविज्जए विसेसिए हिट्ठिम-मज्झिमगेविज्जए मज्झिम-मज्झिमगेवेज्जए मज्झिम-उवरिमगेवेज्जए ४१। अविसेसिए उवरिमगेवेज्जए विसेसिए उवरिम-हेट्ठिमगेवेज्जए उवरिम-मज्झिमगेवेज्जए उवरिम-उवरिम-गेवेज्जए अ ४२। एतेसिंपि सव्वेसिं अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तगापज्जत्तगभेदा भाणिअव्वा ४३। अविसेसिए अणुत्तरोववाइए विसेसिए विजयए वेजयंतए जयंतए अपराजिअए सव्वट्ठसिद्धए अ ४४। एतेसिंपि सव्वेसिं अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तगापज्जत्तगभेदा भाणिअव्वा ४५। अविसेसिए अजीवदव्वे विसेसिए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए अ ४६। अविसेसिए पोग्गलत्थिकाए विसेसिए परमाणुपोग्गले दुपएसिए तिपएसिए जाव अणंतपएसिए अ ४७। से तं दुनामे ४८ ॥ सू० १२२ ॥

से किं तं तिनामे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–दव्वणामे गुणणामे पज्जवणामे अ १। से किं तं दव्वणामे ?, २ छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए अ, से तं दव्वनामे २। किं तं गुणणामे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–वण्णणामे गंधणामे रसणामे फासणामे संठाणणामे। से किं तं वण्णणामे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–कालवण्णनामे नीलवण्णनामे लोहिअवण्णनामे हालिद्दवण्णनामे सुक्किल्लवण्णणामे, से तं वण्णनामे। से किं तं गंधनामे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–सुरभिगंधनामे अ दुरभिगंधनामे अ, से तं गंधनामे। से किं तं रसनामे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–तित्तरसणामे कडुअरसणामे कसायरसणामे अंबिलरसणामे महुररस-

णामे अ, से तं रसणामे । ते किं तं फासणामे ?, २ अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा–कक्खडफासणामे मउअफासणामे गरुअफासणामे लहुअफासणामे सीतफासणामे उसिणफासणामे णिद्धफासणामे लुक्खफासणामे, से तं फासणामे । से किं तं संठाणनामे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–परिमंडलसंठाणनामे वट्टसंठाणनामे तंससंठाणनामे चउरंससंठाणनामे आयतसंठाणणामे, से तं संठाणनामे से तं गुणणामे ३ । से किं तं पज्जवणामे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा–एगगुणकालए दुगुणकालए तिगुणकालए जाव दसगुणकालए संखिज्जगुणकालए असंखिज्जगुणकालए अनंतगुणकालए, एवं नील-लोहिअ-हालिद्द-सुक्किल्लावि भाणिअव्वा । एगगुणसुरभिगंधे दुगुणसुरभिगंधे तिगुणसुरभिगंधे जाव अणंतगुणसुरभिगंधे एवं दुरभिगंधोऽवि भाणिअव्वो । एगगुणतित्ते जाव अणंतगुणतित्ते, एवं कडुअकसायअंबिलमहुरावि भाणिअव्वा । एगगुणकक्खडे जाव अणंतगुणकक्खडे, एवं मउअ-गरुअ-लहुअ-सीत-उसिण-णिद्ध-लुक्खावि भाणियव्वा, से तं पज्जवणामे ४। तं पुण णामं तिविहं इत्थी पुरिसं णपुंसगं चेव । एएसिं तिण्हंपि अ अंतंमि अ परूवणं वोच्छं ॥ १८ ॥ तत्थ पुरिसस्स अंता आईऊओ हवंति चत्तारि । ते चेव इत्थिआओ हवंति ओकारपरिहीणा ॥ १९ ॥ अंतिअ इंतिअ उंतिअ अंताउ णपुंसगस्स बोद्धव्वा । एतेसिं तिण्हंपि अ वोच्छामि निदंसणे एत्तो ॥ २० ॥ आगारंतो राया ईगारंतो गिरी अ सिहरी अ । ऊगारंतो विरहू दुमो अ अंता उ पुरिसाणं ॥ २१ ॥ आगारंता माला ईगारंता सिरी अ लच्छी अ । ऊगारंता जंबू वहू अ अंताउ इत्थीणं ॥ २२ ॥ अंकारंतं धन्नं इकारंतं नपुसगं अत्थि । उंकारंतो पीलुं महुं च अंता णपुंसाणं ॥ २३ ॥ से तं तिणामे ५ ॥ सू० १२३ ॥ से किं तं चउणामे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–आगमेणं लोवेणं पयईए विगारेणं १ । से किं तं आगमेणं ?, २ पद्मानि पयांसि कुण्डानि, से तं आगमेणं २ ।

से किं तं लोवेणं ?, २ ते अत्र तेऽत्र पटो अत्र पटोऽत्र घटो अत्र घटोऽत्र, से तं लोवेणं ३ । से किं तं पगईए ?, २ अन्नी एतौ पटू इमौ शाले एते माले इमे, से तं पगईए ४ । से किं तं विगारेणं ?, २ दण्डस्य अग्रं दण्डाग्रं सा आगता साऽऽगता दधि इदं दधीदं नदी इह नदीह मधु उदकं मधूदकं वधू ऊहः वधूहः, से तं विगारेणं ५ । से तं चउनामे ६ ॥ सू० १२४ ॥ से किं तं पंचनामे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—नामिकं नैपातिकं आख्यातिकं औपसर्गिकं मिश्रं च १ । अश्व इति नामिकम्, खल्विति नैपातिकम् धावतीत्याख्यातिकम्, परीत्यौपसर्गिकम्, संयत इति मिश्रम् १ । से तं पंचनामे ३ ॥ सू० १२५ ॥

से किं तं छण्णामे ?, २ छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—उदइए उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामिए संनिवाइए १ । से किं तं उदइए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—उदइए अ उदयनिप्फण्णे अ । से किं तं उदइए ?, २ अट्ठण्हं कम्मपयडीणं उदएणं, से तं उदइए २ । से किं तं उदय-निप्फन्ने ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—जीवोदयनिप्फन्ने अ अजीवोदय-निप्फन्ने अ ३ । से किं तं जीवोदयनिप्फन्ने ? २ अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे पुढविकाइए जाव तसकाइए कोहकसाई जाव लोहकसाई इत्थीवेदए पुरिसवेयए णपुंसगवेदए कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे मिच्छादिट्ठी ३ अविरए असण्णी अण्णाणी आहारए छउमत्थे सजोगी संसारत्थे असिद्धे, से तं जीवोदयनिप्फन्ने ४ । से किं तं अजीवोदयनिप्फन्ने ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—उरालिअं वा सरीरं उरालिअसरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं, वेउव्विअं वा सरीरं वेउव्वियसरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं, एवं आहारगं सरीरं तेअगं सरीरं कम्मगसरीरं च भाणिअव्वं, पओगपरिणामिए वण्णे गंधे रसे फासे, से तं अजीवोदयनिप्फण्णे ५ । से तं उदयनिप्फण्णे ६ । से तं

उदइए ७ । से किं तं उवसमिए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—उवसमे अ उवसमनिप्फण्णे अ ८ । से किं तं उवसमे ?, २ मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं, से तं उवसमे ९ । से किं तं उवसमनिप्फण्णे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—उवसंतकोहे जाव उवसंतलोभे उवसंतपेज्जे उवसंतदोसे उवसंतदंसणमोहणिज्जे उवसंतमोहणिज्जे उवसमिआ सम्मत्तलद्धी उवसमिआ चरित्तलद्धी उवसंतकसाय-छउमत्थवीयरागे, से तं उवसमनिप्फण्णे १० । से तं उवसमिए ११ । से किं तं खइए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—खइए अ खयनिप्फण्णे अ १२ । से किं तं खइए ?, २ अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खएणं, से तं खइए १३ । से किं तं खयनिप्फण्णे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—उप्पण्ण-णाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली खीण-आभिणिबोहिअ-णाणावरणे खीण-सुअ-णाणावरणे खीण-ओहि-णाणावरणे खीण-मणपज्जव-णाणावरणे खीण-केवल-णाणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे णाणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीण-थीणगिद्धी खीण-चक्खुदंसणावरणे खीण-अचक्खुदंसणावरणे खीण-ओहिदंसणावरणे खीण-केवलदंसणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के खीण-सायावेअणिज्जे खीण-असायावेअणिज्जे अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअणे सुभासुभ-वेअणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के खीणकोहे जाव खीणलोहे खीणपेज्जे खीणदोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के खीण-णेरइआउए खीण-तिरिक्खजोणिआउए खीण-मणुस्साउए खीण-देवाउए अणाउए निराउए खीणाउए आउकम्म-विप्पमुक्के गइजाइ-सरीरंगोवंगबंधण-संघायण संघयण-संठाण-अणेगबोंदिविंद-संघायविप्पमुक्के खीण-सुभनामे खीण-असुभणामे अणामे निरणामे खीणनामे सुभासुभ-णाम-कम्मविप्पमुक्के खीणउच्चागोए खीण-

णीआगोए अगोए निग्गोए खीणगोए उच्चणीय-गोत्तकम्मविप्पमुक्के खीण-दाणंतराए खीणलाभंतराए खीण-भोगंतराए खीण-उवभोगंतराए खीण-विरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए अंतराय-कम्मविप्पमुक्के सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे, से तं खयनिप्फणे १४। से तं खइए १५। से किं तं खओवसमिए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—खओवसमिए य खओवसमनिप्फरणे य १६। से किं तं खओवसमे ?, २ चउराहं घाइकम्माणं खओवसमेणं, तंजहा—णाणावरणिज्जस्स दंसणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतरायस्स खओवसमेणं, से तं खओवसमे १७। से किं तं खओवसमनिप्फरणे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—खओवसमिआ आभिणिबोहिअणाणलद्धी जाव खओवसमिआ मणपज्जवणाणलद्धी खओवसमिआ मइअरणाणलद्धी खओवसमिआ सुअअरणाणलद्धी खओवसमिआ विभंगणाणलद्धी खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी अचक्खुदंसणलद्धी ओहिदंसणलद्धी, एवं सम्मदंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्ममिच्छादंसणलद्धी खओवसमिआ सामाइअचरित्तलद्धी, एवं छेदोवट्ठावणलद्धी परिहारविसुद्धिअलद्धी सुहुमसंपरायचरित्तलद्धी, एवं चरित्ताचरित्तलद्धी खओवसमिआ दाणलद्धी, एवं लाभलद्धी भोगलद्धी उवभोगलद्धी खओवसमिआ वीरिअलद्धी, एवं पंडिअवीरिअलद्धी बालवीरिअलद्धी बालपंडिअवीरिअलद्धी खओवसमिआ सोइंदिअलद्धी जाव खओवसमिआ फासिंदिअलद्धी खओवसमिए आयारंगधरे, एवं सुअगडंगधरे ठाणंगधरे समवायंगधरे विवाहपण्णत्तिधरे नायाधम्मकहाधरे उवासगदसाधरे अंतगडदसाधरे अणुत्तरोववाइअदसाधरे पण्हावागरणधरे विवागसुअधरे खओवसमिए दिट्ठिवायधरे खओवसमिए णवपुव्वी जाव चउद्दसपुव्वी खओवसमिए गणी खओवसमिए वायए, से तं खओवसमनिप्फरणे १८। से तं खओवसमिए ११। से किं तं पारिणामिए ?, २

दुविहे पराणत्ते, तंजहा—साइपारिणामिए अ अणाइपारिणामिए अ २०। से किं तं साइपारिणामिए ?, २ अणेगविहे पराणत्ते तंजहा—जुराणसुरा जुराणगुलो जुराणघयं जुराणतंदुला चेव। अब्भा य अब्भरुक्खा संझा गंधव्वणगरा य ॥ २४ ॥ उक्कावाया दिसादाहा गज्जियं विज्जू णिग्घाया जूवया जक्खादित्ता धूमिआ महिआ रयुग्घाया चंदोवरागा सूरोवरागा चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचंदा पडिसूरा इंदधणू उदगमच्छा कविहसिया अमोहा वासा वासधरा गामा णगरा घरा पव्वता पायाला भवणा निरया रयणप्पहा सक्करप्पहा वालुअप्पहा पंकप्पहा धूमप्पहा तमप्पहा तमतमप्पहा सोहम्मे जाव अच्चुए गेवेज्जे अणुत्तरे ईसिप्पभारा परमाणुपोग्गले दुपएसिए जाव अणंतपएसिए, से तं साइपारिणामिए २१। से किं तं अणाइपारिणामिए ?, २ धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए लोए अलोए भवसिद्धिआ अभवसिद्धिआ, से तं अणाइपारिणामिए २२। से तं पारिणामिए २३। से किं तं सण्णिवाइए ?, २ एएसिं चेव उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिआणं भावाणं दुगसंजोएणं तियसंजोएणं चउक्कसंजोएणं पंचगसंजोएणं जे निप्फज्जइ सव्वे से सन्निवाइए नामे तत्थ णं दस दुअसंजोगा दस तिअसंजोगा पंच चउक्कसंजोगा एगे पंचकसंजोगे २४। एत्थ णं जे ते दस दुगसंजोगा ते णं इमे—अत्थि णामे उदइए उवसमनिप्फराणे १ अत्थि णामे उदइए-खाइगनिप्फराणे २ अत्थि णामे उदइए-खओवसमनिप्फराणे ३ अत्थि णामे उदइए-पारिणामिअनिप्फराणे ४ अत्थि णामे उवसमिए-खयनिप्फणे ५ अत्थि णामे उवसमिए-खओवसमनिप्फराणे ६ अत्थि णामे उवसमिए-पारिणामिअनिप्फराणे ७ अत्थि णामे खइए-खओवसमनिप्फराणे ८ अत्थि णामे खइए-पारिणामिअनिप्फणे ९ अत्थि णामे खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फराणे १०, २५। एक्कयरे से नामे

उदइए-उवसमनिप्फणे ?, उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया, एस णं से णामे उदइए-उवसमनिप्फरणे १, कयरे से णामे उदइए-खयनिप्फरणे ?, उदइएति मणुस्से खइअं सम्मत्तं, एस णं से नामे उदइए-खयनिप्फणे २, कयरे से णामे उदइए-खओवसमनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उदइए-खओवसमनिप्फरणे ३, कयरे से णामे उदइए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए-पारिणामिअनिप्फरणे ४, कयरे से णामे उवसमिए-खयनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं, एस णं से णामे उवसमिए-खयनिप्फरणे ५ कयरे से णामे उवसमिए-खओवसमनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उवसमिए-खओवसमनिप्फरणे ६, कयरे से णामे उवसममिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ७, कयरे से णामे खइए-खओवसमनिप्फरणे ?, खइयं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे खइए-खओवसमनिप्फरणे ८, कयरे से णामे खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, खइअं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ९, कयरे से णामे खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे १०, २६। तत्थ णं जे ते दस तिगसंजोगा ते णं इमे—अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-खयनिप्फरणे १ अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमनिप्फरणे २ अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ३ अत्थि णामे उदइए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ४ अत्थि णामे उदइए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ५ अत्थि णामे उदइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ६ अत्थि णामे उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ७ अत्थि णामे उवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ८

अत्थि णामे उवसमिए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ६ अत्थि णामे खइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे १० २७ । कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-खयनिप्फरणे ? उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-खयनिप्फरणे १, कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमियनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमनिप्फरणे २, कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-पारिणामिअ-निप्फरणे ? उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ३, कयरे से णामे उदइए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उदइए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ४, कयरे से णामे उदइए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से खइअं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से नामे उदइए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ५, कयरे से णामे उदइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उदइएति खइए मणुस्से खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ६, कयरे से णामे उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ७, कयरे से णामे उवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिए-खइए पारिणामिअनिप्फरणे ८, कयरे से णामे उवसमिए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उवसंता कसाया खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उव-समिए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ९, कयरे से णामे खइए-खओव-समिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं

पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे १०, २८। तत्थ णं जे ते पंच चउक्कसंजोगा ते णं इमे—अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे १ अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे २ अत्थि णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमिए-पारि-णामिअनिप्फरणे ३ अत्थि णामे उदइए-खइए-खओवसमिए-पारिणामिअ-निप्फरणे ४ अत्थि णामे उवसमिए-खइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ५, २९। कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-खइए-खओवसमनिप्फरणे १, कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे २, कयरे से णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए-उवसमिए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ३, कयरे से णामे उदइए-खइए-खओवसमिए पारिणा-मिअनिप्फरणे ?, उदइएत्ति मणुस्से खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे, एस णं से नामे उदइए-खइए-खओवसमिए-पारिणामि-अनिप्फन्ने ४, कयरे से नामे उवसमिए-खइए-खओवसमिए-पारिणामिअ-निप्फन्ने ?, उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं खओबसमिआइं इंदिआइं पारि-णामिए जीवे, एस णं से नामे उवसमिए-खइए-खओवसमिए-पारिणामि-अनिप्फरणे ५, ३०। तत्थ णं जे से एक्के पंचगसंजोए से णं इमे—अत्थि नामे उदइए-उवसमिए-खओवसमिए-खइए-पारिणामिअनिप्फरणे १, ३१। कयरे से नामे उदइए-उवसमिए-खइए-खओवसमिए-पारिणामिअनिप्फरणे ?, उइदएत्ति मणुस्से उवसंता कसाया खइअं सम्मत्तं खओवसमिआइं इंदिआइं

पारिणामिए जीवे ३२। एस णं से णामे जाव पारिणामिअनिप्फण्णे ३३। से तं सन्निवाइए, से तं छण्णामे ३४ ॥ सू० १२६ ॥

से किं तं सत्तनामे ?, २ सत्त सरा पण्णत्ता, तंजहा–सज्जे रिसहे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे धे(रे)वए चेव नेसाए, सरा सत्त विआहिआ ॥ २५ ॥ एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा–सज्जं च अग्गजीहाए, उरेण रिसहं सरं। कंठुग्गएण गंधारं, मज्झजीहाएँ मज्झिमं ॥ २६ ॥ नासाए पंचमं बूआ, दंतोट्ठेण अ धे(रे)वतं । भमुहक्खेवेण णेसायं, सरट्ठाणा विआहिआ ॥ २७ ॥ सत्त सरा जीवणिस्सिआ पण्णत्ता, तंजहा–सज्जं रवइ मऊरो, कुक्कुडो रिसभं सरं। हंसो रवइ गंधारं, मज्झिमं च गवेलगा ॥ २८ ॥ अह कुसुमसंभवे काले, कोइला पंचमं सरं। छट्ठं च सारसा कुंचा, नेसायं सत्तमं गओ ॥ २९ ॥ सत्त सरा अजीवनिस्सिआ पण्णत्ता, तंजहा–सज्जं रवइ मुअंगो, गोमुही रिसहं सरं। संखो रवइ गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥ ३० ॥ चउच्चरणपइट्ठाणा, गोहिआ पंचमं सरं। आडंबरो रेवइयं, महाभेरी अ सत्तमं ॥ ३१ ॥ एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता, तंजहा–सज्जेण लहई वित्तिं, कयं च न विणस्सइ। गावो पुत्ता य मित्ता य, नारीणं होइ वल्लहो ॥ ३२ ॥ रिसहेण उ एसज्जं (पसे(पास-पेस)ज्जं), सेणावच्चं धणाणि अ। वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि य ॥ ३३ ॥ गंधारे गीतजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती कलाहिआ। हवंति कइणो धण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा ॥ ३४ ॥ मज्झिमसरमंता उ, हवंति सुहजीविणो। खायई पियई देई, मज्झिमसरमस्सिओ ॥ ३५ ॥ पंचमसरमंता उ, हवंति पुहवीपई। सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणनायगा ॥ ३६ ॥ रेवयसरमंता उ, हवंति दुह(बहु) जीविणो(कलहप्पिया)। साउणिया वाउरिया सोयरिया य मुट्ठिआ (कुचेला य कुवित्ती य, चोरा चंडालमुट्ठिया) ॥ ३७ ॥ णिसायसरमंता उ, होंति

कलहकारगा। जंघाचरा लेहवाहा, हिंडगा भारवाहगा॥ ३८॥ (सोयरिया मच्छबंधा य॥ ३७॥ चंडाला मुट्ठिया मेता, जे यऽण्णे पावकारिणो। गोघातका य चोरा य नेसातं सरमस्सिता॥ ३८॥) एएसिं णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता, तंजहा–सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे, सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ, पण्णत्ताओ, तंजहा–मंग्गी(मग्गी) कोरविआ हरिया, रयणी अ सारकंता य। छट्ठी अ सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा॥ ३९॥ मज्झिमग्गामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा। समोक्कंता (अस्सोकंता, अस्सकन्ता) य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा॥ ४०॥ गंधारग्गामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–नंदी(नट्टी) अ खुड्डिआ पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा। उत्तरगंधारावि अ सा पंचमिआ हवइ मुच्छा॥ ४१॥ सुद्धुत्तरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य(नियमसो उ) णायव्वा। अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा॥ ४२॥ सत्त सरा कओ हवंति? गीयस्स का हवइ जोणी। कइसमया ओसासा, कइ वा गीयस्स आगारा॥ ४३॥ सत्त सरा नाभीओ हवंति गीयं च रुइयजोणी। पायसमा ऊसासा तिण्णि य गीयस्स आगारा॥ ४४॥ आइमउ आरभंता समुव्वहन्ता य मज्झयारंमि। अवसाणे झवेंता (उज्झंता) तिन्निवि गीयस्स आगारा॥ ४५॥ छद्दोसे अट्ठगुणे तिण्णि अ वित्ताइं दो य भणिईओ। जो नाही सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झंमि॥ ४६॥ भीअं दुअं उप्पिच्छं (रहस्सं) उत्तालं च कमसो मुणेअव्वं। कागस्सरमणुणासं छद्दोसा होंति गेअस्स॥ ४७॥ पुण्णं रत्तं च अलंकिअं च वत्तं च तहेवमविघुट्ठं। महुरं समं सुललिअं(समसुकुमारं) अट्ठ गुणा होंति गेअस्स॥४८॥ उरकंठसिरविसुद्धं च गिज्जंते मउअरिभिअपदबद्धं। समतालपडुक्खेवं सत्तस्सरसीभरं गीयं॥ ४९॥ अक्खरसमं पदसमं तालसमं लयसमं च गेहसमं।

नीससिओससिअसमं संचारसमं सरा सत्त ॥ ५० ॥ निद्दोसं सारमंतं च, हेउजुत्त-मलंकियं । उवणीअं सोवयारं च, मिअं महुरमेव य ॥ ५१ ॥ समं अद्धसमं चेव, सव्वत्थ विसमं च जं । तिण्णि वित्तपयाराइं, चउत्थं नोवलब्भइ ॥ ५२ ॥ सक्कया पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा । सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिआ ॥ ५३ ॥ केसी गायइ महुरं केसी गायइ खरं च रुक्खं च । केसी गायइ चउरं केसी अ विलंबिअं दुतं केसी ? ॥ ५४ ॥ विस्सरं पुण केरिसी । (गाथाऽधिकमिदं) गोरी(सामा) गायति महुरं सामा (काली) गायइ खरं च रुक्खं च । काली(गोरी) गायइ चउरं काणा य विलंबिअं दुतं अंधा ॥५५॥ विस्सरं पुण पिंगला । (गाथाऽधिकमिदमपि) । सत्त सरा तओ गामा, मुच्छणा इक्कवीसई । ताणा एगूणपण्णासं सम्मत्तं सरमंडलं ॥ ५६ ॥ से तं सत्तनामे ॥ १२७ ॥ से किं तं अट्ठनामे ?, २ अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता, तंजहा—निद्देसे पढमा होइ, बितिआ उवएसणे । तइया करणंमि कया, चउत्थी संपयावणे ॥ ५७ ॥ पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवायणे । सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमाऽऽमंतणी भवे ॥ ५८ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती उद्देसे सो इमो अहं वत्ति । बिइआ पुण उवएसे भण कुणसु इमं व तं वत्ति ॥ ५९ ॥ तइआ करणंमि कया भणिअं च कयं च तेण व मए वा । हंदि णमो साहाए हवइ चउत्थी पयाणंमि ॥ ६० ॥ अवणय गिण्ह य एत्तो इउत्ति वा पंचमी अवायाणे । छट्ठी तस्स इमस्स व गयस्स वा सामिसंबंधे ॥ ६१ ॥ हवइ पुण सत्तमी तं इमंमि आहारकालभावे अ । आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाणत्ति ॥ ६२ ॥ से तं अट्ठणामे ॥ सू० १२८ ॥ से किं तं नवनामे ?, २ णव कव्वरसा पण्णत्ता, तंजहा—वीरो सिंगारो अब्भुओ अ रोद्दो अ होइ बोद्धव्वो । वेलणओ बीभच्छो हासो कलुणो पसंतो अ ॥ ६३ ॥ तत्थ परिचायंमि अ तवचरणे सत्तुजणविणासे अ । अणणुसय-धिति-परक्कमलिंगो

वीरो रसो होइ ॥ ६४ ॥ वीरो रसो जहा—सो नाम महावीरो जो रज्जं पयहिऊण पव्वइओ । कामकोह-महासत्तु-पक्खनिग्घायणं कुणइ ॥ ६५ ॥ सिंगारो नाम रसो रतिसंजोगाभिलास-संजणणो । मंडण-विलास-विब्बोअ-हास-लीला-रमणलिंगो ॥ ६६ ॥ सिंगारो रसो जहा—महुर-विलास-सललिअं हिय-उम्मादणकरं जुवाणाणं । सामा सद्दुद्दामं दाएती मेहलादामं ॥ ६७ ॥ विम्हयकरो अपुव्वो अनुभुअपुव्वो य जो रसो होइ । हरिस-विसाउप्पत्ती-लक्खणो अब्भुओ नाम ॥ ६८ ॥ अब्भुओ रसो जहा—अब्भु-अतरमिह एत्तो अन्नं किं अत्थि जीवलोगंमि । जं जिणवयणेणऽत्था तिकालजुत्ता विण(मुणि)ज्जंति ?॥७१॥ भयजणण-रूवसद्दंधयार-चिंता-कहास-मुप्पण्णो । संमोह-संभम-विसाय-सरणलिंगो रसो रोद्दो ॥ ७० ॥ रोद्दो रसो जहा—भिउडी-विडंबिअ-मुहा ! संदट्ठोट्ठ ! इअ रुहिरमाकिण्ण ! । हणसि पसुं असुरणिभा ? भीमरसिअ ? अइरोद्द ! रोद्दोऽसि ॥ ७१ ॥ विण्णोवयार-गुज्झ-गुरुदार-मेरावइक्कमुप्पण्णो । वेलणओ नाम रसो लज्जा-संका-करणलिंगो ॥ ७२ ॥ वेलणओ रसो जहा—किं लोइअकरणीओ लज्जणीअतरंति लज्जयामुत्ति ? । वारिज्जंमी गुरुयणो परिवंदइ जं वहुप्पोत्तं ॥ ७३ ॥ असुइ-कुणवदुद्दंसण-संजोगब्भास-गंधनिप्फण्णो । निव्वेअऽविहिंसालक्खणो रसो होइ बीभत्सो ॥ ७४ ॥ बीभत्सो रसो जहा—असुइ-मलभरिय-निज्झर-सभाव-दुग्गंधि सव्वकालंपि । धरणा उ सरीरकलिं बहुमलकलुसं विमुंचंति ॥ ७५ ॥ रूववय-वेसभासा विवरीअ-विलंबणा-समुप्पण्णो । हासो मणप्पहासो पगासलिंगो रसो होइ ॥ ७६ ॥ हासो रसो जहा—पासुत्तमसी-मंडिअ-पडिबुद्धं देवरं पलोअंती । ही जह थणभर-कंपण-पणमिअ-मज्झा हसइ सामा ॥ ७७ ॥ पिअविप्पओग-बंधवह-वाहि-विणिवाय-संभमुप्पण्णो । सोइअ-विलविअ-पम्हाण-रुण्णलिंगो रसो करुणो ॥ ७८ ॥ करुणो रसो जहा—पज्झायकिलामिअयं बाहागयप्पपुअच्छिअं

बहुसो । तस्स विओगे पुत्तिय ! दुब्बलयं ते मुहं जायं ॥ ७९ ॥ निद्दोस-मणसमाहाण-संभवो जो पसंतभावेणं । अविकार-लक्खणो सो रसो पसंतोत्ति णायव्वो ॥ ८० ॥ पसंतो रसो जहा—सब्भाव-निव्विगारं उवसंत-पसंत-सोमदिट्ठीअं । ही जह मुणिणो सोहइ मुहकमलं पीवरसिरीअं ॥ ८१ ॥ एए नव कव्वरसा बत्तीसादोसविहि-समुप्पण्णा । गाहाहिं मुणियव्वा हवंति सुद्धा व मीसा वा ॥ ८२ ॥ से तं नवनामे ॥सू० १२९॥

से किं तं दसनामे ?, २ दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—गोण्णे नोगोण्णे आयाणपएणं पडिवक्खपएणं पहाणयाए अणाइअसिद्धंतेणं नामेणं अवयवेणं संजोगेणं पमाणेणं १ । से किं तं गोण्णे ?, २ खमईत्ति खमणो तवइत्ति तवणो जलइत्ति जलणो पवइत्ति पवणो, से तं गोण्णे २ । से किं तं नोगोण्णे ?, अकुंतो सकुंतो अमुग्गो समुग्गो अमुद्दो समुद्दो अलालं पलालं अउलिआ सउलिया नो पलं असइत्ति पलासो अमाइवाहए माइवाहए अबीयवावए बीअवावए नो इंदगोवए इंदगोवे, से तं नोगोण्णे ३ । से किं तं आयाणपएणं ?, २ (धम्मोमंगलं चूलिआ) आवंती चाउरंगिज्जं असंखयं अहातत्थिज्जं अद्दइज्जं जण्णइज्जं पुरिसइज्जं (उसुकारिज्जं) एलइज्जं वीरीयं धम्मो मग्गो समोसरणं जंमइअं, से तं आयाणपएणं ४ । से किं तं पडिवक्खपएणं ?, २ नवेसु गामागर-णगर-खेडकब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम—संवाहसन्निवेसेसु संनिविस्समाणेसु असिवा सिवा अग्गी सीअलो विसं मधुरं कलालघरेसु अंबिलं साउअं जे रत्तए से अलत्तए जे लाउए से अलाउए जे सुंभए से कुंसुंभए आलवंते विवलीअभासए, से तं पडिवक्खपएणं ५ । से किं तं पाहण्णयाए ?, असोगवणे सत्तवण्णवणे चंपगवणे चूअवणे नागवणे पुन्नागवणे उच्छुवणे दक्खवणे सालिवणे, से तं पाहण्णयाए ६ । से किं तं अणाइसिद्धंतेणं ?, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थि-

काए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए, से तं अणाइयसिद्धंतेणं ७। से किं तं नामेणं ?, २ पिउपिआमहस्स नामेणं उन्नामिज्जइ(ए), से तं णामेणं ८। से किं तं अवयवेणं ?, २–सिंगी सिही विसाणी दाढी पक्खी खुरी नही वाली। दुपय चउप्पय बहुपया नंगुली केसरी कउही ॥ ८३ ॥ परिअरबंधेण भडं जाणिज्जा महिलिअं निवसणेणं। सित्थेण दोणपागं कविं च इक्काए गाहाए ॥ ८४ ॥ से तं अवयवेणं ९। से किं तं संजोएणं ?, संजोगे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–दव्वसंजोगे खेत्तसंजोगे कालसंजोगे भावसंजोगे १०। से किं तं दव्वसंजोगे ? २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए। से किं तं सचित्ते ?, २ गोहिं गोमिए महिसीहिं महिसए ऊरणीहिं ऊरणीए उट्टीहिं उट्टीवाले, से तं सचित्ते। से किं तं अचित्ते ?, २ छत्तेण छत्ती दंडेन दंडी पडेण पडी घडेण घडी कडेण कडी, से तं अचित्ते। से किं तं मीसए ?, २ हलेण हालिए सगडेणं सागडिए रहेणं रहिए नावाए नाविए, से तं मिसए से तं दव्वसंजोगे ११। से किं तं खित्तसंजोगे ?, २ भारहे एरवए हेमवए एरण्णवए हरिवासए रम्मगवासए देवकुरुए उत्तरकुरुए पुव्वविदेहए अवरविदेहए, अहवा मागए मालवए सोरट्ठए मरहट्ठए कुंकणए कोसलए, से तं खेत्तसंजोगे १२। से किं तं कालसंजोगे ?, २ सुसमसुसमाए सुसमाए सुसमदूसमाए दूसमसुसमाए दूसमाए दूसमदूसमाए, अहवा पावसए वासारत्तए सरदए हेमंतए वसंतए गिम्हए, से तं कालसंजोगे १३। से किं तं भावसंजोगे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–पसत्थे अ अपसत्थे अ, से किं तं पसत्थे ?, २ नाणेणं नाणी दंसणेणं दंसणी चरित्तेणं चरित्ती, से तं पसत्थे, से किं तं अपसत्थे ?, २ कोहेणं कोही माणेणं माणी मायाए मायी लोहेणं लोही, से तं अपसत्थे, से तं भावसंजोगे १४। से तं संजोएणं १५। से किं तं पमाणेणं ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–नामप्पमाणे ठवणप्पमाणे दव्वप्पमाणे भावप्पमाणे १६। से किं तं नामप्पमाणे ?, २

जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा पमाणेत्ति नामं कज्जइ से तं णामप्पमाणे १७। से किं तं ठवणप्पमाणे ?, २ सत्तविहे पराणत्ते, तं जहा–णक्खत्तदेवयकुले पासंडगणे अ जीविआहेउं । आभिप्पाइअणामे ठवणानामं तु सत्तविहं ॥ ८५ ॥ १८। से किं तं णक्खत्तणामे ?, २ कित्तिआहिं जाए कित्तिए कित्तिआदिणे कित्तिआधम्मे कित्तिआसम्मे कित्तिआदेवे कित्तिआदासे कित्तिआसेणे कित्तिआरक्खिए रोहिणीहिं जाए रोहिणिए रोहिणिदिन्ने रोहिणिधम्मे रोहिणिसम्मे रोहिणिदेवे रोहिणिदासे रोहिणिसेणे रोहिणिरक्खिए य, एवं सव्वनक्खत्तेसु नामा भाणिअव्वा। एत्थं संगहणिगाहाओ–कित्तिअ-रोहिणिमिगसिरअद्दा य पुणव्वसू अ पुस्से अ। तत्तो अ अस्सिलेसा महा उ दो फग्गुणीओ अ ॥ ८६ ॥ हत्थो चित्ता साती विसाहा तह य होइ अणुराहा। जेट्ठा मूला पुव्वासाढा तह उत्तरा चेव ॥ ८७ ॥ अभिई सवण धणिट्ठा सतभिसदा दो अ होंति भद्दवया। रेवई अस्सिणि भरणी एसा नक्खत्तपरिवाडी ॥ ८८ ॥ से तं नक्खत्तनामे ११। से किं तं देवयाणामे ?, २ अग्गिदेवयाहिं जाए अग्गिए अग्गिदिणे अग्गिसम्मे अग्गिधम्मे अग्गिदेवे अग्गिदासे अग्गिसेणे अग्गिरक्खिए, एवं सव्व-नक्खत्तदेवयानामा भाणिअव्वा। एत्थंपि संगहणिगाहाओ–अग्गि पयावइ सोमे रुद्दो अदिती बिहस्सई सप्पे। पिति भग अज्जम सविआ तट्ठा वाऊ अ इंदग्गी ॥ ८९ ॥ मित्तो इंदो निरई आऊ विस्सो अ बंभ विण्हूआ। वसु वरुण अय विवद्धि पूसे आसे जमे चेव ॥ ९० ॥ से तं देवयाणामे २०। से किं तं कुलनामे ?, २ उग्गे भोगे रायणणे खत्तिए इक्खागे णाते कोरव्वे, से तं कुलनामे २१। से किं तं पासंडनामे ?, २ समणे य पंडुरंगे भिक्खू कावालिए अ तावसए। परिवायगे, से तं पासंडनामे २२। से किं तं गणनामे ?, २ मल्ले मल्लदिन्ने मल्लधम्मे मल्लसम्मे मल्लदेवे

मल्लदासे मल्लसेणे मल्लरक्खिए, से तं गणनामे २३। से किं तं जीवियहेउं(नामे) ?, २ अयकरए उक्कुरुडए उज्झियए कज्जवए सुप्पए, से तं जीवियहेउं(नामे) २४। से किं तं आभिप्पाइयनामे ?, अंबए निंबए बकुलए पलासए सिणए पिलूए करीरए, से तं आभिप्पाइयनामे २५। से तं ठवणप्पमाणे २६। से किं तं दव्वप्पमाणे ?, २ छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए, से तं दव्वप्पमाणे २७। से किं तं भावप्पमाणे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–सामासिए तद्धियए धाउए निरुत्तिए २८। से किं तं सामासिए ?, २ सत्त समासा भवंति, तंजहा–दंदे अ बहुव्वीही, कम्मधारय दिग्गु अ। तप्पुरिस अव्वईभावे, एक्कसेसे अ सत्तमे ॥ ११ ॥ से किं तं दंदे ?, २ दन्ताश्च ओष्ठौ च दन्तोष्ठं, स्तनौ च उदरं च स्तनोदरं, वस्त्रं च पात्रं च वस्त्रपात्रम्, अश्वाश्च महिषाश्च अश्वमहिषम्, अहिश्च नकुलश्च अहिनकुलं, से तं दंदे समासे। से किं तं बहुव्वीहीसमासे ? २ फुल्ला इमंमि गिरिमि कुडयकयंबा सो इमो गिरी फुल्लियकुडयकयंबो (अलंकिताइं इमस्स नगरस्स दाराइं कवाडाइं तोरणाइं तं इमं नगरं अलंकितदारकवाडतोरणं), से तं बहुव्वीहीसमासे। से किं तं कम्मधारए ?, २ धवलो वसहो धवलवसहो, किण्हो मियो किण्हमियो, सेतो पडो सेतपडो, रत्तो पडो रत्तपडो, से तं कम्मधारए। से किं तं दिगुसमासे ?, २ तिण्णि कडुगाणि तिकडुगं, तिण्णि महुराणि तिमहुरं, तिण्णि गुणाणि तिगुणं, तिण्णि पुराणि तिपुरं, तिण्णि सराणि तिसरं, तिण्णि पुक्खराणि तिपुक्खरं, तिण्णि बिंदुआणि तिबिंदुअं, तिण्णि पहाणि तिपहं, पंच नईओ पंचणयं, सत्त गया सत्तगयं, नव तुरंगा नवतुरंगं, दस गामा दसगामं, दस पुराणि दसपुरं, से तं दिगुसमासे। से किं तं तप्पुरिसे ?, २ तित्थे कागो तित्थकागो, वणे हत्थी वणहत्थी, वणे वराहो वणवराहो,

वणे महिसो वणमहिसो, वणे मयूरो वणमयूरो(वणे कवोतो वणकवोतो), से तं तप्पुरिसे। से किं तं अव्वईभावे ?, २ अणुगामं अणुणइयं अणुफरिहं अणुचरिअं, से तं अव्वईभावे समासे। से किं तं एगसेसे ?, २ जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो, जहा एगो साली तहा बहवे साली जहा बहवे साली तहा एगो साली, से तं एगसेसे समासे। से तं सामासिए २९। से किं तं तद्धितए ?, २ अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा—कम्मे सिप्पसिलोए संजोगसमीअवो अ संजूहो। इस्सरिअ अवच्चेण य तद्धितणामं तु अट्ठविहे ॥ ९२ ॥ से किं तं कम्मणामे ?, २ दोसिए सोत्तिए कप्पासिए भंडवेआलिए कोलालिए (तणहारए कट्ठहारए पत्तहारए), (णरदावणिए), से तं कम्मनामे। से किं तं सिप्पनामे ?, २ वत्थिए तंतिए तुण्णए तंतुवाए पट्टकारे उएट्टे बरुडे मुंजकारे कट्ठकारे छत्तकारे वज्झकारे पोत्थकारे चित्तकारे दंतकारे लेप्पकारे सेलकारे कोट्टिमकारे, से तं सिप्पनामे। से किं तं सिलोअनामे ?, २ समणे माहणे सव्वा(च)तिही, से तं सिलोअनामे। से किं तं संजोगनामे ?, २ रण्णो ससुरए रण्णो जामाउए रण्णो साले (रण्णो सड्डुए) रण्णो भाउए रण्णो भगिणीवई, से तं संजोगनामे। से किं तं समीवनामे ?, २ गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं, विदिसासमीवे णयरं वेदिसं णयरं, बेन्नाए समीवे णयरं बेन्नायडं, तगराए समीवे णयरं तगरायडं, से तं समीवनामे। से किं तं संजूहनामे ?, २ तरङ्गवइकारे मलयवइकारे अत्ताणुसट्ठिकारे बिंदुकारे, से तं संजूहनामे। से किं तं ईसरिअनामे ?, २ राईसरे तलवरे माडंबिए कोडुंबिए इब्भे सेट्ठी सत्थवाहे सेणावई, से तं ईसरिअनामे। से किं तं अवच्चनामे ? २ अरिहंतमाया चक्कवट्टिमाया बलदेवमाया वासुदेवमाया रायमाया मु(ग)णिमाया वायगमाया, से तं अवच्चनामे। से

तं तद्धितए ३० । से किं तं धाउए ? २ भू सत्तायां परस्मैभाषा एध वृद्धौ स्पर्द्ध संहर्षे गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च बाधृ लोडने, से तं धाउए ३१ । से किं त निरुत्तिए ?, २ मह्यां शेते महिषः, भ्रमति च रौति च भ्रमरः, मुहुर्मुहुर्लसतीति मुसलं, कपेरिव लम्बते त्थेति च करोति कपित्थं चिदिति-करोति खल्लं च भवति चिक्खल्लं, उर्ध्वकर्णः उलूकः, मेखस्य माला मेखला, से तं निरुत्तिए ३२ । से तं भावपमाणे ३३ । से तं पमाणनामे ३४ । से तं दसनामे ३५ । से तं नामे ३६ । नामति पयं समत्तं ॥ सू० १३० ॥

से किं तं पमाणे ?, २ चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—दव्वपमाणे खेत्त-पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे ॥ सू० १३१ ॥ से किं तं दव्वपमाणे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—पएसनिप्फराणे अ विभागनिप्फराणे अ १ । से किं तं पएसनिप्फराणे ? २ परमाणुपोग्गले दुपएसिए जाव दसपएसिए संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए, से तं पएसनिप्फराणे । से किं तं विभागनि-प्फराणे ?, २ पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—माणे उम्माणे अवमाणे गणिमे पडिमाणे २ । से किं तं माणे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—धन्नमाणप्पमाणे अ रस-माणप्पमाणे अ ३ । से किं तं धन्नमाणप्पमाणे ?, २ दो असईओ पसई दो पसईओ सेतिया चत्तारि सेइआओ कुलओ चत्तारि कुलया पत्थो चत्तारि पत्थया आढगं चत्तारि आढगाइ दोणो सट्ठि आढयाइं जहन्नए कुंभे असीइ आढयाइं मज्झिमए कुंभे आढयसयं उक्कोसए कुंभे अट्ठ य आढयसइए वाहे, एएणं धराणमाणप्पमाणेणं किं पओअणं ?, एएणं धराणमाणप्पमाणेणं मुत्तोलीमुख-इदुर-अलिंद-ओचार-संसियाणं धराणाणं धराणमाणप्पमाण-निव्वि-त्तिलक्खणं भवइ, से तं धराणमाणप्पमाणे ४ । से किं तं रसमाणप्पमाणे ?, २ धराणमाणप्पमाणाओ चउभागविवड्ढिए अब्भितरसिहाजुत्ते रसमाणप्पमाणे विहिज्जइ, तंजहा—चउसट्ठिआ चउपलपमाणा ४ बत्तीसिआ ८ सोलसिआ १६ अट्ठभाइआ ३२ चउभाइआ ६४ अद्धमाणी १२८ माणी २५६ दो

चउसट्ठीआओ बत्तीसिआ दो बत्तीसिआओ सोलसिआ दो सोलसिआओ अट्ठभाइआ दो अट्ठभाइआओ चउभाइया दो चउभाइयाओ अद्धमाणी दो अद्धमाणीओ माणी, एएणं रसमाणप्पमाणेणं किं पओअणं ?, २ एएणं रसमाणेणं वारक-घडक-करक(कलसिअ)-गागरि(कक्करि)दइअ-करोडिअ-कुंडिअ-सं(घोसं)सियाणं रसाणं रसमाणप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ, से तं रसमाणपमाणे ५ । से तं माणे ६ । से किं तं उम्माणे ?, २ जणणं उम्मिणिज्जइ, तंजहा–अद्धकरिसो करिसो पलं अद्धपलं अद्धतुला तुला अद्धभारो भारो, दो अद्धकरिसा करिसो दो करिसा अद्धपलं दो अद्धपलाइं पलं पंच(पंचुत्तर)पलसइआ तुला दस तुलाओ अद्धभारो वीसं तुलाओ भारो, एएणं उम्माणपमाणेणं किं पओअणं ?, एएणं उम्माणपमाणेणं पत्त-अगर(रु, लु)तगर-चोअअ-कुंकुम-खंड-गुल-मच्छंडिआईणं दव्वाणं उम्माणपमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ, से तं उम्माणपमाणे ७ । से किं तं ओमाणे ?, २ जणणं ओमिणिज्जइ, तंजहा–हत्थेण वा दंडेण वा धणुक्केण वा जुगेण वा नालिआए वा अक्खेण वा मुसलेण वा–दंडधणूजुगनालिआ य अक्खमुसलं च चउहत्थं । दसनालिअं च रज्जुं विआण ओमाणसरणाए ॥ १३ ॥ वत्थुंमि हत्थमेज्जं खित्ते दंडं धणुं च पत्थंमि । खायं च नालिआए विआण ओमाणसरणाए ॥ १४ ॥ एएणं अवमाण-पमाणेणं किं पओअणं ?, एएणं अवमाणपमाणेणं खाय-चिअ-रइअ-करकचिय-कडपड-भित्ति-परिक्खेव-संसियाणं दव्वाणं अवमाणपमाण-निव्वित्ति-लक्खणं भवइ, से तं अवमाणे ८ । से किं तं गणिमे ?, २ जणणं गणिज्जइ, तंजहा–एगो दस सयं सहस्सं दस सहस्साइं सयसहस्सं दस सयसहस्साइं कोडी, एएणं गणिमप्पमाणेणं किं पओअणं ?, एएणं गणिमपमाणेणं भित्तग-भिति-भत्त-वेअण-आयव्वय संसिआणं दव्वाणं गणियप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ, से तं गणिमे ९ । से

किं तं पडिमाणे ?, २ जराणं पडिमिणिज्जइ, तंजहा—गुंजा कागणी निप्फाओ कम्ममासओ मंडलओ सुवराणो, पंच गुंजाओ कम्ममासओ, कागणयपेत्तया, चत्तारि कागणीओ कम्ममासओ, तिरिण निप्फावा कम्ममासओ, एवं चउक्को कम्ममासओ काकरायपेत्तयेत्यर्थः, बारस कम्ममासया मंडलओ एवं अडयालिसं कागणीओ मंडलओ, सोलस कम्ममासया सुवराणो एवं चउसट्ठि कागणीओ सुवराणो १० । एएणं पडिमाणपमाणेणं किं पओअणं ?, एएणं पडिमाणपमाणेणं सुवरण-रजत-मणि-मोत्तिअ-संखसिलप्पवालाईणं दव्वाणं पडिमाणप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ, से तं पडिमाणे ११ । से तं विभागनिप्फराणे । से तं दव्वपमाणे १२ ॥ सू० १३२ ॥

से किं तं खेत्तपमाणे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—पएसरिणप्फराणे अ विभागरिणप्फराणे अ १ । से किं तं पएसरिणप्फराणे ?, २ एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे तिपएसोगाढे संखिज्जपएसोगाढे असंखिज्जपएसोगाढे, से तं पएसरिणप्फराणे २ । से किं तं विभागरिणप्फराणे ?, २—अंगुलविहत्थि-रयणी कुच्छी धणु गाउअं च बोद्धव्वं । जोयण सेढी पयरं लोगमलोगऽवि अ तहेव ॥ १५ ॥ ३ । से किं तं अंगुले ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा—आयंगुले उस्सेहंगुले पमाणंगुले ४ । से किं तं आयंगुले ?, २ जे णं जया मणुस्सा भवंति तेसि णं तया अप्पणो अंगुलेणं दुवालसअंगुलाइं मुहं नवमुहाइं पुरिसे पमाणजुत्ते भवइ, दोरिणए पुरिसे माणजुत्ते भवइ, अद्धभारं तुल्लमाणे पुरिसे उम्माणजुत्ते भवइ ५ । माणुम्माणपमाणजुत्ता-(णाय) लक्खणवंजणगुणेहिं उववेआ । उत्तमकुलप्पसूआ उत्तमपुरिसा मुणे-अव्वा ॥ १६ ॥ होंति पूण अहियपुरिसा अट्ठसयं अंगुलाण उव्विद्धा । छरणउइ अहमपुरिसा चउत्तरं मज्झिमिल्ला उ ॥ १७ ॥ हीणा वा अहिया वा जे खलु सरसत्तसारपरिहीणा । ते उत्तमपुरिसाणं अवसा पेसत्तणमुवेंति

॥ १८ ॥ एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाइं पाओ दो पाया विहत्थी दो विहत्थीओ रयणी दो रयणीओ कुच्छी दो कुच्छीओ दंडं धणू जुगे नालिआ अक्खे मुसले दो धणुसहस्साइं गाउअं चत्तारि गाउआइं जोअणं ६। एएणं आयंगुलपमाणेणं किं पओअणं ?, २ एएणं आयंगुलेणं जे णं जया मणुस्सा हवंति तेसि णं तया णं आयंगुलेणं अगड-तलाग-दह-नदी-वावि-पुक्खरिणी-दीहिय-गुंजालिआओ सरा सरपंतिआओ सरसरपंतिआओ बिलपंतिआओ आरामुज्जाण-काणण-वणवणसंड-वणराईओ देवउल-सभा-पवा-थूभ-खाइअ-परिहाओ पागार-अट्टालय-चरिअ-दार-गोपुर-पासाय-घर-सरण-लयण-आवण-सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पह-सगड-रह-जाणजुग्ग-गिल्लिथिल्लिसीय(सिविअ)-संदमाणिआओ लोही-लोहकडाह-कडिल्लय-भंडमत्तोवगरण-माईणि अज्जकालिआइं च जोअणाइं मविज्जंति ७। से समासओ तिविह पण्णत्ते, तंजहा—सूईअंगुले, पयरंगुले, घणंगुले, अंगुलायया एगपएसिया सेढी सूइअंगुले, सुई सूईगुणिया पयरंगुले, पयरं सूइए गुणितं घणंगुले ८। एएसि णं भंते ! सूइअंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?, सव्वथोवे सूइअंगुले, पयरंगुले असंखेज्जगुणे, घणंगुले असंखिज्जगुणे, से तं आयंगुले १। से किं तं उस्सेहंगुले ? २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—परमाणू तसरेणू रहरेणू अग्गयं च वालस्स। लिक्खा जूआ य जवो अट्ठगुणविड्ढिआ कमसो ॥ ११ ॥ १०। से किं तं परमाणू ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुहुमे अ ववहारिए अ ११। तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे १२। से किं तं ववहारिए ? २ अणंताणंताणं सुहुमपरमाणुपोग्गलाणं समुदयसमितिसमागमेणं से एगे ववहारिए परमाणुपोग्गले निप्फज्जइ १३। से णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?, हन्ता ओगाहेज्जा १४। से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?, नो इणट्ठे समट्ठे, नो

खलु तत्थ सत्थं कमइ १५। से णं भंते! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?, हंता विइवएज्जा १६। से णं भंते! तत्थ डहेज्जा? नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ १७। से णं भंते! पुरकलसंवट्ट-गस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?, हंता वीइवएज्जा १८। से णं तत्थ उदउल्ले सिआ?, नो इणट्ठे समट्ठे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ १९। से णं भंते! गंगाए महाणईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा?, हंता हव्वमागच्छेज्जा २०। से णं तत्थ विणिघायमावज्जेज्जा?, नो इणट्ठे समट्ठे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ २१। से णं भंते! उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा? हंता ओगाहेज्जा २२। से णं तत्थ कुच्छेज्जा वा? परियावज्जेज्ज वा?, णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ,—सत्थेण सुतिक्खेणवि छित्तुं भेत्तुं च जं किर न सक्का। तं परमाणुं सिद्धा वयंति आइं पमाणाणं॥ सू० १००॥ २३। अणंताणं ववहारिअ-परमाणु-पोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उसण्हसण्हिआ इ वा सण्हसण्हिआ इ वा उड्ढरेणू इ वा तसरेणू इ वा रहरेणू इ वा, अट्ठ उसण्हसण्हिआओ सा एगा सण्हसण्हिआ, अट्ठ सण्हस-ण्हिआओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणुओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ देवकुरुउत्तरकुरूणं मणुआणं से एगे वालग्गे, अट्ठ देवकुरुउत्तरकुरूणं मणुआण वालग्गा हरिवासरम्मगवासाणं मणुआणं से एगे वालग्गे, अट्ठ हरिवस्सर-म्मगवासाणं मणुस्साणं वालग्गा हेमवयहेरण्णवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे, अट्ठ हेमवयहेरण्णवयाणं मणुस्साणं वालग्गा पुव्वविदेहअवरविदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे, अट्ठ पुव्व-विदेहअवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा भरहएरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे, अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा सा एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूआ, अट्ठ जूआओ

से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झे से एगे अंगुले। एएणं अंगुलाणं पमाणेणं छ अंगुलाइं पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी, चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छन्नवइ अंगुलाइं से एगे दंडे इ वा धणू इ वा जुगे इ वा नालिआ इ वा अक्खे इ वा, मुसले इ वा, एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउअं, चत्तारि गाउआइं जोअणं २४। एएणं उस्सेहंगुलेणं किं पओअणं?, एएणं उस्सेहंगुलेणं णेरइअतिरिक्खजोणिअमणुस्सदेवाणं सरीरोगाहणा मविज्जति २५। णेरइआणं भंते! केमहालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुसहस्सं २६। रयणप्पहाए पुढवीए नेरइआणं भंते! केमहालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्च अंगुलाइं, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं पण्णरस धणू दोन्नि रयणीओ बारस अंगुलाइं २७। सक्करप्पहापुढवीए णेरइआणं भंते! केमहालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं दुण्णि रयणीयो बारस अंगुलाइं, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ २८। वालुअप्पहापुढवीए णेरइयाणं भंते! केमहालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता,

तंजहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं बासट्ठि धणूइं दो रयणीओ अ, एवं सव्वासि पुढवीणं पुच्छा भाणियव्वा २९। पंकप्पहाए पुढवीए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं बासट्ठि धणूइं दो रयणीओ अ, उत्तरवेउव्विआ जहन्नेणं अंगुलस्स संखिज्जइभागं उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं ३०। धूमप्पहाए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं, उत्तरवेउव्विआ सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं, तमाए भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं, उत्तरवेउव्विआ सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखिइज्जभागं उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं ३१। तमतमाए पुढवीए नेरइयाणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखिज्जइभागं उक्कोसेणं धणुसहस्साइं ३२। असुरकुमाराणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं सत्त रयणीओ, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखिज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं, एवं असुरकुमारगमेणं जाव थणियकुमाराणं भाणिअव्वं ३३। पुढविकाइआणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, एवं सुहुमाणं ओहिआणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं च भाणिअव्वं, एवं जाव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं भाणिअव्वं ३४। वणस्सइकाइआणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहिआणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हंपि जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बादरवणस्सइकाइयाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, अपज्जत्तगाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सातिरेगं जोअणसहस्सं ३५। बेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारस जोअणाइं, अपज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तगाणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारस जोअणाइं ३६। तेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं, अपज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स-असंखेज्जइभागं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ३७। चउरिंदिआणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउआइं, अपज्जत्तगाणं जहन्नेणं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तगाणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ३८। पंचेंदियतिरिक्ख-जोणियाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! एवं चेव, संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं

पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, अपज्जत्तग-संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं पज्जत्तग-संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदिय पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-जलयरपंचिंदिय पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-जलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणसहस्सं ३१ । चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं छ गाउआइं, संमुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं, अपज्जत्तग-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तग-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं, गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं छ गाउआइं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं छ गाउआइं, उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणसहस्सं, संमुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणपुहुत्तं, अपज्जत्तग-संमुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-

पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणपुहुत्तं, गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणसहस्सं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि असंखेज्जइभागं, पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोअणसहस्सं, भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियाणं पुच्छा गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं, संमुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं, अपज्जत्तग-संमुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तग-संमुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं असंखेज्जइभागं संखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं, गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ४० । खहयरपंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं, संमुच्छिम-खहयराणं जहा भुअपरिसप्पसंमुच्छिमाणं, तिसुवि गमेसु तहा भाणिअव्वं, गब्भवक्कंतिअ-खहयरपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-खहयरपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंसेखेज्जइभागं, पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-खहयर पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ४१ । एत्थ संगहणिगाहाओ भवंति, तंजहा—जोअण-सहस्सगाउयपुहुत्त तत्तो अ जोअणपुहुत्तं । दोगहं तु धणुपुहुत्तं समुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥ १०१ ॥ जोयणसहस्स छग्गाउआइं तत्तो अ जोयणसहस्सं । गाउअपुहुत्त भुअगे पक्खीसु भवे धणुपुहुत्तं॥१०२॥ ४२ । मणुस्साणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असं-खेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं, संमुच्छिममणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ४३ । वाणमंतराणं भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य जहा असुरकुमाराणं तहा भाणियव्वा, जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाणवि ४४ । सोहम्मे कप्पे देवाणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सत्त रयणीओ, तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं, एवं ईसाणकप्पेऽवि भाणिअव्वं, जहा सोहम्मकप्पाणं देवाणं पुच्छा तहा सेसकप्पदेवाणं पुच्छा भाणिअव्वा जाव अच्चुअकप्पो । सणंकुमारे कप्पे भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं छ रयणीओ. उत्तरवेउव्विआ जहा सोहम्मे,

जहा सणंकुमारे तहा माहिंदेवि भाणियव्वा, बंभलंतगेसु भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं पंच रयणीओ, उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे, महासुक्कसहस्सारेसु भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ, उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे, आणतपाणतआरणअच्चुएसु चउसुवि भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ, उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे ४५। गेवेज्जगदेवाणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरगे पण्णत्ते, से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं दुन्नि रयणीओ ४६। अणुत्तरोववाइयदेवाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! एगे भवधारणिज्जए सरीरए पण्णत्ते, से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं एगा रयणी उ ४७। से समासओ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—सूइअंगुले पयरंगुले घणंगुले, एगंगुलयया एगपएसिआ सेढी सूईअंगुले, सूई सूईए गुणिआ पयरंगुले, पयरं सूईए गुणियं घणंगुले, एएसि णं सूईअंगुलपयरंगुलघणंगुलाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ?, सव्वथोवे सूइअंगुले, पयरंगुले असंखेज्जगुणे, घणंगुले असंखेज्जगुणे, से तं उस्सेहंगुले ४८। से किं तं पमाणंगुले ?, पमाणंगुले एगमेगस्स रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए कागणीरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अहिगरणसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तस्स णं एगमेगा कोडी उस्सेहंगुलविक्खंभा तं समणस्स भगवओ महावीरस्स अद्धंगुलं, तं सहस्सगुणं पमाणंगुलं भवइ, एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाइं पादो दुवालसंगुलाइं विहत्थी दो विहत्थीओ रयणी दो रयणीओ कुच्छी दो कुच्छीओ धणू दो धणुसहस्साइं गाउअं चत्तारि गाउआइं जोयणं ४९। एएणं पमाणंगुलेणं किं पओअणं ?,

एएणं पमाणंगुलेणं पुढवीणं कंडाणं पातालाणं भवणाणं भवणपत्थडाणं निरयाणं निरयावलियाणं निरयपत्थडाणं कप्पाणं विमाणाणं विमाणावलीणं विमाणपत्थडाणं टंकाणं कूडाणं सेलाणं सिहरीणं पब्भाराणं विजयाणं वक्खाराणं वासाणं वासहराणं वासहरपव्वयाणं वेलाणं [वलयाणं] वेइयाणं दाराणं तोरणाणं दीवाणं समुद्दाणं आयामविक्खंभोच्चत्तोव्वेहपरिक्खेवा मविज्जंति ५० । से समासओ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–सेढीअंगुले पयरंगुले घणंगुले, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ सेढी, सेढी सेढीए गुणिया पयरं, पयरं सेढीए गुणियं लोगो, संखेज्जएणं लोगो गुणिओ संखेज्जा लोगा असंखेज्जएणं लोगो गुणिओ असंखेज्जा लोगा अणंतेणं लोगो गुणिओ अणंता लोगा ५१ । एएसि णं सेढीअंगुलपयरंगुलघणंगुलाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ?, सव्वथोवे सेढी अंगुले, पयरंगुले असंखेज्जगुणे, घणंगुले असंखिज्जगुणे, से तं पमाणंगुले ५२ । से तं विभागनिप्फराणे ५३ । से तं खेत्तप्पमाणे ५४ ॥ सू० १३३ ॥ से किं तं कालप्पमाणे ?. २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा–पएसनिप्फराणे अ विभागनिप्फराणे अ ॥ सू० १३४ ॥ से किं तं पएसणिप्फराणे ?, २ एगसमयट्ठिईए दुसमयट्ठिईए तिसमयट्ठिईए जाव दससमयट्ठिईए जाव असंखिज्जसमयट्ठिईए, से तं पएसनिप्फराणे ॥ सू० १३५ ॥ से किं तं विभागनिप्फराणे ?,–समयावलिअ-मुहुत्ता दिवस-अहोरत्त-पक्ख-मासा य । संवच्छर-जुग-पलिआ सागर-ओसप्पि-परिअट्टा ॥ १०२ ॥ सू० १३६ ॥

से किं तं समए ?, समयस्स णं परूवणं करिस्सामि, से जहानामए तुराणागदारए सिआ तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढ-पाणि-पायपास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तल-जमल-जुयल-परिघ-णिभबाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिअ-समाहत-निचितगत्तकाए उरस्सबलसमराणागए लंघण-पवण-जइण-वाया-

मसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे निउणसिप्पोवगए एगं महतीं पडसाडियं वा पट्टसाडियं वा गहाय सयराहं हत्थमेत्तं ओसारेज्जा, तत्थ चोअए पण्णवयं एवं वयासी–जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारएणं तीसे पडसाडिआए वा पट्टसाडिआए वा सयराहं हत्थमेत्ते ओसारिए से समए भवइ ?, नो इणट्ठे समट्ठे, कम्हा ?, जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समुदयसमितिसमागमेणं एगा पडसाडिआ निप्फज्जइ, उवरिल्लंमि तंतुंमि अच्छिण्णे हिट्ठिल्ले तंतू न छिज्जइ, अण्णंमि काले उवरिल्ले तंतू छिज्जइ अण्णंमि काले हिट्ठिल्ले तंतू छिज्जइ, तम्हा से समए न भवइ १ । एवं वयंतं पण्णवयं चोयए एवं वयासी–जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारएणं तीसे पडसाडिआए वा पट्टसाडियाए वा उवरिल्ले तंतू छिण्णे से समए भवइ ?, न भवइ, कम्हा ?, जम्हा संखेज्जाणं पम्हाणं समुदय-समिति-समागमेणं एगे तंतू निप्फज्जइ, उवरिल्ले पम्हे अछिण्णे हेट्ठिल्ले पम्हे न छिज्जइ, अण्णंमि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जइ अण्णंमि काले हेट्ठिल्ले पम्हे छिज्जइ, तम्हा से समए न भवइ २ । एवं वयंतं पण्णवयं चोअए एवं वयासी–जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारएणं तस्स तंतुस्स उपरिल्ले पम्हे छिण्णे से समए भवइ ?, न भवइ, कम्हा ?, जम्हा अणंताणं संघायाणं समुदयसमितिसमागमेणं एगे पम्हे निप्फज्जइ, उवरिल्ले संघाए अविसंघाइए हेट्ठिल्ले संघाए न विसंघाइज्जइ, अण्णंमि काले उवरिल्ले संघाए विसंघाइज्जइ अण्णंमि काले हिट्ठिले संघाए विसंघाइज्जइ, तम्हा से समए न भवइ ३ । एत्तोऽवि अ णं सुहुमतराए समए पण्णत्ते समणाउसो ! ४ । असंखिज्जाणं समयाणं समुदयसमितिसमागमेणं सा एगा आवलिअत्ति वुच्चइ, संखेज्जाओ आवलिओ ऊसासो, संखिज्जाओ आवलिआओ नीसासो,–हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स जंतुणो । एगे ऊसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ ॥ १०४ ॥ सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे । लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते विआहिए ॥ १०५ ॥

तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइं तेहुत्तरिं च ऊसासा। एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ १०६ ॥ ५। एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसं मुहुत्ता अहोरत्तं, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा ऊऊ, तिण्णि ऊऊ अयणं, दो अयणाइं संवच्छरे, पंच संवच्छराइं जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्सं, चोरासीइं वाससयसहस्साइं से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं से एगे तुडिअंगे, चउरासीइं तुडिअंगसयसहस्साइं से एगे तुडिए, चउरासीइं तुडिअसयसहस्साइं से एगे अडडंगे, चोरासीइं अडडंगसयसहस्साइं से एगे अडडे, एवं अववंगे अववे हुहुअंगे हुहुए उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे नलिणंगे नलिणे अच्छ-निऊरंगे अच्छनिउरे अउअंगे अउए पउअंगे पउए णउअंगे णउए चूलिअंगे चूलिया सीसपहेलियंगे चउरासीइं सीसपहेलियंग सयसहस्साइं सा एगा सीसपहेलिया ६। एयावया चेव गणिए, एयावया चेव गणिअस्स विसए, अतः परं (एत्तोऽवरं) ओवमिए पवत्तइ ७ ॥ सू० १३७ ॥

से किं तं ओवमिए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—पलिओवमे य सागरोवमे य १। से किं तं पलिओवमे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—उद्धारपलिओवमे अद्धापलिओवमे खेत्तपलिओवमे अ २। से किं तं उद्धारपलिओवमे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुहुमे अ वावहारिए अ, तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे, तत्थ णं जे से ववहारिए से जहानामए पल्ले सिआ जोयणं आयामविक्खंभेणं जोअणं उड्ढं उच्चत्तेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ जाव उक्कोसेणं सत्तरत्त-परूढाणं संमट्ठे संनिचिते भरिए वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गा नो अग्गी डहेज्जा नो वाऊ हरेज्जा नो कुहेज्जा नो पलिविद्धंसिज्जा णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा, तओ णं समए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं

कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ से तं ववहारिए उद्धारपलिओवमे ३। एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिआ। तं ववहारिअस्स उद्धार-सागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥ १०७ ॥ एएहिं वावहारिअ-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?, एएहिं वावहारिअ-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं णत्थि किंचिप्पओअणं, केवलं पण्णवणा पण्णविज्जइ, से तं वावहारिए उद्धारपलिओवमे ४। से किं तं सुहुमे उद्धारपलिओवमे ?, २ से जहानामए पल्ले सिआ जोअणं आयामविक्खंभेणं जोअणं उव्वेहेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअबेआहिअतेआहिअ उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढाणं संसट्ठे संनिचिते भरिए वालग्गकोडीणं, तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखिज्जाइं खंडाइं कज्जइ, ते णं वालग्गा दिट्ठीओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाउ असंखेज्जगुणा, ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा णो वाऊ हरेज्जा णो कुहेज्जा णो पलिविद्धंसिज्जा णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा, तओ णं समए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ, से तं सुहुमे उद्धारपलिओवमे ५। एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिआ। तं सुहुमस्स उद्धारसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥ १०८ ॥ एएहिं सुहुम-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?, एएहिं सुहुम-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं दीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पइ ६। केवइआ णं भंते ! दीवसमुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता ?, गोयमा ! जावइआणं अड्ढाइज्जाणं उद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमया एवइया णं दीवसमुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता ७। से तं सुहुमे उद्धारपलिओवमे। से तं उद्धारपलिओवमे ८। से किं तं अद्धापलिओवमे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुहुमे अ वावहारिए अ, तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे, तत्थ णं जे से वावहारिए से जहानामए पल्ले सिया

जोअणं आयामविक्खंभेणं जोअणं उड्ढं उच्चत्तेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ जाव भरिए वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा नो वाऊ हरेज्जा नो कुच्छेज्जा णो पलिविद्धंसिज्जा नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा, तओ णं वाससए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे निट्ठिए भवइ, से तं वावहारिए अद्धापलिओवमे १। एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भविज्ज दसगुणिया। तं ववहारिअस्स अद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥ १०९ ॥ एएहिं ववहारिएहिं अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओयणं ?, एएहिं ववहारिएहिं अद्धापलिओवमसागरोवमेहिं नत्थि किंचिप्पओअणं, केवलं-पण्णवणा पण्णविज्जइ, से तं ववहारिए अद्धापलिओवमे १०। से किं तं सुहुमे अद्धापलिओवमे ?, २ पल्ले सिआ जोअणं आयामविक्खंभेणं जोअणं उड्ढं उच्चत्तेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअबेआहिअ-तेआहिय जाव भरिए वालग्गकोडीणं, तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखेज्जाइं खंडाइं कज्जइ, ते णं वालग्गा दिट्ठीओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असंखेज्जगुणा, तं णं वालग्गा णो अग्गी जाव नो पलिविद्धंसिज्जा नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा. तओ णं वाससए २ गते एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ, से तं सुहुमे अद्धापलिओवमे ११। एएसिं पल्लाणं कोडाकोडि भवेज्ज दसगुणिया। तं सुहुमस्स अद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥ ११० ॥ एएहिं सुहुमेहिं अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?, एएहिं सुहुमेहिं अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइअ-तिरिक्ख-जोणिअ-मणुस्स-देवाणं आउअं मविज्जइ १२ ॥ सू० १३८ ॥

णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं

दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं १। रयणप्पहा-पुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं २। अपज्जत्तग-रयणप्पहा-पुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ३। पज्जत्तग-रयणप्पहा-पुढविनेरइयाणं भंते ! केवइकालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तोणं ४। सक्करप्पहा-पुढविनेरइआणं भंते ! केवइकालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं सागरोवमं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ५। एवं सेसपुढवीसु पुच्छा भाणियव्वा ६। वालुअप्पहा-पुढविनेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ७। पंकप्पहापुढवि-नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त-सागरोवमाइं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ८। धूमप्पहापुढविनेरइयाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ९। तमप्पहापुढवि-नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरससागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं १०। तमतमा-पुढविनेरइयाणं भंते ! केवइकालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ११। असुरकुमाराणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं १२। असुरकुमारदेवीणं भंते ! केवइअं कालं पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं १३। नागकुमाराणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणाइं दुण्णि पलिओवमाइं १४। नागकुमारीणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं १५। एवं जहा णागकुमाराणं देवाणं देवीण य तहा जाव

थणियकुमाराणं देवाणं देवीण य भाणियव्वं १६। पुढवीकाइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं १७। सुहुमपुढवीकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तयाणं पज्जत्तयाण य तिण्हंवि पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं १८। बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं १९। अपज्जत्तग-बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं २०। पज्जत्तग-बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं २१। एवं सेसकाइयाणंपि पुच्छावयणं भाणियव्वं, २२। आउकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं २३। सुहुम-आउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हंवि जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं बादर-आउकाइयाणं जहा ओहियाणं २४। अपज्जत्तग-बादरआउकाइयाणं जहन्नेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं २५। पज्जत्तग-बादरआउकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं २६। तेउकाइआणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं २७। सुहुमतेउकाइआणं ओहिआणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हंवि जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं २८। बादरतेउकाइयाणं जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं २९। अपजत्तबादरतेउकाइयाणं ते जहन्नेणंवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं अन्तोमुहुत्तं ३०। पज्जत्तगबादरतेउकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं अंतोमुहुत्तूणाइं ३१। वाउकाइयाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ३२। सुहुमवाउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाण य तिण्हंवि जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ३३। बादरवाउकाइयाणं

जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ३४। अपज्जत्तग-बादरवाउकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ३५। पज्जत्तग-बादरवाउकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ३६। वणस्सइकाइआणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ३७। सुहुम-वणस्सइकाइयाणं ओहिआणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाण य तिण्हवि जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ३८। बादर-वणस्सइकाइआणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ३९। अपज्जत्तग-बादरवणस्सइकाइयाणं जहण्णेणं अंतो-मुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ४०। पज्जत्तग-बादरवणस्सइकाइयाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ४१। बेइंदिआणं भंते! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि ४२। अपज्जत्तग-बेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ४३। पज्जत्तग-बेइंदिआणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि अंतोमुहुत्तूणाइं ४४। तेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगुणपण्णासं राइंदिआणं ४५। अपज्जत्तग-तेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ४६। पज्जत्तग-तेइंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगुणपण्णासं राइंदिआइं अंतोमुहुत्तूणाइं ४७। चउरिंदिआणं भंते! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा ४८। अपज्जत्तग-चउरिंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ४९। पज्जत्तग-चउरिंदिआणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणाइं ५०। पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिआणं भंते! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

तिरिण पलिओवमाइं ५१। (अपज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा, गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं, अपज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं)जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिआणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ५२। संमुच्छिम जलयर-पंचिंदिय पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ५३। अपज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयरपंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कासेणवि अन्तोमुहुत्तं ५४। पज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा ५५। गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदिय-पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ५६। अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ५७। पज्जत्तग-गब्भवक्कंतियजलयर-पंचिंदिय-पुच्छा गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ५८। चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं ५९। संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव

गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं ६० । अपज्जत्तय-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहन्नेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं ६१ । पज्जत्तय-संमुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ६२ । गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ६३ । अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ६४ । पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ६५ । उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ६६ । संमुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्साइं ६७ । अपज्जत्तय-संमुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं ६८ । पज्जत्तय-संमुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ६९ । गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ७० । अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ७१ । पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा ७२ । भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ७३ । संमुच्छिम-भुयपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वास-

सहस्साइं ७४ । अपज्जत्तय-संमुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं अन्तोमुहुत्तं ७५ । पज्जत्तग-संमुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां बायालीसं वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ७६ । गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां पुव्वकोडी ७७ । अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहन्नेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं ७८ । पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा ७९ । खहयरपंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ८० । संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां बावत्तरिं वाससहस्साइं ८१ । अपज्जत्तग-संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदियपुच्छा, गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं ८२ । पज्जत्तग-संमुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहन्नेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां बावत्तरिं वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ८३ । गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ८४ । अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-खहयरपंचिंदिय जाव गोयमा ! जहराणेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां अंतोमुहुत्तं ८५ । पज्जत्तग-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिआणां भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता, गोयमा ! जहराणेणां अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणां पलिओवमस्स असंखिज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो ८६ । एत्थ एएसि णां संगहणिगाहाओ भवंति, तंजहा—

संमुच्छिमपुव्वकोडी चउरासीइं भवे सहस्साइं । तेवराणा बायाला बावत्तरिमेव पक्खीणं ॥ १११ ॥ गब्भंमि पुव्वकोडी तिरिण य

पलिओवमाइं परमाऊ। उरगभुअपुव्वकोडी पलिओवमासंखभागो अ। ॥ ११२ ॥ ८७। मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं ८८। संमुच्छिममणुस्साणं जाव गोयमा ! जहराणेणवि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं ८९। गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं जाव गोयमा ! जहराणेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं ९०। अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अन्तोमुहुत्तं ९१। पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ९२। वाणमंतराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं ९३। वाणमंतरीणं देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ९४। जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणेणं सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ९५। जोइसियदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पराणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिअं ९६। चंदविमाणाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहिअं ९७। चंदविमाणाणं भंते ! देवीणं गोयमा ! जहराणेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पराणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिअं ९८। सूरविमाणाणं भंते ! देवाणं, गोयमा ! जहराणेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहिअं ९९। सूरविमाणाणं देवीणं गोयमा ! जहराणेणं चउभागप-

लिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओमं, पंचहिं वाससएहिं अब्भहिअं १००। गहविमाणाणं देवाणं गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं १०१ । गहविमाणाणं भंते ! देवीणं, गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं १०२। णक्खत्तविमाणाणं भंते ! देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं १०३ । णक्खत्तविमाणाणं भंते ! देवीणं गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं सातिरेगं चउभागपलिओवमं १०४ । ताराविमाणाणं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं १०५। ताराविमाणणं देवीणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं १०६ । वेमाणिआणं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं १०७। वेमाणिआणं भंते ! देवीणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं १०८। सोहम्मे णं भंते ! कप्पे देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं १०९। सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिग्गहिआदेवीणं, गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ११०। सोहम्मे णं अपरिग्गहिआदेवीणं ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं १११। ईसाणे णं भंते ! कप्पे देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ११२। ईसाणे णं भंते ! कप्पे परिग्गहिआदेवीणं, गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं ११३। अपरिग्गहिआदेवीणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं

पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ११४। सणंकुमारे णं भंते ! कप्पे देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ११५। माहिंदे णं भंते ! कप्पे देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ११६। बंभलोए णं भंते ! कप्पे देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ११७। कप्पे कप्पे केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! एवं भाणियव्वं—लंतए जहण्णेणं दस सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ११८। महासुक्के जहण्णेणं चउद्दस सागरवमाइं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ११९। सहस्सारे जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं १२०। आणए जहण्णेणं अट्ठारससागरोवमाइं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं १२१। पाणए जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं १२२। आरणे जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं १२३। अच्चुए जहण्णेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं १२४। हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं १२५। हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं, १२६। हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं पंचवीसं सागरोवमाइं १२७। मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जविमाणेसु केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं १२८। मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तावीसं,

सागरोवमाइं १२९ । मज्झिम उवरिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं १३० । उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्जविमाणेसु देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं १३१ । उवरिम-मज्झिम-गेविज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं, गोयमा ! जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं १३२ । उवरिम-उवरिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं गोयमा ! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं १३३ । विजय-वेजयंत-अपराजित-विमाणेसु णं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं १३४ । सव्वट्ठसिद्धे णं भंते ! महाविमाणे देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं १३५ । से तं सुहुमे अद्धापलिओवमे १३६ । से तं अद्धापलिओवमे १३७ ॥ सू० १३९ ॥

से किं तं खेत्तपलिओवमे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुहुमे अ, वावहारिए अ १ । तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे, तत्थ णं जे से ववहारिए से जहानामए पल्ले सिआ जोअणं आयामविक्खंभेणं जोअणं उव्वेहेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं. से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ जाव भरिए वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा जाव णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा, जे णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा तेहिं वालग्गेहिं अप्फुन्ना तओ णं समए २ एगमेगं आगासपएसं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे जाव निट्ठिए भवइ, से तं ववहारिए खेत्तपलिओवमे २ । एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिया । तं ववहारिअस्स खेत्तसागरोवमस्स एगस्स भवे परीमाणं ॥ ११३ ॥ ३ । एएहिं-ववहारिएहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?, एएहिं ववहारिएहिं नत्थि

किंचिप्पओअणं, केवलं परणवणा परणविज्जइ, से तं ववहारिए ४। से किं तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे ?, २ से जहाणामए पल्ले सिआ जोअणं आयामविक्खंभेणं, जाव परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ जाव भरिए वालग्गकोडीणं तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखिज्जाइं खंडाइं कज्जइ, ते णं वालग्गा दिट्ठिओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असंखेज्जगुणा, ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा जाव णो पूइत्ताइ हव्वमागच्छेज्जा, जे णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा तेहिं वालग्गेहिं अप्फुन्ना वा अणाफुरणा वा तओ णं समए २ एगमेगं आगासपएसं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे जाव णिट्ठिए भवइ, से तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे ५। तत्थ णं चोअए पण्णवगं एवं वयासी—अत्थि णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा जे णं तेहिं वालग्गेहिं अणाफुरणा ?, हंता अत्थि, जहा को दिट्ठंतो ?, से जहाणामए कोट्ठए सिआ कोहंडाणं भरिए तत्थ णं माउलिंगा पक्खित्ता तेवि माया, तत्थ णं बिल्ला पक्खित्ता तेवि माया, तत्थ णं आमलगा पक्खित्ता तेवि माया, तत्थ णं बयरा पक्खित्ता तेऽवि माया, तत्थ णं चणगा पक्खित्ता तेऽवि माया, तत्थ णं मुग्गा पक्खित्ता, तत्थ णं सरिसवा पक्खित्ता, तत्थ णं गंगावालुआ पक्खित्ता सावि माया, एवमेव एएणं दिट्ठंतेणं अत्थि णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा जे णं तेहिं वालग्गेहिं अणाफुरणा ६। एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिया। तं सुहुमस्स खेत्तसागरोवमस्स एगस्स भवे परीमाणं ॥ ११४ ॥ एएहिं सुहुमेहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?, एएहिं सुहुमपलिओवम-सागरोवमेहिं दिट्ठिवाए दव्वा मविज्जंति ७ ॥ सू० १४० ॥

कइविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—जीवदव्वा य अजीवदव्वा य १। अजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा

पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–रूवीअजीवदव्वा य अरूवी-अजीवदव्वा य २। अरूवीअजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा–धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसा धम्मत्थिकायस्स पएसा अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसा अधम्मत्थि-कायस्स पएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसा आगासत्थि-कायस्स पएसा, अद्धासमए ३। रूवीअजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–खंधा खंधदेसा खंधप्प-एसा परमाणुपोग्गला, ते णं भंते ! किं संखिज्जा असंखिज्जा अणंता ?, गोयमा ! नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ?, गोयमा ! अणंता परमाणु-पोग्गला अणंता दुपएसिया खंधा जाव अणंता अणंतपएसिआ खंधा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ४। जीवदव्वा णं भंते ! किं संखिज्जा असंखिज्जा अणंता ?, गोयमा ! नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ?, गोयमा ! असंखेज्जा णेरइया असंखेज्जा असुरकुमारा जाव असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढवीकाइया जाव असंखिज्जा वाउकाइआ अणंता वणस्सइकाइआ असंखेज्जा बेइंदिआ जाव असंखिज्जा चउरिंदिया असंखिज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिआ असंखिज्जा मणुस्सा असंखिज्जा वाणमंतरा असंखिज्जा जोइसिआ असंखेज्जा वेमाणिआ अणंता सिद्धा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ५ ॥ सू० १४१ ॥

कइविहा णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–ओरालिए वेउव्विए आहारए तेअए कम्मए १। णेर-

इत्थाणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–वेउव्विए तेअए कम्मए २ । असुरकुमाराणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–वेउव्विए तेअए कम्मए, एवं तिण्णि २, एए चेव सरीरा जाव थणियकुमाराणं भाणिअव्वा ३ । पुढवीकाइआणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–ओरालिए तेअए कम्मए, एवं आउतेउवणस्सइकाइयाणंवि एए चेव तिण्णि सरीरा भाणियव्वा ४ । वाउकाइयाणं जाव गोयमा ! चत्तारि सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए ५ । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढवीकाइयाणं, पंचिंदिअ-तिरिक्खजोणिआणं जहा वाउकाइयाणं ६ । मणुस्साणं जाव गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तंजहा–ओरालिए वेउव्विए आहारए तेअए कम्मए ७ । वाणमंतराणं जोइसिआणं वेमाणिआणं जहा नेरइयाणं ८ । केवइया णं भंते ! उरालिअसरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ अणंता लोगा दव्वओ अभवसिद्धिएहिं अणंतागुणा सिद्धाणं अणंतभागो ९ । केवइआ णं भंते ! वेउव्विअसरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेलया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, सेसं जहा ओरालिअस्स मुक्केल्लया तहा एएवि भाणिअव्वा १० । केवइआ

णं भंते ! आहारगसरीरा ? गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं सिअ अत्थि सिअ नत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एगो वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं, मुक्केल्लया जहा ओरालियसरीरस्स तहा भाणिअव्वा ११ । केवइया णं भंते ! तेअगसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेलया ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा दव्वओ सिद्धेहिं अणंतगुणा सव्वजीवाणं अणंतभागूणा, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा दव्वओ सव्वजीवेहिं अणंतगुणा जीववग्गस्स अणंतभागो १२ । केवइया णं भंते ! कम्मगसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, जहा तेअगसरीरा तहा कम्मगसरीरावि भाणिअव्वा १३ । नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालिअसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं नत्थि, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा, नेरइयाणं भंते ! केवइया वेउव्विअसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेलगा ते णं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि णं सेढीणं विक्खंभ-सूईअंगुल-पढम वग्गमूलं बिइअवग्गमूल-पडुप्पराणं अहव णं अंगुलबिइअ-वग्गमूल-घण-पमाणमेत्ताओ सेढीओ, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा १४ । णेरइयाणं भंते ! केवइया आहारगसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य,

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं नत्थि, तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते जहा ओहिआ ओरालिआ तहा भाणिअव्वा १५। तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्विअसरीरा तहा भाणिअव्वा १६। असुरकुमाराणं भंते! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! जहा नेरइयाणं ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा, असुरकुमाराणं भंते! केवइया वेउव्विअसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई-अंगुल-पढम-वग्गमूलस्स असंखिज्जइभागो, मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालिअसरीरा १६। असुरकुमारा णं भंते! केवइआ आहारगसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, जहा एएसि चेव ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा, तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्वियसरीरा तहा भाणिअव्वा, जहा असुरकुमाराणं तहा जाव थणिअकुमाराणं ताव भाणिअव्वं १७। पुढविकाइयाणं भंते! केवइया ओरालिअसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, एवं जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणियव्वा १८। पुढविकाइयाणं भंते! केवइया वेउव्विअसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं णत्थि, मुक्केल्लया जहा ओहिआणं ओरालिअसरीरा तहा भाणियव्वा १९। आहारगसरीरावि एवं चेव भाणियव्वा, तेअगकम्मसरीरा जहा जहा एएसिं चेव ओरालिअसरीरा चेव भाणिअव्वा २०। जहा पुढविकाइयाणं एवं आउकाइयाणं तेउकाइयाण य सव्वसरीरा भाणियव्वा २१। वाउकाइयाणं भंते! केवइया ओरालिअसरीरा पण्णत्ता?, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, जहा पुढवि-

काइयाणं ओरालियसरीरा तहा भाणिअव्वा २२ । वाउकाइयाणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेलया ते णं असंखिज्जा समए २ अवहीरमाणा २ खेत्तपलिओवमस्स असंखिज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति नो चेव णं अवहिआ सिआ, मुक्केल्लया वेउव्वियसरीरा आहारगसरीरा य जहा पुढविकाइआणं तहा भाणिअव्वा, तेअगकम्मसरीरा जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणिअव्वा २३ । वणस्सइकाइआणं ओरालिअ-वेउव्विअ-आहारगसरीरा जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणिअव्वा, वणस्सइकायाणं भंते ! केवइया तेअगसरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, जहा ओहिआ तेअगकम्मसरीरा तहा वणस्सइकाइयाणवि तेअगकम्मगसरीरा भाणिअव्वा २४ । बेइंदियाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई असंखेज्जाओ जोअणकोडाकोडिओ असंखिज्जाइं सेढिवग्गमूलाइं बेइंदियाणं ओरालियबद्धेल्लएहिं पयरं अवहीरइ असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालओ, खेत्तओ अंगुलपयरस्स आवलिआए असंखिज्जइभागपडिभागेणं, मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा, वेउव्विअआहारगसरीरा बद्धेल्लया नत्थि मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा, तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा २५ । जहा बेइंदिआणं तहा तेइंदियचउरिंदियाणवि भाणिअव्वा २६ । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि ओरालिअसरीरा एवं चेव भाणिअव्वा २७ । पंचिंदिअतिरिक्खजोणि-

आणं भंते ! केवइया वेउव्विअसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखिज्जइभागो, मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिआ तहा भाणियव्वा २८। आहारयसरीरा जहा बेइंदियाणं तेअगकम्मसरीरा जहा ओरालिया २९। मणुस्साणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेलया णं ते सिअ संखिज्जा सिअ असंखिज्जा जहराणपए संखेज्जा, संखिज्जाओ कोडाकोडीओ एगुणतीसं ठाणाइं तिजमलपयस्स उवरिं चउजमलपयस्स हेट्ठा, अहव णं छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पराणो, अहव णं छराणउइ-छेअणगदायिरासी उक्कोसपए असंखिज्जा, असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ उक्कोसपए रूवपक्खित्तेहिं मणुस्सेहिं सेढी अवहीरइ कालओ, असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं खेत्तओ अंगुलपढमवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पराणं, मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिया तहा भाणिअव्वा ३०। मणुस्साणं भंते ! केवइआ वेउव्विअसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं संखिज्जा समए २ अवहीरमाणा २ संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिआ सिआ, मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिआणं मुक्केल्लया तहा भाणिअव्वा ३१। मणुस्साणं भंते ! केवइया आहारगसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता. तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं सिअ अत्थि सिअ नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिरिण वा उक्कोसेणं

सहस्सपुहत्तं, मुक्केल्लया जहा ओहिआ, तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव ओरालिआ तहा भाणिअव्वा ३२ । वाणमंतराणं ओरालिअसरीरा जहा नेरइआणं ३३ । वाणमंतराणं भंते ! केवइआ वेउव्विअसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा– बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई संखेज्जोअणसयवग्गपलिभागो पयरस्स, मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालिआ तहा भाणियव्वा ३४ । आहारगससीरा दुविहावि जहा असुरकुमाराणं तहा भाणिअव्वा ३५ । वाणमंतराणं भंते ! केवइया तेअग-कम्मगसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! जहा एएसिं चेव वेउव्विसरीरा तहा तेअगकम्मगसरीरा भाणिअव्वा ३६ । जोइसियाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! जहा नेरइयाणं तहा भाणियव्वा ३७ । जोइसियाणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पराणत्ता ?, गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा–बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया जाव तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई बेछप्पराणंगुल-सयवग्गपलिभागो पयरस्स, मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणिअव्वा ३८ । आहारयसरीरा जहा नेरइयाणं तहा भाणिअव्वा, तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्विया तहा भाणिअव्वा ३९ । वेमाणियाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पराणत्ता ? गोयमा ! जहा नेरइयाणं तहा भाणिअव्वा, वेमाणियाणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पराणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तंजहा– बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो तासि णं सेढीणं विक्खं-

भसूई अंगुलतीयवग्गमूलं तइग-वग्गमूल-पडुप्पण्णां अहव णां अंगुल-तइय-वग्गमूल-घणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ, मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालियाणां तहा भाणिअव्वा ४० । आहारयसरीरा जहा नेरइयाणां, तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्विअसरीरा तहा भाणिअव्वा ४१ । से तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे, से तं खेत्तपलिओवमे, से तं पलिओवमे, से तं विभाग-णिप्फण्णे, से तं कालप्पमाणे ४२ ॥ सू० १४२ ॥

से किं तं भावप्पमाणे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—गुणप्पमाणे नयप्पमाणे संखप्पमाणे ॥ सू० १४३ ॥ से किं तं गुणप्पमाणे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—जीवगुणप्पमाणे अजीवगुणप्पमाणे अ १ । से किं तं अजीवगुणप्पमाणे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—वण्णगुणप्पमाणे गंधगुणप्पमाणे रसगुणप्पमाणे फासगुणप्पमाणे संठाणगुणप्पमाणे २ । से किं तं वण्णगुणप्पमाणे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—काल-वण्ण-गुणप्पमाणे जाव सुक्किल्ल-वण्णगुणप्पमाणे, से तं वण्णगुणप्पमाणे ३ । से किं तं गंधगुणप्पमाणे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुरभिगंध-गुणप्प-माणे दुरभिगंध-गुणप्पमाणे, से तं गंधगुणप्पमाणे ४ । से किं तं रसगुण-प्पमाणे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—तित्तरस-गुणप्पमाणे जाव महुररस-गुणप्पमाणे, से तं रसगुणप्पमाणे ५ । से किं तं फासगुणप्पमाणे ? २ अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा—कक्खडफास-गुणप्पमाणे जाव लुक्खफास-गुणप्पमाणे, से तं फासगुणप्पमाणे ६ । से किं तं संठाणगुणप्पमाणे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—परिमंडल-संठाण-गुणप्पमाणे वट्टसंठाण-गुणप्पमाणे तंससंठाणगुणप्पमाणे चउरंस-सेठाणगुणप्पमाणे आयय-संठाण-गुणप्पमाणे, से तं संठाणगुणप्पमाणे ७ । से तं अजीवगुणप्पमाणे ८ । से किं तं जीवगुणप्पमाणे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—णाणगुणप्पमाणे दंसणगुणप्पमाणे चरित्तगुणप्पमाणे ९ । से किं तं णाणगुणप्पमाणे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—पच्चक्खे

अणुमाणे ओवम्मे आगमे १० । से किं तं पच्चक्खे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–इंदिअपच्चक्खे अ णोइंदिअपच्चक्खे अ ११ । से किं तं इंदिअ-पच्चक्खे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–सोइंदिअपच्चक्खे चक्खुरिंदियपच्चक्खे घाणिंदिअपच्चक्खे जिब्भिंदिअपच्चक्खे फासिंदिअपच्चक्खे, से तं इंदियपच्चक्खे १२ । से किं तं णोइंदियपच्चक्खे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–ओहिणाण-पच्चक्खे मणपज्जव-नाणपच्चक्खे केवल णाणपच्चक्खे, से तं णोइंदियपच्चक्खे १३ । से तं पच्चक्खे १४ । से किं तं अणुमाणे ? २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–पुव्ववं सेसवं दिट्ठसाहम्मवं १५ । से किं तं पुव्ववं ? पुव्ववं माया पुत्तं जहा नट्ठं, जुवाणं पुणरागयं । काई पच्चभिजाणेज्जा, पुव्वलिंगेण केणई ॥ ११५ ॥ तंजहा–खत्तेण वा वण्णेण वा लंछणेण वा मसेण वा तिलएण वा, से तं पुव्ववं १६ । से किं तं सेसवं ?, २ पंचविहं पण्णत्तं, तंजहा–कज्जेणं कारणेणं गुणेणं अवयवेणं आसएणं । से किं तं कज्जेणं ?, २ संखं सद्देणं भेरिं ताडिएणं वसभं ढक्किएणं मोरं किंकाइएणं हयं हेसिएणं गयं गुलगुलाइएणं रहं घणघणाइएणं, से तं कज्जेणं । से किं तं कारणेणं ?, २ तंतवो पडस्स कारणं ण पडो तंतुकारणं, वीरणा कडस्स कारणं ण कडो वीरणाकारणं, मिप्पिडो घडस्स कारणं ण घडो मिप्पि-डकारणं, से तं कारणेणं । से किं तं गुणेणं ?, २ सुवण्णं निकसेणं पुप्फं गंधेणं लवणं रसेणं मइरं आसायएणं वत्थं फासेणं, से तं गुणेणं । से किं तं अवयवेणं ?, २ महिसं सिंगेणं, कुक्कुडं सिहाएणं, हत्थिं विसाणेणं वराहं दाढाए, मोरं पिच्छेणं, आसं खुरेणं, वग्घं नहेणं, चमरिं वालग्गेणं, वाणरं लंगुलेणं, दुपयं मणुस्सादि, चउपयं गवमादि, बहुपयं गोमिआदि, सीहं केसरेणं, वसहं कुक्कुहेणं, महिलं वलयबाहाए, गाहा–परिअरबंधेण भडं जाणिज्जा महिलिअ निवसणेणं । सित्थेण दोणपागं कविं च एकाए गाहाए ॥ ११६ ॥ से तं अवयवेणं । से किं तं आसएणं ?, २ अग्गिं धूमेणं

सलिलं बलागेणं वुट्टिं अब्भविकारेणं कुलपुत्तं सीलसमायारेणं—इङ्गिताकारितैर्ज्ञेयैः, क्रियाभिर्भाषितेन च। नेत्रवक्त्रविकारैश्च, गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥ १ ॥ से तं आसएणं। से तं सेसवं १७ ॥ से किं तं दिट्ठसाहम्मवं ?, २ दुविहं पराणत्तं, तंजहा—सामन्नदिट्ठं च विसेसदिट्ठं च १८। से किं तं सामराणदिट्ठं ?, २ जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो, से तं सामराणदिट्ठं १९। से किं तं विसेसदिट्ठं ?, २ से जहाणामए केई पुरिसे कंचि पुरिसं बहूणं पुरिसाणं मज्झे पुव्वदिट्ठं पच्चाभिजाणेज्जा—अयं से पुरिसे, बहूणं करिसावणाणं मज्झे पुव्वदिट्ठं करिसावणं पच्चभिज्जाणिज्जा, अयं से करिसावणे २०। तस्स समासओ तिविहं गहणं भवइ, तंजहा—अतीयकालगहणं पडुप्पराण-कालगहणं अणागय-कालगहणं २१। से किं तं अतीय-कालगहणं ?, २ उत्तणाणि वणाणि निप्फराणसस्सं वा मेइणि पुराणाणि अ कुंड-सर णई-दीहिआ-तडागाइं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—सुवुट्ठी आसी, से तं अतीयकालगहणं २२। से किं तं पडुप्पराणकालगहणं ?, २ साहुं गोअरग्गगयं विच्छड्डिअ-पउर-भत्तपाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा सुभिक्खे वट्टई, से तं पडुप्पराणकालगहणं २३। से किं तं अणागय-कालगहणं ?, २—अब्भस्स निम्मलत्तं कसिणा य गिरी सविज्जुआ मेहा। थणियं वा उब्भामो संझा रत्ता पणिट्ठा(य णिद्धा) य ॥ ११७ ॥ वारुणं वा महिंदं वा अराणयरं वा पसत्थं उप्पायं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—सुवुट्ठी भविस्सइ, से तं अणागयकालगहणं २३। एएसि चेव विवज्जासे तिविहं गहणं भवइ, तंजहा—अतीगकालगहणं पडुप्पराणकालगहणं अणागयकालगहणं २४। से किं तं अतीयकालगहणं ?, नित्तिणाइं वणाइं अनिप्फराणसस्सं वा

मेइणीं सुक्काणि अ कुंड-सर-णई-दीहिआ-तडागाइं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा–कुवुट्ठी आसी, से तं अतीयकालगहणं २५। से किं तं पडुप्पण्णकालगहणं ?, २ साहुं गोअरग्गगयं भिक्खं अलभमाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा–दुब्भिक्खे वट्टइ, से तं पडुप्पण्णकालगहणं २६। से किं तं अणागयकालगहणं ?, २ धूमायंति दिसाओ सज्झाविति मेइणी अपडिबद्धा। वाया नेरुतिआ खलु कुवुट्ठीमेवं निवेयंति ॥ ११८ ॥ अग्गेयं वा वायव्वं वा अण्णयरं वा अप्पसत्थं उप्पायं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा–कुवुट्ठी भविस्सइ, से तं अणागयकालगहणं २७। से तं विसेसदिट्ठं, से तं दिट्ठसाहम्मवं, से तं अणुमाणे २८। से किं तं ओवम्मे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–साहम्मोवणीए अ वेहम्मोवणीए अ २९। से किं तं साहम्मोवणीए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–किंचिसाहम्मोवणीए पायसाहम्मोवणीए सव्वसाहम्मोवणीए ३०। से किं तं किंचिसाहम्मोवणीए ?, २ जहा मंदरो तहा सरिसवो जहा सरिसवो तहा मंदरो, जहा समुद्दो तहा गोप्पयं जहा गोप्पयं तहा समुद्दो, जहा आइच्चो तहा खज्जोतो जहा खज्जोतो तहा आइच्चो, जहा चंदो तहा कुमुदो जहा कुमुदो तहा चंदो, से तं किंचिसाहम्मो ३१। से किं तं पायसाहम्मोवणीए ?, २ जहा गो तहा गवओ जहा गवओ तहा गो, से तं पायसाहम्मो ३२। से किं तं सव्वसाहम्मोवणीए ?, २ सव्वसाहम्मे ओवम्मे नत्थि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ जहा–अरिहंतेहिं अरिहंतसरिसं कयं, चक्कवट्टिणा चक्कवट्टिसरिसं कयं, बलदेवेण बलदेवसरिसं कयं, वासुदेवेण वासुदेवसरिसं कयं, साहुणा साहुसरिसं कयं, से तं सव्वसाहम्मे, से तं साहम्मोवणीए ३३। से किं तं वेहम्मोवणीए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–किंचिवेहम्मे पायवेहम्मे सव्ववेहम्मे ३४। से किं तं किंचिवेहम्मे ?, २ जहा सामलेरो न तहा बाहुलेरो जहा बाहुलेरो न तहा सामलेरो, से तं किंचिवेहम्मे ३५। से किं तं पायवेहम्मे ?, जहा वायसो

न तहा पायसो, जहा पायसो न तहा वायसो, से तं पायवेहम्मे ३६ । से किं तं सव्ववेहम्मे ?, सव्ववेहम्मे ओवम्मे नत्थि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ, जहा णीएणं णीअसरिसं कयं, दासेण दाससरिसं कयं, काकेण काकसरिसं कयं, साणेण साणसरिसं कयं, पाणेणं पाणसरिसं कयं, से तं सव्ववेहम्मे ३७ । से तं वेहम्मोवणीए ३८ । से तं ओवम्मे ३९ । से किं तं आगमे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—लोहए अ लोउत्तरिए अ ४० । से किं तं लोइए ?, २ जराणं इमं अराणाणिएहिं मिच्छादिट्ठीएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं, तंजहा—भारहं रामायणं जाव चत्तारि वेआ संगोवंगा, से तं लोइए आगमे ४१ । से किं तं लोउत्तरिए ?, २ जराणं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पराण-णाणदंसणधरेहिं तीय-पच्चुप्पराण-मणागय-जाणएहिं तिलुक्कवहिअमहिअपूइएहिं सव्वराणूहिं सव्वदरसीहिं पणीअं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो जाव दिट्ठिवाओ । अहवा आगमे तिविहे पराणत्ते, तंजहा—सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे । अहवा—आगमे तिविहे पराणत्ते, तंजहा—अत्तागमे अणंतरागमे परंपरागमे, तित्थगराणं अत्थस्स अत्तागमे गणहराणं सुत्तस्स अत्तागमे अत्थस्स अणंतरागमे गणहरसीसाणं सुत्तस्स अणंतरागमे अत्थस्स परंपरागमे, तेण परं सुत्तस्सवि अत्थस्सवि णो अत्तागमे णो अणंतरागमे परंपरागमे, से तं लोगुत्तरिए ४२ । से तं आगमे ४३ । से तं णाणगुणप्पमाणे ४४ । से किं तं दंसणगुणप्पमाणे ?, २ चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—चक्खुदंसण-गुणप्पमाणे अचक्खुदंसण-गुणप्पमाणे ओहिदंसणगुणप्पमाणे केवलदंसण-गुणप्पमाणे ४५ । चक्खुदंसरणं चक्खुदंसणिस्स घडपडकडरहाइएसु दव्वेसु अचक्खुदंसरणं अचक्खुदंसणिस्स आयभावे ओहिदंसरणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु न पुण सव्वपज्जवेसु केवलदंसरणं केवलदंसणिस्स सव्वदव्वेसु अ सव्वपज्जवेसु अ, से तं दंसणगुणप्पमाणे ४६ ।

से किं तं चरित्तगुणप्पमाणे ?, २ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–सामाइअ-चरित्त-गुणप्पमाणे छेओवट्ठावण-चरित्त-गुणप्पमाणे परिहारविसुद्धिअ-चरित्त-गुणप्पमाणे सुहुमसंपराय-चरित्त-गुणप्पमाणे अहक्खाय-चरित्त-गुणप्पमाणे ४७। सामाइअ-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–इत्तरिए अ आवकहिए अ ४८। छेओवट्ठावण-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–साइआरे अ निरइआरे ४९। परिहारविसुद्धिअ-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–णिव्विसमाणए अ णिव्विट्ठकाइए अ ५०। सुहुमसंपराय-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–संकिलिस्समाणए य विसुज्झमाणए य, अहक्खाय-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–पडिवाई अ अपडिवाई अ ५१। अहवा अहक्खाय-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–छउमत्थिए अ केवलिए य ५२। से तं चरित्तगुणप्पमाणे ५३। से तं जीवगुणप्पमाणे ५४। से तं गुणप्पमाणे ५५॥ सू० १४४॥

से किं तं नयप्पमाणे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–पत्थगदिट्ठंतेणं वसहिदिट्ठंतेणं पएसदिट्ठंतेणं १। से किं तं पत्थगदिट्ठंतेणं ?, २ से जहानामए केई पुरिसे परसुं गहाय अडवीसमहुत्तो गच्छेज्जा, तं पासित्ता केइ वएज्जा–कहिं भवं गच्छसि ?, अविसुद्धो नेगमो भणइ–पत्थगस्स गच्छामि, तं च केई छिंदमाणं पासित्ता वएज्जा–किं भवं छिंदसि ?, विसुद्धो नेगमो भणइ–पत्थयं छिंदामि, तं च केई तच्छमाणं पासित्ता वएज्जा–किं भवं तच्छसि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–पत्थयं तच्छामि, तं च केई उक्कीरमाणं पासित्ता वएज्जा–किं भवं उक्कीरसि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–पत्थयं उक्कीरामि, तं च केइ (वि) लिहमाणं पासित्ता वएज्जा–किं भवं (वि) लिहसि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–पत्थयं (वि) लिहामि, एवं विसुद्धतरस्स णेगमस्स नामाउडिओ पत्थओ, एवमेव ववहारस्सवि, संगहस्स चियमियमेज्जसमारूढो पत्थओ, उज्जुसुयस्स पत्थओवि

पत्थओ मेज्जंपि पत्थओ, तिण्हं सद्दनयाणं पत्थयस्स अत्थाहिगारजाणओ, जस्स वा वसेणं पत्थओ निप्फज्जइ, से तं पत्थयदिट्ठंतेणं २। से किं तं वसहिदिट्ठंतेणं ?, २ से जहानामए केई पुरिसे कंचि पुरिसं वएज्जा–कहिं भवं वससि ?, तं अविसुद्धो णेगमो भणइ–लोगे वसामि, लोगे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–उड्ढलोए अहोलोए तिरिअलोए, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?, विसुद्धो णेगमो भणइ–तिरिअलोए वसामि, तिरिअलोए जंबुद्दीवाइआ सयंभूरमणपज्जवसाणा असंखिज्जा दीवसमुद्दा पण्णता, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–जंबुद्दीवे वसामि, जंबुद्दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता, तंजहा–भरहे एरवए हेमवए एरण्णवए हरिवस्से रम्मगवस्से देवकुरू उत्तरकुरू पुव्वविदेहे अवरविदेहे, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–भरहे वासे वसामि, भरहे वासे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–दाहिणड्ढभरहे उत्तरड्ढभरहे अ, तेसु सव्वेसु (दोसु) भवं वससि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–दाहिणड्ढभरहे वसामि, दाहिणड्ढभरहे अणेगाइं गामागर-णगर-खेड कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सण्णिवेसाइं, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?, विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–पाडलिपुत्ते वसामि, पाडलिपुत्ते अणेगाइं गिहाइं, तेसु सव्वेसु भवं वससि ? विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–देवदत्तस्स घरे वसामि, देवदत्तस्स घरे अणेगा कोट्ठगा, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?, विसुद्धत्तराओ णेगमो भणइ–गब्भघरे वसामि, एवं विसुद्धस्स णेगमस्स वसमाणो, एवमेव ववहारस्सवि, संगहस्स संथारसमारूढो वसइ, उज्जुसुअस्स जेसु आगासपएसेसु ओगाढो तेसु वसइ, तिण्हं सद्दनयाणं आयभावे वसइ। से तं वसहिदिट्ठंतेणं ३। से किं तं पएसदिट्ठंतेणं ?, २ णेगमो भणइ–छण्णं पएसो, तंजहा–धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो जीवपएसो खंधपएसो देसपएसो, एवं वयंतं णेगमं संगहो भणइ–जं भणसि–

छण्हं पएसो तं न भवइ, कम्हा ?, जम्हा जो देसपएसो सो तस्सेव दव्वस्स, जहा को दिट्ठंतो ?, दासेण मे खरो कीओ दासोऽवि मे खरोऽवि मे, तं मा भणाहि–छण्हं पएसो, भणाहि पंचण्हं पएसो, तंजहा–धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो जीवपएसो खंधपएसो, एवं वयंतं संगहं ववहारो भणइ–जं भणसि–पंचण्हं पएसो, तं न भवइ, कम्हा ?, जइ जहा पंचण्हं गोट्ठिआणं पुरिसाणं केइ दव्वजाए सामण्णे भवइ, तंजहा–हिरण्णे वा सुवण्णे वा धणे वा धण्णे वा, तं न ते जुत्तं वत्तुं जहा पंचण्हं पएसो, तं मा भणाहि–पंचण्हं पएसो, भणाहि–पंचविहो पएसो, तंजहा–धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो जीवपएसो खंधपएसो, एवं वयंतं ववहारं उज्जुसुओ भणइ–जं भणसि–पंचविहो पएसो, तं न भवइ, कम्हा ?, जइ ते पंचविहो पएसो एवं ते एक्केक्को पएसो पंचविहो एवं ते पणवीसतिविहो पएसो भवइ, तं मा भणाहि–पंचविहो पएसो, भणाहि–भइयव्वो पएसो–सिअ धम्मपएसो सिअ अधम्मपएसो सिअ आगासपएसो सिअ जीवपएसो सिअ खंधपएसो, एवं वयंतं उज्जुसुयं संपइ सद्दनओ भणइ–जं भणसि भइयव्वो पएसो, तं न भणइ, कम्हा ?, जइ भइअव्वो पएसो एवं ते धम्मपएसोऽवि सिअ धम्मपएसो सिअ अधम्मपएसो सिअ आगासपएसो सिअ जीवपएसो सिअ खंधपएसो, अधम्मपएसोऽवि सिअ धम्मपएसो जाव खंधपएसो, जीवपएसोऽवि सिअ धम्मपएसो जाव सिअ खंधपएसो, खंधपएसोऽवि सिअ धम्मपएसो जाव सिअ खंधपएसो, एवं ते अणवत्था भविस्सइ, तं मा भणाहि–भइयव्वो पएसो, भणाहि–धम्मे पएसे से पएसे धम्मे, अहम्मे पएसे से पएसे अहम्मे, आगासे पएसे से पएसे आगासे, जीवे पएसे से पएसे नोजीवे, खंधे पएसे से पएसे नोखंधे, एवं वयंतं सद्दनयं समभिरूढो भणइ–जं भणसि–धम्मे पएसे से पएसे धम्मे जाव जीवे पएसे से पएसे नोजीवे खंधे पएसे से पएसे नोखंधे, तं न भवइ, कम्हा ?, इत्थं खलु दो समासा भवंति, तंजह–तत्पुरिसे अ

कम्मधारए अ, तं ण णज्जइ कयरेणं समासेणं भणसि ?, किं तप्पुरिसेणं किं कम्मधारएणं ?, जइ तप्पुरिसेणं भणसि तो मा एवं भणाहि, अह कम्मधारएणं भणसि तो विसेसओ भणाहि, धम्मे अ से पएसे अ, से पएसे धम्मे, अहम्मे अ से पएसे अ, से पएसे अहम्मे, आगासे अ से पएसे अ, से पएसे आगासे, जीवे अ से पएसे अ, से पएसे नोजीवे, खंधे अ से पएसे अ, से पएसे नोखंधे, एवं वयंतं समभिरूढं संपइ एवंभूओ भणइ–जं जं भणसि तं तं सव्वं कसिणं पडिपुण्णं निरवसेसं एगगहणगहियं देसेऽवि मे अवत्थू पएसेऽवि मे अवत्थू। से तं पएसदिट्ठंतेणं ३ । से तं नयप्पमाणे ४ । ॥ सू० १४५ ॥

से किं तं संखप्पमाणे ?, २ अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा–नामसंखा ठवणासंखा दव्वसंखा ओवम्मसंखा परिमाणसंखा जाणणासंखा गणणासंखा भावसंखा १ । से किं तं नामसंखा ?, २ जस्स णं जीवस्स वा जाव से तं नामसंखा २ । से किं तं ठवणासंखा ?, २ जण्णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा जाव से तं ठवणासंखा ३ । नामठवणाणं को पइविसेसो ?, नाम [पाएणं] आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिया वा होज्जा ४ । से किं तं दव्वसंखा ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–आगमओ य नोआगमओ य, जाव से किं तं जाणय-सरीर-भविअ-सरीर-वइरित्ता दव्वसंखा ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–एगभविए बद्धाउए अभिमुहणामगोत्ते अ ५ । एगभविए णं भंते ! एगभविएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ६ । बद्धाउए णं भंते ? बद्धाउएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीतिभागं ७ । अभिमुहनामगोए णं भंते ! अभिमुहनामगोएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?, जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ८ । इयाणीं को णओ कं संखं इच्छइ–तत्थ णेगमसंगहववहारा तिविहं संखं इच्छंति, तंजहा–एगभविअं बद्धाउअं

अभिमुहनामगोत्तं च, उज्जुसुओ दुविहं संखं इच्छइ, तंजहा–बद्धाउअं च अभिमुहनामगोत्तं च, तिण्णि सद्दनया अभिमुहनामगोत्तं संखं इच्छंति, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वसंखा ९ । से तं नोआगमओ दव्वसंखा, से तं दव्वसंखा १० । से किं तं ओवम्मसंखा ?, २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–अत्थि संतयं संतएणं उवमिज्जइ, अत्थि संतयं असंतएणं उवमिज्जइ, अत्थि असंतयं संतएणं उवमिज्जइ, अत्थि असंतयं असंतएणं उवमिज्जइ, तत्थ संतयं संतएणं उवमिज्जइ ११ । जहा संता अरिहंता संतएहिं पुरवरेहिं संतएहिं कवाडेहिं संतएहि वच्छेहिं उवमिज्जइ, तंजहा–पुरवरकवाडवच्छा फलिहभुआ दुंदुहित्थणिअघोसा । सिरिवच्छंकियवच्छा सव्वेऽवि जिणा चउव्वीसं ॥ १११ ॥ १२ । संतयं असंतएणं उवमिज्जइ जहा संताइं नेरइअ-तिरिक्ख-जोणिअ-मणुस्सदेवाणं आउआइं असंतएहिं पलिओवमसागरोवमेहिं उवमिज्जंति, असंतयं संतएणं उवमिज्जति, तंजहा–परिजूरिअपेरंतं चलंतबिंटं पडंतनिच्छीरं । पत्तं व वसणपत्तं कालप्पत्तं भणइ गाहं ॥ १२० ॥ जह तुब्भे तह अम्हे तुम्हेऽवि अ होहिहा जहा अम्हे । अप्पाहेइ पडंतं पंडुअपत्तं किसलयाणं ॥ १२१ ॥ णवि अत्थि णवि अ होही उल्लावो किसलयपंडुपत्ताणं । उवमा खलु एस कया भविअजणविबोहणट्ठाए ॥ १२२ ॥ १३ । असंतयं असंतएहिं उवमिज्जइ, जहा-खरविसाणं तहा ससविसाणं । से तं ओवम्मसंखा १४ । से किं तं परिमाणसंखा ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–कालिअसुय-परिमाणसंखा दिट्ठिवायसुअ-परिमाणसंखा य १५ । से किं तं कालिअसुअ-परिमाणसंखा ?, २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–पज्जवसंखा अक्खरसंखा संघायसंखा पयसंखा पायसंखा गाहासंखा सिलोगसंखा वेढसंखा निज्जुत्तिसंखा अणुओगदारसंखा उद्देसगसंखा अज्झयणसंखा सुअखंधसंखा अंगसंखा, से तं कालिअसुअ-परिमाणसंखा

१६। से किं तं दिट्ठिवायसुअ-परिमाणसंखा ?, २ अणेगविहा पराणत्ता, तंजहा–पज्जवसंखा जाव अणुओगदारसंखा पाहुडसंखा पाहुडिआसंखा पाहुडपाहुडिआसंखा वत्थुसंखा, से तं दिट्ठिवायसुअ-परिमाणसंखा, से तं परिमाणसंखा १७। से किं तं जाणणासंखा ?, २ जो जं जाणइ, तंजहा–सद्दं सद्दिओ गणियं गणिओ निमित्तं नेमित्तिओ कालं कालणाणी वेज्जयं वेज्जो, से तं जाणणासंखा १८। से किं तं गणणासंखा ?, २ एको गणणं न उवेइ, दुप्पभिइ संखा, तंजहा–संखेज्जए असंखेज्जए अणंतए १९। से किं तं संखेज्जए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २०। से किं तं असंखेज्जए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–परित्तासंखेज्जए जुत्तासंखेज्जए असंखेज्जासंखेज्जए २१। से किं तं परित्तासंखेज्जए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २२। से किं तं जुत्तासंखेज्जए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २३। से किं तं असंखेज्जासंखेज्जए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २४। से किं तं अणंतए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–परित्ताणंतए जुत्ताणंतए अणंताणंतए २५। से किं तं परित्ताणंतए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २६। से किं तं जुत्ताणंतए ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए उक्कोसए अजहराणमणुक्कोसए २७। से किं तं अणंताणंतए ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा–जहराणए अजहराणमणुक्कोसए २८। जहराणयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?, दोरूवयं, तेणं परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ २९। उक्कोसयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?, उक्कोसयस्स संखेज्जयस्स परूवणं करिस्सामि–से जहानामए पल्ले सिआ एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोरिण अ सत्तावीसे जोयणसए

तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धं अंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पराणत्ते, से णं पल्ले सिद्धत्थयाणं भरिए, तओ णं तेहिं सिद्धत्थएहिं दीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पइ, एगो दीवे एगो समुद्दे एवं पक्खिप्पमाणेणं २ जावइआ दीवसमुद्दा तेहिं सिद्धत्थएहिं अप्फुराणा एस णं एवइए खेत्ते पल्ले [आइट्ठा] पढमा सलागा, एवइआणं सलागाणं असंलप्पा लोगा भरिआ तहावि उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ, जहा को दिट्ठंतो ?, से जहानामए मंचे सिआ आमलगाणं भरिए तत्थ एगे आमलए पक्खित्ते सेऽवि माते अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि माते अन्नेऽवि पक्खित्ते सेऽवि माते एवं पक्खिप्पमाणेणं २ होही सेऽवि आमलए जंसि पक्खित्ते से मंचए भरिज्जिहिइ जे तत्थ आमलए न माहिइ १ । एवमेव उक्कोसए संखेज्जए रूवे पक्खित्ते जहराणयं परित्तासंखेज्जयं भवइ, तेण परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं न पावइ २ । उक्कोसयं परित्तासखेज्जयं केवइअं होइ ?, जहराणयं परित्तासंखेज्जयं जहराणयं परित्तासंखेज्जमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो रूवूणो उक्कोसं परित्तासंखेज्जयं होइ, अहवा जहन्नयं जुत्तासंखेज्जयं रूवूणं उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं होइ ३ । जहन्नयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ? जहराणय-परित्तासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो पडिपुराणो जहन्नयं जुत्तासंखेज्जयं होइ, अहवा उक्कोसए परित्तासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं जहराणयं जुत्तासंखेज्जयं होइ, आवलिआवि तत्तिआ चेव, तेण परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं जुत्तासंखिज्जयं न पावइ ४ । उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?, जहराणएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ अराणमराणब्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ, अहवा जहन्नयं असंखेज्जासंखेज्जयं रूवूणं उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ५ । जहराणयं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइअं होइ ?, जहन्नएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ अराणमराणब्भासो

पडिपुराणो जहराणयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ, अहवा उक्कोसए जुत्तासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं जहराणयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ, तेण परं अजहराण-मणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं ण पावइ ६। उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइअं होइ ?, जहराणयं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो रूवूणो उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ, अहवा जहराणयं परित्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ ७। जहराणयं परित्ताणंतयं केवइअं होइ ?, जहराणयं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो पडिपुराणो जहराणयं परित्ताणंतयं होइ, अहवा उक्कोसए असंखेज्जासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं जहराणयं परित्ताणंतयं होइ, तेण परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं परित्ताणंतयं ण पावइ ८। उक्कोसयं परित्ताणंतयं केवइअं होइ ?, जहराणयपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो रूवूणो उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ, अहवा जहराणयं जुत्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ ९। जहराणयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?, जहराणय-परित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अराणमराणब्भासो पडिपुराणो जहराणयं जुत्ताणंतयं होइ, अहवा उक्कोसए परित्ताणंतए रूवं पक्खित्तं जहन्नयं जुताणंतयं होइ, अभवसिद्धिआवि तत्तिवा होइ, तेण परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं जुत्ताणंतयं ण पावइ १०। उक्कोसयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?, जहराणएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिया अराणमराणब्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ, अहवा जहराणयं अणंताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ ११। जहराणयं अणंताणंतयं केवइअं होइ ?, जहराणएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिआ अराणमराणब्भासो पडिपुराणो जहराणयं अणंताणंतयं होइ, अहवा उक्कोसए जुत्ताणंतए रूवं पक्खित्तं जहराणयं अणंताणंतयं होइ, तेण परं अजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं १२। से तं गणणासंखा

१३ । से किं तं भावसंखा ?, २ जे इमे जीवा संखगइनामगोत्ताइं कम्माइं वेदेन्ति १४ । से तं भावसंखा, से तं संखापमाणे, से तं भावपमाणे, से तं पमाणे १५ । पमाणेत्ति पयं समत्तं ॥ सू० १४६ ॥

से किं तं वत्तव्वया ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–ससमयवत्तव्वया परसमयवत्तव्वया ससमयपरसमयवत्तव्वया १ । से किं तं ससमयवत्तव्वया ?, २ जत्थ णं ससमए आघविज्जइ पण्णविज्जइ परूविज्जइ दंसिज्जइ निदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ, से तं ससमयवत्तव्वया २ । से किं तं परसमयवत्तव्या ?, २ जत्थ णं परसमए आघविज्जइ जाव उवदंसिज्जइ, से तं परसमयवत्तव्वया ३ । से किं तं ससमयपरसमयवत्तव्या ?, २ जत्थ णं ससमए परसमए आघविज्जइ जाव उवदंसिज्जइ, से तं ससमयपरसमयवत्तव्वया ४ । इआणीं को णओ कं वत्तव्वयं इच्छइ ?, तत्थ णेगमसंगहववहारा तिविहं वत्तव्वयं इच्छंति, तंजहा–ससमयवत्तव्वयं परसमयवत्तव्वयं ससमयपरसमयवत्तव्वयं ५ । उज्जुसुओ दुविहं वत्तव्वयं इच्छइ, तंजहा–ससमयवत्तव्वयं परसमयवत्तव्वयं, तत्थ णं जा सा ससमयवत्तव्वया सा ससमयं पविट्ठा जा सा परसमयवत्तव्वया सा परसमयं पविट्ठा, तम्हा दुविहा वत्तव्वया, नत्थि तिविहा वत्तव्वया ६ । तिण्णि सद्दणया एवं(गं) ससमयवत्तव्वयं इच्छंति, नत्थि परसमयवत्तव्वया, कम्हा ?, जम्हा परसमए अणट्ठे अहेऊ असब्भावे अकिरिए उम्मग्गे अणुवएसे मिच्छादंसणमितिकट्टु, तम्हा सव्वा ससमयवत्तव्वया, णत्थि परसमयवत्तव्वया, णत्थि ससमयपरसमयवत्तव्वया ७ । से तं वत्तव्वया ८ ॥ सू० १४७ ॥ से किं तं अत्थाहिगारे ?, २ जो जस्स अज्झयणस्स अत्थाहिगारो, तंजहा–सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओ य पडिवत्ती । खलियस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥ १२३ ॥ से तं अत्थाहिगारे ॥ सू० १४८ ॥

से किं तं समोआरे ?, २ छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–णामसमोआरे ठवणासमोआरे दव्वसमोआरे खेत्तसमोआरे कालसमोआरे भावसमोआरे १ ।

नामठवणाओ पुव्वं वण्णिआओ, से किं तं दव्वसमोयारे ? २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आगमओ य नोआगमओ अ जाव से तं भविअसरीर-दव्वसमोआरे २ । से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वसमोआरे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—आयसमोआरे परसमोआरे तदुभयसमोआरे, सव्वदव्वावि णं आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति, परसमोआरेणं जहा कुंडे बदराणि, तदुभयसमोआरेणं जहा घरे खंभो आयभावे अ, जहा घडे गीवा आयभावे अ, अहवा जाणयसरीर-भवियसरीर-वइरित्ते दव्वसमोआरे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आयसमोआरे अ तदुभयसमोआरे अ ३ । चउसट्ठिआ आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोआरेणं बत्तीसिआए समोअरइ आयभावे अ, बत्तीसिआ आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ तदुभयसमोयारेणं सोलसियाए समोयरइ आयभावे अ, सोलसिआ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोआरेणं अट्ठभाइआए समोअरइ आयभावे अ, अट्ठभाइआ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ तदुभयसमोआरेणं चउभाइआए समोअरइ आयभावे अ, चउभाइआ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोआरेणं अद्धमाणीए समोअरइ आयभावे अ, अद्धमाणी आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोआरेणं माणीए समोअरइ आयभावे अ, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वसमोआरे ४ । से तं नोआगमओ दव्वसमोआरे ५ । से तं दव्वसमोआरे ६ । से किं तं खेत्तसमोआरे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आयसमोआरे अ तदुभयसमोआरे अ, भरहे वासे आयसमोआरेणं आयभावे समोआरइ, तदुभयसमोआरेणं जंबुद्दीवे समोयरइ आयभावे अ, जंबुद्दीवे आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोआरेणं तिरियलोए समोयरइ आयभावे अ, तिरियलोए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोआरेणं लोए समोअरइ आयभावे अ, लोए आयसमोआरेणं आयभावे

समोयरइ, तदुभयसमोआरेणं अलोए समोयरइ आयभावे अ, से तं खेत्तसमोआरे ७। से किं तं कालसमोआरे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा– *आयसमोआरे अ तदुभयसमोआरे अ, समए आयसमोआरेणं आयभावे* समोयरइ, तदुभयसमोआरेणं आवलिआए समोयरइ आयभावे अ, एवमणापाणू थोवे लेवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे ऊऊ अयणे संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे तुडिअंगे तुडिए अडडंगे अडडे अववंगे अववे हूहूअंगे हूहूए उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णलिअंगे णलिणे अच्छनिउरंगे अच्छनिउरे अउअंगे अउए नउअंगे नउए पउअंगे पउए चूलिअंगे चूलिआ सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिआ पलिओवमे सागरोवमे आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ तदुभयसमोआरेणं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीसु समोयरइ आयभावे अ, ओसप्पिणीउस्सप्पिणीओ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ तदुभयसमोआरेणं पोग्गलपरिअट्टे समोअरति आयभावे अ, पोग्गलपरिअट्टे आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ तदुभयसमोआरेणं तीतद्धा-अणागतद्धासु समोयरइ आयभावे अ, तीतद्धा-अणागतद्धाओ आयसमोओरेणं आयभावेसमोअरंति तदुभयसमोआरेणं सव्वद्धाए समोयरति आयभावे अ। से तं कालसमोआरे ८। से किं तं भावसमोआरे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–आयसमोयारे य तदुभयसमोयारे य, कोहे आयसमोयारेणं आयभावे समोअरइ तदुभयसमोआरेणं माणे समोयरइ आयभावे अ, एवं माणे माया लोभे रागे मोहणिज्जे, अट्ठ कम्मपयडीओ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति तदुभयसमोआरेणं छव्विहे भावे समोयरंति आयभावे अ, एवं छव्विहे भावे, जीवे जीवत्थिकाए आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ तदुभयसमोआरेणं सव्वदव्वेसु समोअरइ आयभावे अ। एत्थ संगहणीगाहा–कोहे माणे माया लोभे रागे य मोहणिज्जे अ। पगडी भावे जीवे जीवत्थिकाय दव्वा

य ॥ १२४ ॥ से तं भावसमोआरे ६ । से तं समोआरे । से तं उवक्कमे । उवक्कम इति पढमं दारं १० ॥ सू० १४६ ॥

से किं तं निक्खेवे ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा—ओहनिप्फराणे नामनिप्फराणे सुत्तालावगनिप्फराणे १ । से किं तं ओहनिप्फराणे ?, २ चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—अज्झयणे अज्झीणे आए खवणा २ । से किं तं अज्झयणे ?, २ चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—णामज्झयणे ठवणज्झयणे दव्वज्झयणे भावज्झयणे, णामट्ठवणाओ पुव्वं वरिणआओ ३ । से किं तं दव्वज्झयणे ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—आगमओ अ णोआगमओ अ ४ । से किं तं आगमओ दव्वज्झयणे ?, २ जस्स णं अज्झयणत्ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं जाव एवं जावइआ अणुवउत्ता आगमओ तावइआइं दव्वज्झयणाइं, एवमेव ववहारस्सवि, संगहस्स णं एगो वा अणेगो वा तं चेव भाणियव्वं जाव से तं आगमओ दव्वज्झयणे ५ । से किं तं णोआगमओ दव्वज्झयणे ?, २ तिविहे पराणत्ते, तंजहा—जाणयसरीर-दव्वज्झयणे भविअसरीर-दव्वज्झयणे जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झयणे ६ । से किं तं जाणगसरीरदव्वज्झयणे ?, २ अज्झयण-पयत्थाहिगार-जाणयस्स जं सरीरं ववगय-चुअ-चाविअ-चत्तदेहं जीवविप्पजढं जाव अहो णं इमेणं सरीरसमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं अज्झयणेत्ति पयं आघवियं जाव उवदंसियं, जहा को दिट्ठंतो ?—अयं घयकुंभे आसी अयं महुकुंभे आसी, से तं जाणयसरीर-दव्वज्झयणे ७ । से किं तं भविअसरीर-दव्वज्झयणे ?, २ जे जीवे जोणिजम्मणणिक्खंते इमेणं चेव आदत्तएणं सरीरसमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं अज्झयणेत्तिपयं सेअकाले सिक्खिस्सइ, न ताव सिक्खइ, जहा को दिट्ठंतो ?—अयं महुकुंभे भविस्सइ अयं घयकुंभे भविस्सइ, से तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ८ । से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झयणे ?, २ पत्तयपोत्थयलिहियं, से तं जाणय-

सरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झयणे ९। से तं णोआगमओ दव्वज्झयणे १०। से तं दव्वज्झयणे ११। से किं तं भावज्झयणे ?, २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओ अ णोआगमओ अ १२। से किं तं आगमओ भावज्झयणे ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावज्झयणे १३। से किं तं नोआगमओ भावज्झयणे ?, २ अज्झप्पस्साणयणं कम्माणं अवचओ उवचिआणं। अणुवचओ अ नवाणं तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥ १२५ ॥ से तं णोआगमओ भावज्झयणे १४। से तं भावज्झयणे, से तं अज्झयणे १५ (१)। से किं तं अज्झीणे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—णामज्झीणे ठवणज्झीणे दव्वज्झीणे भावज्झीणे, नामठवणाओ पुव्वं वण्णिआओ १६। से किं त दव्वज्झीणे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ १७। से किं तं आगमओ दव्वज्झीणे ?, २ जस्स णं अज्झीणेत्तिपयं सिक्खियं जियं मियं परिजियं जाव से तं आगमओ दव्वज्झीणे १८। से किं तं नोआगमओ दव्वज्झीणे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—जाणयसरीर-दव्वज्झीणे भविअसरीर-दव्वज्झीणे जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झीणे १९। से किं तं जाणयसरीर-दव्वज्झीणे ?, २ अज्झीण-पयत्थाहिगार-जाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुयचाविअ-चत्तदेहं जहा दव्वज्झयणे तहा भाणिअव्वं, जाव से तं जाणयसरीर-दव्वज्झीणे २०। से किं तं भविअसरीर-दव्वज्झीणे ?, २ जे जीवे जोणिजम्मण-निक्खंते जहा दव्वज्झयणे, जाव से तं भविअसरीर-दव्वज्झीणे २१। से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झीणे ?, २ सव्वागाससेढी, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वज्झीणे से तं नोआगमओ दव्वज्झीणे, से तं दव्वज्झीणे २२। से किं तं भावज्झीणे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ २३। से किं तं आगमओ भावज्झीणे ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं

आगमओ भावज्झीणे २४। से किं तं नोआगमओ भावज्झीणे ?, २–जह दीवा दीवसयं पइप्पए दिप्पए अ सो दीवो। दीवसमा आयरिया दिप्पंति परं च दीवंति ॥ १२६ ॥ से तं नोआगमओ भावज्झीणे २५। से तं भावज्झीणे, से तं अज्झीणे २६ (२)। से किं तं आए ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–नामाए ठवणाए दव्वाए भावाए, नामठवणाओ पुव्वं भणिआओ २७। से किं तं दव्वाए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–आगमओ अ नोआगमो अ २८। से किं तं आगमओ दव्वाए ?, २ जस्स णं आयत्तिपयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं जाव कम्हा ?, अणुवओगो दव्वमितिकट्टु, नेगमस्स णं जावइआ अणुवउत्ता आगमओ तावइआ ते दव्वाया, जाव से तं आगमओ दव्वाए २९। से किं तं नोआगमओ दव्वाए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–जाणयसरीरदव्वाए भविअसरीरदव्वाए जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वाए ३०। से किं तं जाणयसरीरदव्वाए ?, २ आय-पयत्थाहिगार-जाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुअचाविअ-चत्तदेहं जहा दव्वज्झयणे, जाव से तं जाणयसरीर-दव्वाए ३१। से किं तं भविअसरीरदव्वाए ?, २ जे जीवे जोणिजम्मण-णिक्खंते जहा दव्वज्झयणे जाव से तं भविअसरीरदव्वाए ३२। से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वाए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–लोइए कुप्पावयणिए लोगुत्तरिए। से किं तं लोइए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए अ ३३। से किं तं सचित्ते ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–दुपयाणं चउप्पयाणं अपयाणं, दुपयाणं दासाणं दासीणं चउप्पयाणं आसाणं हत्थीणं, अपयाणं अंबाणं अंबाडगाणं आए, से तं सचित्ते ३४। से किं तं अचित्ते ?, २ सुवण्ण-रयय-मणि-मोत्तिअ-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयणाणं संत(संतसार)सावएज्जस्स आए, से तं अचित्ते ३५। से किं तं मीसए ?, २ दासाणं दासीणं आसाणं हत्थीणं समाभरिआउज्जा-

लंकियाणं आए, से तं मीसए ३६। से तं लोइए ३७। से किं तं कुप्पावयणिए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए अ, तिण्णिवि जहा लोइए, जाव से तं मीसए, से तं कुप्पावयणिए ३८। से किं तं लोगुत्तरिए ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए अ ३९। से किं तं सचिते ?, २ सीसाणं सिस्सिणिआणं आये, से तं सचित्ते ४०। से किं तं अचित्ते ?, २ पडिग्गहाणं वत्थाणं कंबलाणं पायपुंछणाणं आए, से तं अचित्ते ४१। से किं तं मीसए ?, २ सिस्साणं सिस्सिणिआणं सभंडोवगरणाणं आए, से तं मीसए ४२। से तं लोगुत्तरिए, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वाए, से तं नोआगमओ दव्वाए, से तं दव्वाए ४३। से किं तं भावाए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–आगमओ अ नोआगमओ अ ४४। से किं तं आगमओ भावाए ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावाए ४५। से किं तं नोआगमओ भावाए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–पसत्थे अ अपसत्थे अ ४६। से किं पसत्थे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–णाणाए दंसणाए चरित्ताए, से तं पसत्थे ४७। से किं तं अपसत्थे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–कोहाए माणाए मायाए लोहाए, से तं अपसत्थे ४८। से तं णोआगमओ भावाए, से तं भावाए, से तं आए ४९ (३)। से किं तं झवणा ?, २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–नामज्झवणा ठवणज्झवणा दव्वज्झवणा भावज्झवणा, नामठवणाओ पुव्वं भणिआओ ५०। से किं तं दव्वज्झवणा ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–आगमओ अ नोआगमओ अ ५१। से किं तं आगमओ दव्वज्झवणा ?, २ जस्स णं झवणेत्तिपयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजिअं जाव से तं आगमओ दव्वज्झवणा ५२। से किं तं नोआगमणो दव्वज्झवणा ?, २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–जाणयसरीर-दव्वज्झवणा भविअसरीर-दव्वज्झवणा जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वज्झवणा ५३। से किं तं जाणय-

सरीरदव्वज्झवणा ?, २ झवणा-पयत्थाहिगार-जाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुअचइ(चावि)य-चत्तदेहं, सेसं जहा दव्वज्झयणे, जाव से तं जाणयसरीरदव्व-ज्झवणा ५४ । से किं तं भविअसरीरदव्वझवणा ?, २ जे जीवे जोणिजम्मण-णिक्खंते सेसं जहा दव्वज्झयणे, जाव से तं भविअसरीरदव्वज्झवणा ५५ । से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वज्झवणा ?, २ जहा जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वाए तहा भाणिअव्वा ५६ । जाव से तं मीसिआ, से तं लोगुत्तरिआ, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वज्झवणा, से तं नोआगमओ दव्वज्झवणा, से तं दव्वज्झवणा ५७ । से किं तं भावज्झवणा ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—आगमओ अ णोआगमओ अ ५८ । से किं तं आगमओ भावज्झवणा ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावज्झवणा ५९ । से किं तं णोआगमओ भावज्झवणा ?, २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पसत्था य अपसत्था य ६० । से किं तं पसत्था ?, २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—कोहज्झवणा माणज्झवणा मायज्झवणा लोहज्झवणा, से तं पसत्था ६१ । से किं तं अपसत्था ? २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—नाणज्झवणा दंसणज्झवणा चरित्तज्झवणा, से तं अपसत्था ६२ । से तं नोआगमओ भावज्झवणा, से तं भावज्झवणा, से तं झवणा (४), से तं ओहनिप्फण्णे ६३ । से किं तं नामनिप्फण्णे ?, २ सामाइए, से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—णामसामाइए ठवणासामाइए दव्वसामाइए भावसामाइए ६४ । णामठव-णाओ पुव्वं भणिआओ । दव्वसामाइएवि तहेव, जाव से तं भविअसरीर-दव्वसामाइए ६५ । से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वसामाइए ?, २ पत्तय-पोत्थय-लिहियं, से तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वसामाइए, से तं णोआगमओ दव्वसामाइए, से तं दव्वसामाइए ६६ । से किं तं भाव-सामाइए ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—आगमओ अ नोआगमओ अ

६७। से किं तं आगमओ भावसामाइए ?, २ जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावसामाइए ६८। से किं तं नोआगमओ भावसामाइए ?, २–जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे णिअमे तवे। तस्स सामाइअं होइ, इइ केवलिभासिअं ॥ १२७ ॥ जो समो सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ। तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासिअं ॥ १२८ ॥ जह मम ण पिअं दुक्खं जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं। न हणइ न हणावेइ अ सममणइ तेण सो समणो ॥ १२९ ॥ णत्थि य सि कोइ वेसो पिओ अ सव्वेसु चेव जीवेसु। एएण होइ समणो एसो अन्नोऽवि पज्जाओ ॥ १३० ॥ उरग-गिरि-जलण-सागर-नहतल-तरुगण-समो अ जो होइ। भमर-मिय-धरणि-जलरुह-रवि-पवणसमो अ सो समणो ॥ १३१ ॥ तो समणो जइ सुमणो भावेण य जइ ण होइ पावमणो। सयणे अ जणे अ समो समो अ माणावमाणेसु ॥ १३२ ॥ से तं नोआगमओ भावसामाइए ६९। से तं भावसामाइए, से तं सामाइए, से तं नामनिप्फण्णे ७०। से किं तं सुत्तालावगनिप्फण्णे ?, २ इआणिं सुत्तालावयनिप्फण्णं निक्खेवं इच्छावेइ, से अ पत्तलक्खणोऽवि ण णिक्खिप्पइ, कम्हा ?, लाघवत्थं, अत्थि इओ तइए अणुओगदारे अणुगमेत्ति, तत्थ णिक्खित्ते इहं णिक्खित्ते भवइ, इइं वा णिक्खित्ते तत्थ णिक्खित्ते भवइ, तम्हा इहं ण णिक्खिप्पइ तहिं चेव निक्खिपइ, से तं निक्खेवे ७१ ॥ सू० १५० ॥

से किं तं अणुगमे ? २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–सुत्ताणुगमे अ निज्जुत्तिअणुगमे अ १। से किं तं निज्जुत्तिअणुगमे ?, २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा–निक्खेव-निज्जुत्ति-अणुगमे उवग्घाय-निज्जुत्ति-अणुगमे सुत्तप्फासिय-निज्जुत्ति-अणुगमे २। से किं तं निक्खेव-निज्जुत्ति-अणुगमे ? अणुगए, से तं निक्खेव-निज्जुत्ति-अणुगमे ३। से किं तं उवग्घाय-निज्जुत्ति-अणुगमे ?, २ इमाहिं दोहिं मूलगाहाहिं अणुगंतव्वो, तंजहा–

उद्देसे १ निद्देसे अ २ निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे य ६ । कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ नए १० समोआरणाणुमए ११ ॥ १३३ ॥ किं १२ कइविहं १३ कस्स १४ कहिं १५ केसु १६ कहं १७ किच्चिरं हवइ कालं १८ ? । कइ ११ संतर २० मविरहियं २१ भवा २२ गरिस २३ फारस २४ निरुत्ती २५ ॥ १३४ ॥ से तं उवग्घाय-निज्जुत्ति-अणुगमे ४ । से किं तं सुत्तप्फासिअ-निज्जुत्ति-अणुगमे ?, २ सुत्तं उच्चारेअव्वं अक्खलिअं अमिलिअं अवच्चामेलिअं पडिपुण्णं पडिपुण्णघोसं कंठोट्ठ-विप्पमुक्कं गुरुवायणोवगयं ५ । तओ तत्थ णज्जिहिति ससमयपयं वा परसमयपयं वा बंधपयं वा मोक्खपयं वा सामाइअपयं वा णोसामाइअपयं वा ६ । तओ तम्मि उच्चारिए समाणे केसिं च णं भगवंताणं केइ अत्थाहिगारा अहिगया भवन्ति, केइ अत्थाहिगारा अणहिगया भवन्ति ७ । ततो तेसिं अणाहिगयाणं अत्थाणं अहिगमणट्ठाए पयं पएणं वन्नइस्सामि,—संहिया य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो । चालणा य पसिद्धी अ, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥ १३५ ॥ से तं सुत्तप्फासिय-निज्जुत्ति-अणुगमे ८ । से तं निज्जुत्ति-अणुगमे, से तं अणुगमे ९ ॥ सू० १५१ ॥

से किं तं णए ?, सत्त मूलणया पण्णत्ता, तंजहा—णेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुए सद्दे समभिरूढे एवंभूए, तत्थ—णेगेहिं माणेहिं मिणइत्ति णेगमस्स य तिरुत्ती । सेसाणंपि नयाणं लक्खणमिणमो सुणह वोच्छं ॥ १३६ ॥ संगहिअपिंडिअत्थं संगहवयणं समासओ बिंति । वच्चइ विणिच्छिअत्थं ववहारो सव्वदव्वेसुं ॥ १३७ ॥ पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो । इच्छइ विसेसियतरं पच्चुप्पण्णं णओ सद्दो ॥१३८॥ वत्थूओ संकमणं होइ अवत्थू नए समभिरूढे । वंजणअत्थतदुभयं एवंभूओ विसेसेइ ॥ १३९ ॥ णायंमि गिरिहअव्वे अगिरिहिअव्वंमि चेव अत्थंमि । जइअव्वमेव इइ जो उवएसो सो नओ नाम ॥ १४० ॥ सव्वेसिंपि नयाणं

बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिश्रो साहू ॥ १४१ ॥ से तं नए। अणुओगद्दारा सम्मत्ता॥ सू० १५२ ॥ सोलस सयाणि चउरुत्तराणि होंति उ इमंमि गाहाणं। दुसहस्स-मणुट्ठुभ-छंद-वित्तप्प-माणओ भणिओ ॥ १४२ ॥ णयर-महादारा इव उवक्कम-दारणुओग-वर-दारा। अक्खर-बिंदुगमत्ता लिहिया दुक्खक्खयट्ठाए ॥ १४३ ॥ गाहा १६०४ ॥ अनुष्टुप् ग्रंथाग्रं २०८५ ॥ अणुओगदारं सुत्तं समत्तं ॥

॥ इति श्री अनुयोगद्वार-सूत्रं समाप्तम् ॥

—:०:—

ספרית פועלים